



मंगलमय जीवन

इस पुस्तिका में श्री ली ने दर्शाया है कि सुख-समृद्धि कैसे अर्जित की जाए, भौतिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक पतन से कैसे बचा जाए तथा लोगों को जीवन में मंगलमयता की ओर उर्ध्व कैसे किया जाए। अतः, मैं इस पुस्तिका का ज्ञानमयी सामग्री के रूप में भरपूर अनुमोदन करता हूँ, बौद्ध दृष्टिकोण से एक मंगलमय जीवन के लिए।

पूज्य भन्ते डॉ. आई. इन्दासरा थेरो, श्रीलंका

“बुद्ध ने मानवमात्र के शाश्वत सरोकारों को सम्बोधित किया है—कृशल और अकृशल की प्रकृति, अपने पड़ोसी के साथ शान्तिपूर्वक कैसे रहा जाये, जीवन का अर्थ और सर्वाधिक महत्वपूर्ण, कि प्रसन्न और परिपूर्ण व्यक्ति कैसे हुआ जाये। परिणाम है कि बौद्ध जीवन जीने के लिये एक पठनीय, व्यवहारिक पुस्तिका सामने है।”

पूज्य श्रावस्ती धम्मिका, सिंगापुर

यह 'मानवमात्र का धम्म' है, जो अपनी सुस्पष्टता और सहजता में अनूठा है और आधुनिक युग में बुद्ध धम्म की नम्यता व ग्राह्यता की ओर संकेत करता है। अन्य धर्मों की हठीली, श्रद्धात्मक प्रकृति के विपरीत 'मंगलमय जीवन' बुद्ध धम्म की व्यवहारिक सादगी पर प्रकाश डालती है। हमारे समय की सामाजिक समस्याओं के निवारण के दृष्टिगत तथा दैनिक जीवन में इसकी उपयोगिता के निमित्त सद्धर्म के सुप्रसार के लिये मैं इस पुस्तिका सशक्त अनुमोदन करता हूँ।

पूज्य पञ्जावरो महाथेर, आस्ट्रेलिया

www.justbegood.net

मंगलमय जीवन • टी वाई ली • अनुवाद: सुरेन्द्र कुमार मेहता • सम्पादक: राजेश चन्द्रा



मंगलमय जीवन

शांति, प्रसन्नता एवं समृद्धि
की कुंजी

टी वाई ली

अनुवाद : सुरेन्द्र कुमार मेहता

सम्पादक : राजेश चन्द्रा

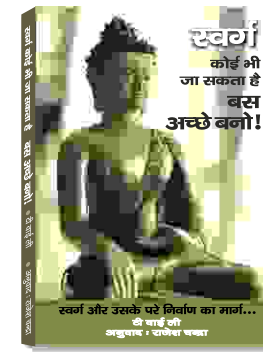
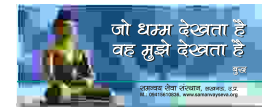
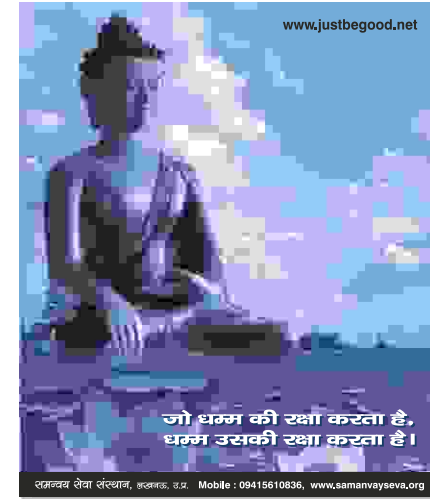
• बुद्ध धम्म •

- दान — लोगों की मदद करके
दान की साधना कीजिये
- शील — पंचशीलों* का पालन
करके शील का अभ्यास
कीजिये
- भावना — ध्यान के द्वारा प्रज्ञा का
विकास कीजिये



* पंचशील

1. प्राणीमात्र की हिंसा से विरत रहना
2. जो दिया नहीं गया उसे लेने से विरत रहना
3. लैंगिक दुराचार से विरत रहना
4. मिथ्या भाषण से विरत रहना
5. मादक पदार्थों के सेवन से विरत रहना



Please visit us for free English Booklets, CDs, decals, stickers & Posters
at www.justbegood.net and www.loveusnoteatus.com



मंगलमय जीवन

शांति, प्रसन्नता एवं समृद्धि
की कुंजी

टी वाई ली



अनुवाद : सुरेन्द्र कुमार मेहता

सम्पादक : राजेश चन्द्रा

भूमिका : भन्ते डॉ. आई. इन्दासरा थेरो

प्रकाशक	: समन्वय सेवा संस्थान अवलोकितेश्वर चन्धन विला 76-ए, मोनार्क सिटी फेज-1 पारा रिंग रोड, पोस्ट राजाजीपुरम लखनऊ-226017, उ.प्र., भारत
मुद्रक	: प्रथम क्रियेशन, नई दिल्ली, भारत
आवरण-चित्रांकन	: डॉ. पंकज त्यागी
ग्राफिक्स	: मुस्लिम अंसारी (इनटेक ग्राफिक्स)
अनुवाद	: सुरेन्द्र कुमार मेहता
अनुवादक मण्डल	: राजेश चन्द्रा, सुरेन्द्र कुमार मेहता, प्रेम कुमार दुग्गल, एस.एस. डबराल, डॉ. श्रीमती इन्दु अग्रवाल
सन्दर्भ संख्या	: A201008230019
आई.एस.बी.एन.	: 978-981-08-6798-0
मूल्य	: निःशुल्क

बिना अनुमति लिये भी इस पुस्तिका को आंशिक अथवा पूर्णरूपेण अनुवादित, पुनरोत्पादित या पुनर्मुद्रित किया जा सकता है, बशर्ते कि इसमें कोई परिवर्तन न किया जाये । फिर भी सराहनीय होगा यदि लेखक को ई-मेल के माध्यम से सूचित कर दिया जाये : admin@justbegood.net

© सर्वाधिकार सुरक्षित

टी वाई ली
सिंगापुर
वर्ष 2008

अनुक्रम

भूमिका	7
प्राक्कथन	9
सुवर्ण हेतु	12
सम्पादकीय	14
परिचय	21
सुरव-शान्ति हेतु बुद्ध की शिक्षा	25
1. मूलभूत शील	26
2. सम्पत्ति का संवर्धन एवं प्रबन्धन	29
3. धन-सम्पत्ति संरक्षण	32
4. झूठे मित्र और सच्चे मित्र	36
5. सम्बन्धों का संरक्षण	39
6. सफलता के लिए गुण	48
धन-सम्पत्ति कैसे अर्जित की जाय	53
1. भौतिक सम्पत्ति तथा उन्नति	53
2. आध्यात्मिक सम्पत्ति तथा प्रगति	55
पतन से कैसे बचे	61
1. भौतिक पतन	61
2. नैतिक पतन	62
3. आध्यात्मिक पतन	62

मंगलमय जीवन	65
1. सारभूत मंगल	67
2. सहायक मंगल	69
3. व्यक्तिगत मंगल	73
4. उच्चतर मंगल	78
5. उच्चतम मंगल	82
सारांश	93
परिशिष्ट	95
1. सिंगालोवाद सुत्त	95
2. ब्यग्घपज्ज सुत्त	113
3. पराभव सुत्त	120
4. महामंगल सुत्त	127
देश-विदेश के पत्र	133
धम्म दान महादान	144
समन्वय सेवा संस्थान	145
सुरेन्द्र कुमार मेहता	150
राजेश चन्द्रा	152
अभिव्यक्ति	153



“वे जो बुद्ध धम्म को दूर से ही देखते हैं कभी-कभी इस निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं कि यह प्राचीन भारत के जंगलों में वास करने वाले भिक्खु-भिक्खुनियों के लिये ही अधिक उपयुक्त है और इक्कीसवीं सदी की मानवता के लिये इसका कोई विशेष संदेश नहीं है। यह लघु पुस्तिका ऐसी भ्रान्त धारणाओं का त्वरित उन्मूलन कर देगी। बुद्ध ने मानवमात्र के शाश्वत सरोकारों को सम्बोधित किया है—कुशल और अकुशल की प्रकृति, अपने पड़ोसी के साथ शान्तिपूर्वक कैसे रहा जाये, जीवन का अर्थ और सर्वाधिक महत्वपूर्ण, कि प्रसन्न और परिपूर्ण व्यक्ति कैसे हुआ जाये। परिणाम है कि बौद्ध जीवन जीने के लिये एक पठनीय, व्यवहारिक पुस्तिका सामने है।”

भन्ते श्रावस्ती धम्मिका

बुद्ध धम्म मंडल सोसायटी

सिंगापुर

"Good Question, Good Answer" के लेखक।

“महाशय टी.वाई. ली ने अपनी पुस्तक ‘मंगलमय जीवन’ में दिन-प्रतिदिन के जीवन के लिये अत्यन्त उपयोगी एवं व्यवहारिक चार देशनाओं का चयन किया है जो और अधिक गौरवशाली प्रज्ञा के लिये आधारशिला जैसी है। यह ‘मानवमात्र का धम्म’ है, जो अपनी सुस्पष्टता और सहजता में अनूठा है और आधुनिक युग में बुद्ध धम्म की नम्यता व ग्राह्यता की ओर संकेत करता है। अन्य धर्मों की हठीली, श्रद्धात्मक प्रकृति के विपरीत ‘मंगलमय जीवन’ बुद्ध धम्म की व्यवहारिक सादगी पर प्रकाश डालती है। हमारे समय की सामाजिक समस्याओं के निवारण के दृष्टिगत तथा दैनिक जीवन में इसकी उपयोगिता के निमित्त सद्धर्म के सुप्रसार के लिये मैं इस पुस्तिका का सशक्त अनुमोदन करता हूँ।”

पूज्य पञ्जावरो महाथेर

बोधि टी फारेस्ट मोनेस्ट्री

आस्ट्रेलिया

BuddhaNet के संस्थापक तथा वेबमास्टर





भूमिका

पूज्य डा. आई इन्दासरा थेरो



एक दिन एक युवक मेरे पास आया और उसने पूछा, “मैं सुखी जीवन कैसे जी सकता हूँ और समस्याओं का सामना किये बिना समृद्धि कैसे उपलब्ध कर सकता हूँ?” मैंने उसको सीधा कहा कि वह कोई ऐसा कर्म न करे जिसका परिणाम हो पश्चाताप, दुःख तथा ग्लानि अथवा खिन्नता। इस प्रकार का जीवनयापन सुख और समृद्धि की ओर ले जाता है।

श्री टी.वाई. ली अपनी पुस्तक ‘मंगलमय जीवन’ में दर्शाते हैं कि बुद्ध धम्म के अनुसार जीवन में कैसे सुख, समृद्धि प्राप्त की जाये। उन्होंने सुत्त पिटक से कुछ जाने-पहचाने सुत्त चुने हैं तथा प्रत्यक्ष एवं सुबोध शैली में उन्हें प्रस्तुत किया है।

श्री ली सर्वप्रथम सिगालोवाद सुत्त का परिचय देते हैं तथा मूलभूत शील का वर्णन करते हैं, धन-सम्पत्ति का निर्माण तथा संरक्षण, मित्रता, परस्पर सम्बन्ध तथा उन्नति के लिए गुण। फिर वे ब्यग्घपज्ज सुत्त की ओर अग्रसर होते हैं तथा बुद्ध की शिक्षाओं का वर्णन करते हैं कि कैसे एक उपासक व्यक्ति को भौतिक तथा आध्यात्मिक सम्पन्नता अर्जित करनी चाहिए।

यद्यपि, एक धनवान व्यक्ति भी, यदि स्मृतिहीन व्यवहार करता है तो पतित हो दुःख भोगता है, अतः बुद्ध ने ‘पराभव सुत्त’ में हम को यह सिखाया है कि इस पतन के क्या कारण हैं। श्री ली ने इन कारणों को स्पष्टतया प्रस्तुत किया है और सहजतः उनको तीन शीर्षकों में रखा है।

उन्होंने ‘मंगल सुत्त’ पर भी एक नए दृष्टिकोण से प्रकाश डाला है, सारे 38 मंगलो को पाँच शीर्षकों के अन्तर्गत रखा है जिनको उन्होंने नाम दिए हैं सारभूत

मंगल, सहायक मंगल, व्यक्तिगत मंगल, उच्चतर मंगल तथा उच्चतम मंगल ।
इस पुस्तिका में श्री ली ने दर्शाया है कि सुख-समृद्धि कैसे अर्जित की जाए,
भौतिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक पतन से कैसे बचा जाए तथा लोगों को
जीवन में मंगलमयता की ओर उर्ध्व कैसे किया जाये। अतः, मैं इस पुस्तिका
का ज्ञानमयी सामग्री के रूप में भरपूर अनुमोदन करता हूँ, बौद्ध दृष्टिकोण से
एक मंगलमय जीवन के लिए ।

पूज्य डॉ. आई. इन्दासरा थेरो

अध्यक्ष

बौद्ध दर्शन विभाग

बुद्धिस्ट एण्ड पाली यूनिवर्सिटी ऑफ़ श्रीलंका

श्री लंका



8

प्राक्कथन



एशिया में पारम्परिक बौद्ध देशों के अतिरिक्त, जहाँ बुद्ध धम्म की सशक्त उपस्थिति है, अमेरिका तथा यूरोप के कई देशों में यह विस्फोटक की सी गति से फैल रहा है, तथा वर्तमान में आस्ट्रेलिया में सब से तेज़ फैलने वाला धर्म है । आधुनिक तथा शिक्षित लोग दिनों-दिन ऐसी आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं जो काल्पनिक तथा मनगढ़न्त कहानियों तथा मिथकों से रिक्त हो, दण्ड की धमकियों से मुक्त हो, ऐसी धारणाओं से भी मुक्त हो जो तर्क तथा विज्ञान के विरुद्ध जाती हों ।

साधारण श्रद्धा तथा पूजा आजकल तथा इस युग में पर्याप्त नहीं हैं । बुद्ध धम्म अपनी व्यवहारिक, परस्पर-अविरोधी तथा नित्यजीवनोपयोगी शिक्षाओं के कारण बुद्धिमान तथा जिज्ञासु मस्तिष्कवासी को संतुष्ट कर सकता है तथा वर्तमान समाज को भाता है । सिंगालोवाद-सुत्त, ब्यग्घपज्ज सुत्त, पराभव सुत्त तथा मंगल सुत्त ऐसी शिक्षाओं के अतिउत्तम उदाहरण हैं । वे विवेकपूर्ण हैं, एकदम लागू करने के योग्य हैं, व्यक्तिगत सुधार तथा उन्नति व आध्यात्मिक उन्नति एवं विकास की ओर ले जाते हैं । यह पुस्तक इन चार सुत्तों पर आधारित है ।

इन सारगर्भित शिक्षाओं को संक्षिप्त, सुलभ तथा तृणमूल शैली में प्रस्तुत कर मैं आशा करता हूँ कि इस से बुद्ध धम्म की विस्तृत जानकारी का विकास होगा ताकि अधिकतम लोग इस को सराह सकें । मैंने विचार किया था कि यह भी लाभदायक रहेगा यदि इन चार सुत्तों को एक संक्षिप्त पुस्तक में संजो दिया जाए, उनके सुलभ अवलोकन हेतु जो बुद्ध धम्म का अभ्यास करते हैं तथा उनकी सुविधा हेतु जो बुद्ध धम्म का अध्ययन करते हैं । अतः पूज्य नारद थेरा के अधिकतर उपलब्ध अनुवाद परिशिष्ट में सम्मिलित कर लिए गये हैं ।

9

बुद्ध की शिक्षाओं को सर्वप्रथम स्मृति के आधार पर संरक्षित किया जाता था तथा उन का पाठ किया जाता था, न कि लिखा जाता था। परन्तु जब इन को लिखा जाता है तो कभी-कभी इनका पाठ कठिन-सा हो जाता है। इसका ख़ास कारण य़ूँ है कि वे 2500 वर्ष से भी अधिक पूर्वकाल में जन्मी हुई, आजकल की परिस्थितियों से अधिकांशतः अलग, तथा एक ऐसी भाषा में हैं जो हमारी अपनी भाषा जैसी नहीं थी।

अतः, इस प्रयोजन से कि ये सुत्त अधिक सुबोध तथा समझने योग्य बन पड़ें इनका प्रस्तुतिकरण आजकल के परिवेश तथा आजकल की भाषा में दिया गया है। उनको शीर्षकों एवं उपशीर्षकों सहित अध्यायों में भी संजोया गया है, तथा व्याख्याएँ भी जोड़ दी गई हैं ताकि वे पढ़ने में अधिक सुगम बन सकें। फिर भी, मूलपाठ की लय तथा क्रमिकता को बनाए रखा है, जहाँ तक बन पड़ा, कि बुद्ध की शिक्षाओं के भाव तथा प्राण सुरक्षित रहें।

मैं अपनी गहनतम कृतज्ञता प्रकट करना चाहूँगा पूज्य एस. धम्मिका के प्रति उनके मार्गदर्शन तथा निरन्तर धैर्य के लिए, पूज्य डॉ. आई. इन्दासरा थेरो को भूमिका लिखने के लिए, पूज्य पञ्जावरो महाथेरा को पुस्तक की समीक्षा के लिए तथा महाशय लियोंग कुम सेंग तथा सुश्री हन अह येव को उनके बहुमूल्य सुझावों तथा लेखों के निरीक्षण में सहायता के लिए। मेरा अहोभाग्य कि मैं सुश्री सिल्विया बे के साथ इस पुस्तक का कार्य कर सका। मेरी प्रशंसा पुनः सुश्री गीलिन लिम के लिए है, उनकी कड़ी मेहनत तथा पुस्तक की रूप-रेखा के लिए। सब त्रुटियाँ तथा भूलचूक केवल मेरे कारण हैं, तथा किसी से यह जान कर मुझे आनन्द होगा कि वे इस का सुधार कर सकते हैं, ताकि इस पुस्तक को सुधारा जा सके।

मेरे गुरु एवं धम्म मित्र भी धन्यवाद के पात्र हैं जिनका सहयोग तथा प्रोत्साहन आरम्भ से ही मिला। मैं अपने माता-पिता तथा पत्नी के प्रति कृतज्ञ हूँ, उस सब सहायता के लिए जो उन्होंने धम्म के प्रसार 'कार्य' के लिए प्रदान की।

अन्त में मेरा विशेष धन्यवाद विश्वभर के उन लोगों के लिए जिन्होंने 'जस्ट बे गुड' को इतना सफल बनाया तथा जहाँ भी वे हैं, धम्म को प्रतिपादित करने के लिए हैं।

मैं अपना गहनतम आभार व्यक्त करना चाहूँगा श्री राजेश चन्द्रा के प्रति, मेरी पुस्तिकाओं को हिन्दी में सृजित करने के उनके प्रयासों एवं सहयोग के लिये तथा भारत देश, वह देश जिसने बुद्ध धम्म को जन्म दिया, मैं धम्म प्रसार के उनके अथक प्रयासों के लिये।

दिवंगत श्री सुरेन्द्र कुमार मेहता के प्रति मैं उनके द्वारा अपनी पुस्तिका अनुवादित करने के लिये अतिशय आभार व्यक्त करना चाहूँगा। यद्यपि जो पुण्य उन्होंने अर्जित किया है, मंगलकामना करता हूँ कि उस पुण्य के प्रतिफल से उनका ऐसे देश व काल में जन्म हो जहाँ धम्म प्रचलन में हो ताकि भगवान बुद्ध की देशनाओं के प्राणीमात्र के कल्याण हेतु प्रसार के लिये वे अपने कार्य को जारी रख सकें।

प्राणीमात्र का मंगल हो, वे सुखी रहें तथा भौतिक और मानस दुःख से मुक्त हों। सब प्राणी बुद्ध मार्ग पर आरुढ़ हों तथा निर्वाण का साक्षात्कार करें। इस पुस्तक के सब पुण्य सब प्राणियों की मुक्ति तथा प्रसन्नता के लिए समर्पित हों और वे बुद्ध शिक्षाओं के संरक्षण तथा प्रसार के लिए सहायक हों।

टी वाइ ली

बुद्ध धम्म में डिप्लोमा, श्रीलंका
विधि स्नातक (ससम्मान), यू.के.
एम.बी.ए., यूएसए

www.justbegood.net



सुवत्थि होतु

विश्व कल्याण के किसी कार्य का हिस्सा हो पाना वास्तव में महान आनन्द की बात है; महाशय ली का कार्य पुण्यपूर्ण है और राजेश चन्द्रा ने भला किया कि अपने सुहृदय मित्रों के सहयोग से अनुवाद का उत्तरदायित्व लेकर हिन्दी पाठकों पर उपकार किया है। इस पुस्तिका के अनुवादक के तौर मुझे उल्लेख करना ही चाहिए कि बुद्ध के शब्दों व उनके भावों को व्यक्त करने में कोई परम मेधावी ही न्याय कर सकता है, और बेशक मैं वह परम मेधावी नहीं हूँ। मैं आश्वस्त हूँ कि सुहृदय पाठक मुझे इतनी छूट देंगे ही, और क्रमशः मूल देशनाओं की ओर अग्रसर होंगे।

महाशय ली ने विश्व कल्याण की इस पुस्तिका के अन्त में व्याख्या की है कि धम्म दान महानत उपहार क्यों है। क्या इससे अधिक मैं कुछ कह सकता हूँ!

किसी भी उपहार को परम उपहार होने के लिये, लागू यह होता है कि वह दाता और ग्राहक दोनों के लिये परम संतोषदायक होना चाहिये (बेशक यह उनके विकास पर निर्भर है) जो कि धम्म चित्त है अर्थात् शुद्ध और शान्त मनोदशा जो असंतोष मनोवृत्ति से मुक्ति की ओर अग्रसर होता है। यह किसी धम्म ग्रंथ को पढ़ कर और उसे आगे बढ़ा देने तक सीमित नहीं हो सकता। आवश्यक रूप से इसका अर्थ है आनन्दपूर्ण समझ और अभ्यास, जो कि सांसारिक परिस्थितियों के साथ कठिन प्रतीत होता है, क्योंकि इसे परिपक्व व फलित होने में समय लगता है।

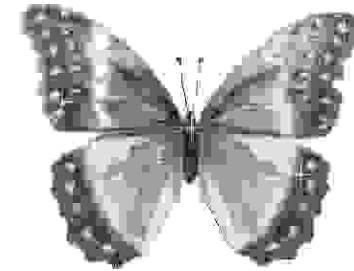
धम्म दान की परम सुखानुभूति का आनन्द लेने के लिये, कहने की आवश्यकता नहीं, कि सर्व प्रथम इसे स्वयं पर लागू करना होता है, लेकिन अधिकांश लोग प्रायः इसे भूल जाते हैं, यह मेरी विनम्र स्वीकारोक्ति है।

जो कुछ भी पुण्य मैंने अर्जित किया है ये उन्हें हस्तांतरित है जो धम्म मार्ग पर पर्याप्त अग्रसर नहीं हुए हैं (उनमें मैं भी शामिल हूँ) जो इसके फलित होने में किंचित सहायक होगा, जैसे घास से मक्खन तैयार करना, उसके लिये गाय का पोषण करना होता है जब तक वह दूध नहीं देने लगती, फिर मक्खन का आनन्द लेने के लिये और कई प्रक्रियाओं से गुजरना होता है। दुर्भाग्य से, यहाँ इसे बाजार से खरीदने का विकल्प नहीं है।

अन्त में, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, समस्त स्रोतों के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने मन की शान्ति और शुद्धता के इस मार्ग पर मदद की है—निब्बान की सुखानुभूति का मार्ग—स्वयं के द्वारा प्राप्य, सुवत्थि होतु—कल्याण हो। बुद्ध के मार्गदर्शन का आभार...



—सुरेन्द्र कुमार मेहता



सम्पादकीय

एक शब्द है सूत्र, यह बड़ा प्यारा और प्रतीकात्मक शब्द है और बहुअर्थी भी।

सूत्र का एक अर्थ है धागा। कठपुतली के खेल में सूत्रधार होता है जो कठपुतलियों को धागे में बाँध कर, उन धागों को अपनी अंगुलियों में फंसा कर कठपुतलियों को नचाता है, कथानक को नाटक के रूप में प्रस्तुत करता है।

सूत्र अर्थात् धागे का प्रयोग माली भी करता है जो चुने हुए फूलों को गुथ कर माला बना देता है, गजरा बना देता है, फूलों के आभूषण निर्मित कर देता है।

जौहरी मोतियों को सूत्र में पिरो कर मंगल सूत्र बना देता है। जुलाहा सूत्र से, धागे से, कपड़े बना देता है, आकर्षक परिधान निर्मित कर देता है।

व्याकरण और भाषा में सूत्र होते हैं। उन सूत्रों में गहन अर्थ समाहित होते हैं। उन सूत्रों से वाक्य विन्यास, छन्द सृजित होते हैं।

कूट संदेशों, कूट वाक्यों को भी सूत्र कहते हैं जिनमें कोई गुप्त संदेश निहित होता है। उन सूत्रों के उद्घाटन से बड़े अर्थ निकल आते हैं।

गणित में सूत्र होते हैं जिनसे सवाल के हल निकलते हैं। सटीक सूत्र प्रयुक्त हो तो सवाल का हल सटीक व सही निकलता है, शतप्रतिशत सही हल।

बुद्ध के वचनों को, उनकी देशनाओं को भी सूत्र कहते हैं। बुद्ध के वचनों के संग्रह त्रिपिटक में एक पिटक है सूत्र पिटक अथवा सुत्त पिटक।

बुद्ध के सूत्र भी धागे की तरह हैं और समस्या के हल के लिये गणित के सूत्र जैसे।

बुद्ध के सूत्रों के अनुशीलन से बिखरे हुए मोतियों अथवा चुने हुए फूलों से माला निर्मित हो जाती है—आन्तरिक जीवन में और वाह्य जीवन में भी। बुद्ध के सूत्र वाह्य और आन्तरिक बिखरावों को सूत्रबद्ध कर देते हैं। माला या हार की तरह जीवन सुवासित व सुन्दर आभूषण बन जाता है।

गणित में सूत्र होते हैं जिन्हें सही-सही लागू करने पर समस्या अथवा प्रमेय का हल निकल आता है, हम कह पाते हैं इति सिद्धम्। इसी प्रकार बुद्ध के सूत्रों का भी सम्यक अनुपालन किया जाये तो जीवन की प्रमेयों, पहलियों, समस्याओं का हल निकल आता है।

इन अर्थों में बुद्ध के वचनों को सूत्र कह कर संकलित करने वाले आचार्यों ने मानवता को एक संदेश—सा दिया है, कूट संदेश, कि इन सूत्रों में जीवन की पहली का हल निहित हैं।

बुद्ध बड़ी निर्भीकता से और वैयक्तिक स्वतंत्रता को मान देते हुए कहते हैं—जैसे सोनार सोने को आग में तपा कर परखता है ऐसे तुम मेरे वचनों को परखो...

आप बौद्ध हैं या अबौद्ध, आप आस्तिक हैं अथवा नास्तिक, धार्मिक हैं अथवा किसी भी धर्म को ना मानने वाले, इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता। बुद्ध आपको आमंत्रित कर रहे हैं अपने वचनों को, सूत्रों को, परख कर देखने के लिये। वे आपको अपने वचन मान लेने के लिये बाध्य नहीं कर रहे हैं, न अपनी बात मनवाने का प्रयास ही कर रहे हैं, बस सहज निमंत्रण दे रहे हैं—एहि पस्सिको—आओ और देखो!

फिर वह परखने को ही तो कह रहे हैं, परख कर देखने में क्या जाता है! आखिर धरती के एक महामानव का निमंत्रण है—एहि पस्सिको—आओ और देखो!

आप बुद्ध के सूत्रों को आजमा कर देखें। आप इन्हें स्वीकारने के लिये

बाध्य नहीं हैं, बल्कि नकारने के लिये स्वतंत्र भी हैं।

प्रस्तुत लघु पुस्तिका में महाशय टी वाई ली ने भगवान बुद्ध के चार सूत्र लिये हैं—सिगाल सूत्र, दीघजानु अथवा ब्यग्घपज्ज सूत्र, पराभव सूत्र और महामंगल सूत्र।

सिगाल सूत्र में भगवान ने सांसारिक व गृहस्थ जीवन को सुख व समृद्धि के साथ जीने के उपाय बताये हैं। छः दिशाओं को प्रतीक रूप में उपयोग किया है। यह सूत्र बौद्ध धर्म के प्रतीकवाद का बहुत बड़ा प्रमाण है।

दीघजानु अथवा ब्यग्घपज्ज सूत्र में भगवान ने एक गृहस्थ युवक को घर की आर्थिक स्थिति को संतुलित, सुदृढ़ व समृद्ध करने के उपाय बताये हैं। यह सूत्र हर गृहस्थ के लिये उपयोगी व कीमती है।

पराभव सूत्र में भगवान बुद्ध ने मनुष्य के पतन के बारह कारण बताये हैं जिनसे विरत रह कर मनुष्य पराभव से बच सकता है।

पराभव सूत्र के विपरीत महामंगल सूत्र में भगवान बुद्ध ने मनुष्य की उन्नति के 38 उपाय अर्थात् 38 मंगलों की देशना की है। इस सूत्र के आधार पर ही सिंगापुर के मित्र टी वाई ली ने इस लघु पुस्तिका को शीर्षक दिया है—मंगलमय जीवन।

यहाँ यह जानना रोचक होगा कि बौद्ध काल में भारत में विवाह के समय महामंगल सूत्र के संगायन के साथ वर-वधु का विवाह सम्पन्न कराया जाता था। अभी भी बौद्ध समाजों में विवाह में मंगल सूत्र का संगायन होता है। जितनी देर संगायन होता है उतनी देर तक कन्या का पिता जलार्पण विधि से कन्यादान करता है। संगायन पूर्ण होने पर उपस्थित समूह तीन बार साधु, साधु, साधु का उद्घोष करता है। प्रथम साधु उद्घोष पर वर वधु के गले में माला डालता है, दूसरे साधु उद्घोष पर वधु वर का माल्यार्पण करती है और तीसरे साधु उद्घोष पर उपस्थित सामाजिक समूह वर-वधु पर पुष्प वर्षा कर उन्हें

उपहार व आशीष देता है—मंगलमय गृहस्थ जीवन की।

लगभग बारहवीं शताब्दी के बाद जब इस देश में बौद्ध परम्पराएँ क्षीण होने लगीं तो विवाहों से मंगल सूत्र का संगायन तो लुप्त हो गया लेकिन उसके स्थान पर वधु के गले में एक हार पहनाया जाने लगा, उसे मंगल सूत्र परिभाषित किया गया। यह एक महान परम्परा का अपभ्रंश रूप है। मंगल सूत्र को महिलाएँ सौभाग्य का, मंगलमय जीवन का, प्रतीक मानती हैं। उसके टूटने को अपशगुन मानती हैं। यह एक अंध विश्वास है। वास्तव में सौभाग्य का, मंगलमय जीवन का प्रतीक है वह मंगल सूत्र जिसकी देशना भगवान बुद्ध ने दी है। उस सूत्र के खण्डित होने से, उनकी देशनाओं से विचलित होने से अमंगल होने की सम्भावना बनती है, जीवन में अपशगुन होता है। उपासकों का प्रयास होना चाहिए कि महामंगल सूत्र न टूटे, जीवन का मंगल इसी में है।

इस लघु पुस्तिका में यथा प्रसंग आया एक शब्द और विशेष व्याख्या की मांग करता है। वह शब्द है आर्य। जैसे आर्य सत्य, आर्य आष्टांगिक मार्ग, आर्य विनय, इत्यादि। मूल पालि में भगवान बुद्ध की देशनाओं में जो शब्द प्रयुक्त हुआ है, वह है अरिय, जिसे संस्कृत में आर्य भाषान्तर किया गया है। महामंगल सूत्र में शब्द आया है—अरिय सच्चानि अर्थात् आर्य सत्य।

आधुनिक इतिहास में यह शब्द नस्लीय अर्थों में प्रयोग किया जाता है। इतिहासकार कहते हैं कि आर्य एक नस्ल है जो भारत में बाहर से आयी।

भगवान बुद्ध ने अरिय अथवा आर्य शब्द का जो उपयोग किया है वह नस्लीय अर्थ में नहीं है। पालि में अरिय का अर्थ होता है श्रेष्ठ, अटल, त्रैकालिक सत्य, सुन्दरतम्। जो कुछ भी सुन्दरतम् है, श्रेष्ठतम है उसे भगवान ने अरिय अथवा आर्य कहा है। निर्वाण को उपलब्ध होने का श्रेष्ठतम मार्ग है अष्टांग मार्ग, इसलिये भगवान ने उसे उपसर्ग देकर कहा है, आर्य आष्टांगिक मार्ग। दुःख, दुःख का कारण, दुःख का निदान और निदान का उपाय व सम्बोधि की उपलब्धि—इन चार क्रमिक अंगों के साक्षात्कार को भगवान ने

श्रेष्ठतम सत्य कहा है, इसीलिए इन चार अंगों को उन्होंने चार आर्य सत्य कहा है।

आधुनिक इतिहासकार इस दिशा में भी गहन शोध कर रहे हैं और स्थापना दे रहे हैं कि अरिय अथवा आर्य शब्द की अर्थश्रेष्ठता व लोकप्रियता देख कर इसे उस समुदाय ने आत्मसात कर लिया जिसे आज आर्य परिभाषित किया जा रहा है। बुद्ध के काल में ऐसे साक्ष्य भी मिलते हैं कि कम्बोज से व्यापारी भारत आते थे, बुद्ध से मिलते भी थे। कम्बोज ही आधुनिक ईरान है, जो कि आर्यान् का अपभ्रंश है, जिसे आर्यों का मूल स्थल माना जाता है। इस प्रकार यह कहना उचित नहीं होगा कि आर्य भारत के बाहर से आये, बल्कि कहना उचित यह होगा कि वह समुदाय जो भारत के बाहर से आया उसने बुद्ध के अरिय अथवा आर्य शब्द को स्वयं के सम्बोधन के लिये आत्मसात कर लिया। यह उनका उस काल में बुद्ध के प्रति अनुराग भी दर्शाता है।

इसी आलोक में दो और शब्द भी देखे जाने चाहिये - पण्डित और ब्राह्मण। पालि ग्रंथों में भगवान बुद्ध की देशनाओं में इन दोनों शब्दों का बहुधा प्रयोग हुआ है। इस पुस्तिका में भी महामंगल सुत्त में 'पण्डित' और पराभव सुत्त में 'ब्राह्मण' शब्द प्रयुक्त हुआ है। इन शब्दों का प्रयोग जब बुद्ध करते हैं तो उनका अर्थ जातिवाचक नहीं होता, बल्कि गुणवाचक होता है। बुद्ध ने अपने समय में प्रचलित कई परम्पराओं व शब्दों को पुनर्परिभाषित भी किया है। जैसे, छः दिशाओं को पूजने की परम्परा को उन्होंने नया अर्थ दिया-सिगालोवाद सुत्त में। ब्रह्म शब्द को मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा से संयुक्त कर ब्रह्म विहार के रूप में व्याख्यायित किया। कदाचित 'पण्डित' और 'ब्राह्मण' शब्दों को लेकर बौद्ध दृष्टिकोण से सुस्पष्टता बनी रहे इसीलिये धम्मपद में 'पण्डित वग्ग' और 'ब्राह्मण वग्ग' भी हैं। धम्मपद की गाथाएँ कहती हैं - कण्हं धम्मं विप्पहाय सुक्कं भावेथ पण्डितो - पाप कर्म को छोड़ कर पण्डित शुभ कर्म करे। परियोदपेय्य अत्तानं चित्तक्लेसेहि पण्डितो -

पण्डित अपने चित्त के मैल को दूर करें। यस्स कायेन वाचाय मनसा नत्थि दूक्कतं, संवुतं तीहि ठानेहि तमहं बूमि ब्राह्मणं - जिससे काया, वाचा, मनसा कोई पाप नहीं होता, जो इन तीनों स्थानों से संयत है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

इस पुस्तिका में पण्डित और ब्राह्मण शब्द इन्हीं बौद्ध अर्थों में देखे जाने चाहिये। सन्दर्भ के लिए धम्मपद देखें।

यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना उचित होगा कि महाशय टी वाई ली द्वारा प्रस्तुत पुस्तिका में चयनित सूत्रों का स्रोत अंग्रेजी में अनुवादित त्रिपिटक हैं। लेकिन मैंने स्रोत के तौर पर मूल पालि और उनके हिन्दी अनुवाद को लिया है तथापि अध्यायों के अंत में श्री टी वाई ली द्वारा प्रयुक्त अंग्रेजी संदर्भ ही दिये हैं ताकि इसका श्रेय वास्तविक लेखक को ही मिले।

इस लघु पुस्तिका का हिन्दी में अनुवाद मेरे दिवंगत मित्र श्री सुरेन्द्र कुमार मेहता जी ने किया है। यद्यपि यह पुस्तिका उनके रहते ही मैंने छपाई की प्रक्रिया में दे दी थी, लेकिन इसे छप कर आने से पहले ही वे दिवंगत हो गये। उनके अभाव की जो गहन पीड़ा हृदय में है उसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। बस बोधिसत्त्वों से प्रार्थना है कि इस पुस्तिका से धम्म प्रचार का जो पुण्य अर्जित हो, वह मेरे दिवंगत मित्र श्री मेहता को मिले।

अनुवादक के अभाव में पुस्तिका का सम्पादन कर पाना लगभग असम्भव-सा काम है। उस असम्भव काम को श्री सुरेन्द्र कुमार मेहता की पत्नी श्रीमती कंचन मेहता एवं उनकी बेटा श्रीमती प्रीति मेहता के सहयोग ने सम्भव कर दिखाया। मैं उनका आभारी हूँ, उनके पति व पिता तो वापस नहीं आ सकते लेकिन इस पुस्तिका के रूप में धम्म उन तक आ रहा है, वे हर्षित हों, ऐसी शुभकामनाएँ।

अनुवाद की पाण्डुलिपी के साथ श्री मेहता ने बतौर अनुवादक अपनी भूमिका भी डाक से भेजी थी जिसे 'सुवत्थि होतु' शीर्षक से मैंने यहाँ शामिल कर लिया है।

पुस्तिका का आकर्षक मुख्यपृष्ठ, पिछली पुस्तिका के मुख्यपृष्ठ की तरह ही, मेरे परम प्रिय मित्र डॉ. पंकज त्यागी की कृति है। इसे देख कर लगता है कि उनकी कला को बोधिसत्त्वों का आशीष मिला है। उनकी कला लोगों में बुद्धानुराग पैदा करे, ऐसी मंगल कामना है। पुस्तिका के सम्पूर्ण कला पक्ष को डॉ. त्यागी का स्पर्श प्राप्त है और उसे साकार करने में तकनीकी सहयोग किया है श्री मुस्लिम अंसारी ने। वे मूलतः बुद्ध की निर्वाण स्थली कुशी नगर के रहने वाले हैं। उस निर्वाण स्थली की खुशबू श्री अंसारी के कार्य में है। उनका आभार।

भारत में धम्म प्रचार के लिये ऐसी लघु पुस्तिकाओं की नितान्त आवश्यकता है। बन्धु टी वाई ली ने इन्हें हिन्दी में अनुवादित व प्रकाशित करने की अनुमति एवं सहयोग दिया, वे सबसे बड़े पुण्य के अधिकारी हैं।

इस श्रृंखला की शेष लघु पुस्तिकाएँ भी शीघ्र ही आप पाठकों के हाथों में होंगी। आपका सहयोग एवं परामर्श दोनों हमारे लिये मूल्यवान हैं। कृपया आप दोनों निःसंकोच दें।

पुस्तिका के प्रकाशन में समस्त सहयोगी मित्रों का हृदय से गहनतम आभार।

25 जुलाई 2010
धम्म चक्र प्रवर्तन पूर्णिमा
लखनऊ



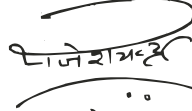
परिचय

बुद्ध धम्म को प्रायः एक उच्चतर आध्यात्मिक साधना के रूप में देखा जाता है जो प्राणीमात्र के उद्धार में संलग्न है अथवा निर्वाण की उपलब्धि में। परन्तु, इस बात की अक्सर अनदेखी कर दी जाती है कि बुद्ध ने लोगों के दिन-प्रतिदिन के जीवन तथा परिवार पालन के लिए, अपना व्यापार चलाने के लिए तथा पारस्परिक सामाजिक क्रियाकलाप के लिए कई मूल्यवान शिक्षाएँ भी दी हैं।

प्राचीन भारत में बुद्ध की शिक्षाओं का तेज़ी से फैलने का एक मुख्य कारण एक मार्गदर्शक के तौर पर बुद्ध का महान कौशल भी था। वे अपने सुनने वालों का नैतिक तथा आध्यात्मिक स्तर भाँप सकते थे। मिसाल के तौर पर यदि वे देखते थे कि उनको सुनने वाले चार आर्य सत्त्वों या आर्य आष्टांगिक मार्ग को समझने के लिए परिपक्व नहीं हैं तो वे अधिक साधारण शिक्षाएँ प्रदान करते थे, जिन को लोग समझने तथा अपनाने के लिए आसान पाते थे।

अत्यधिक साधारण लोगों को तो वे समझाते थे उदारता तथा नैतिकता के लाभ ताकि यदि वे उन शिक्षाओं को मान लें तथा उनका अभ्यास करें तो उनका वर्तमान जीवन सुधर जाएगा तथा वे इस योग्य भी हो जाएंगे कि उनके अगले जन्म अनुकूल ही नहीं स्वर्ग सरीखे हों। इन प्रारम्भिक शिक्षाओं को सीखने एवं अभ्यास करने से भी उनके लिए संभावनाएँ बन जाती हैं कि अपने भविष्य के जन्मों में भी वे पूर्ण बुद्धत्व की ओर जाने वाले मार्ग पर चलते ही रहें।

बुद्ध जानते थे कि उच्चतर शिक्षाओं को उन्हें प्रदान करना, जो सुपात्र नहीं थे, व्यर्थ और अव्यवहारिक होगा। ऐसा करना उनको भ्रमित कर देगा अथवा और भी बदतर यह हो सकता है कि वे धम्म से विमुख ही हो जाएँ। जब वे आश्वस्त होते थे कि कोई इस योग्य है तभी वे उच्चतर शिक्षाओं तक की बात करते थे।

सस्नेह आपका

(राजेश चन्द्रा)

यदि बुद्ध अपने सुनने वालों की योग्यता के अनुकूल अपनी शिक्षाओं को न ढालते तो बुद्ध धम्म असफल हो जाता । वे अपनी शैली बदल सकते थे, शिक्षा की मात्रा तथा गहराई में विभिन्नता ला सकते थे ताकि उनको सुनने वाले उनसे अत्यधिक लाभ ले सकें । युगों-युगों तक बुद्ध धम्म की सुरक्षा, प्रसार तथा सफलता के लिये इस सौम्यता का भी योगदान रहा ।

तदनुसार, त्वरित परिवर्तन तथा प्रायः अति भौतिकवाद के इस वर्तमान युग में कई लोगों की ऐसी शिक्षाओं में अधिक रूचि होगी जो सकारात्मक हों तथा जिनका प्रभाव उनके दैनिक जीवन पर तत्काल हो । अतः तृणमूल शैली में व्यक्त ये शिक्षाएँ, जैसे कि इस पुस्तिका में प्रस्तुत की गयी हैं, कई लोगों के लिए बहुमूल्य तथा शुरुआती कदम सिद्ध हो सकती हैं और यदि इनका आचरण किया गया तो यही सीढ़ी का काम करेगी, उच्च आदर्शों तथा आध्यात्मिक प्रगति के लिए, तथा विशेषतया, बुद्ध धम्म की यात्रा का शुभारम्भ सुनिश्चित करेगी ।

सिगालोवाद सुत्त (उपासकों की आचारसंहिता), ब्यग्घपज्ज सुत्त (कल्याण के कारण), पराभव सुत्त (पतन के कारण) तथा मंगल सुत्त (मंगलों पर प्रवचन) वे शिक्षाएँ हैं जिनकी व्याख्या इस पुस्तक में की गई है । वे क्रमिक तथा बोधगम्य हैं, ऐसी मार्गदर्शक बातों का समूह हैं, जो दैनिक जीवन में लागू होती हैं और इसके आगे सामाजिक रिश्तों, अर्थनीति तथा राजनीति पर लागू होती हैं तथा क्रमशः बुद्ध की गहन शिक्षाओं तक ले जाती हैं ।

फिर भी यह बात विशेष है कि ये शिक्षाएँ बुद्ध के 'आदेश' नहीं हैं । बुद्ध धम्म में ऐसी धारणा नहीं है कि कोई स्वर्गलोक के वासी नियमों को बनाते हैं जिनके उल्लंघन का फल है शाश्वत नरक की यातनाएँ । बुद्ध धम्म वरदान तथा अभिशापों पर आधारित नहीं है वरन् ज्ञान तथा समझबूझ पर आधारित है । केवल अनुसंधान से, जाँच पड़ताल से तथा ठीक से समझ कर ही बुद्ध की शिक्षाएँ वास्तव में क्रियान्वित की जा सकती हैं ।

अंधश्रद्धा तथा विचारविहीन पूजा एक बौद्ध होने के लिए आवश्यक नहीं है । वास्तव में यह नकारात्मक प्रवृत्तियाँ हैं जिन्हें हतोत्साहित किया जाना चाहिए, क्योंकि यह हठधर्मिता, कट्टरता तथा जड़ता की ओर ले जाती हैं । बुद्ध धम्म में एक समझदार जिज्ञासु मानसिकता को एक मूल्यवान गुण समझा जाता है, जो कि बुद्धिमत्ता तथा खुलेपन को दर्शाता है ।

इस पुस्तिका में रहस्यमय अथवा सुदूर रहस्यमयता जैसा लेशमात्र भी नहीं है । बुद्ध ने कभी अलौकिक कर्मकाण्ड का सहारा नहीं लिया और न किसी को अपनी किसी शिक्षा में तर्क विरुद्ध श्रद्धा की छलांग लगाने को कहा । यहाँ हर बात तर्कसंगत, व्यवहार कुशल, आज की आवश्यकतानुसार और एकदम आधारभूत है । यह शिक्षाएँ कठिन नहीं हैं और किसी के द्वारा भी अभ्यास में लाई जा सकती हैं, चाहे वे बौद्ध हों, चाहे न हों ।

इन शिक्षाओं की ओर एक खुले मन से बढ़ें । इनके अभ्यास और पालन के निमित्त निष्ठावान प्रयास करें । परिणाम एकदम तथा लाभकारी होगा, इस जीवन में तथा भावी जीवनों में ।





बोधिसत्व पद्मपाणि, अजन्ता

सुख-शान्ति हेतु बुद्ध की शिक्षा

सिगालोवाद सुत्त

सुख शान्ति के लिये बुद्ध की शिक्षा जिस सुत्त पर आधारित है, वह है सिगालोवाद सुत्त, महानतम और बहुमूल्य शिक्षा संग्रहों में से एक । यह सुत्त सरोकार रखता है मूलभूत शील, धनोपार्जन तथा संरक्षण से, सामाजिक सम्बन्धों के परस्पर उत्तरदायित्वों तथा सफल व्यक्ति के गुणों से । यह शिक्षा व्यक्ति को तथा समाज को भी लाभान्वित करती है ।

इस सूत्र का नामकरण सिगाल के नाम से है, जो बुद्ध काल का एक युवक था । सिगाल अपनी मर्जी का मालिक, हठीला, भौतिकवादी तथा ज़िद्दी था तथा उसके पास बुद्ध को आदर-सम्मान न देने के अनेक बहाने थे या कि फिर मन्दिर तक भी न जाने के । इस युवक के माता-पिता बुद्ध में श्रद्धा रखते थे पर वे इसको अपने पदचिन्हों पर न चला सके । उसके अत्यन्त धनी पिता को यह आशंका थी कि सिगाल भटक जाएगा तथा उस धन को उड़ा देगा, जिसका वह उत्तराधिकारी था ।

एक बड़ी बीमारी के बाद पिता ने सिगाल को अपनी मृत्यु-शैय्या के पास बुलाया कि उसको अपनी अन्तिम इच्छाएं कह सके । उसने सुझाया कि सिगाल प्रतिदिन प्रातः छहों दिशाओं की पूजा करे, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, ऊपर तथा नीचे । क्योंकि भारत में उस समय इस धार्मिक साधना का प्रचलन था । सिगाल ने यह मान लिया तथा इतना आज्ञाकारी तो बन गया कि यह अनुष्ठान वह हर सुबह श्रद्धापूर्वक करेगा ।

उसके पिता की आशा के अनुसार जब एक दिन वह छः दिशाओं की पूजा कर रहा था उसका सामना बुद्ध से हो ही गया । बुद्ध ने सिगाल से पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहा है और सिगाल ने उत्तर दिया कि वह मात्र अपने पिता की अन्तिम

इच्छाएं निभा रहा था ।

इस पर बुद्ध इस अनुष्ठान की नयी तथा अर्थपूर्ण व्याख्या की ओर अग्रसर हुए । ये व्याख्याएं इस प्रवचन का आधार बनीं जिस को हम सिंगोलोवाद सुत्त के नाम से जानते हैं । प्रवचन की समाप्ति पर सिंगाल बुद्ध की शरण में आ गया तथा उन के एकनिष्ठ शिष्यों में से एक बन गया ।



1. मूलभूत शील

चार हानिकारक कर्मों से विरत रहना

पाणातिपाता—विरत रहना प्राणिमात्र को कष्ट देने अथवा हत्या करने से [1]

कष्ट देने और हिंसा करने से विरत रहना, यह वह उपाय है जिससे प्रत्येक व्यक्ति दूसरों से होने वाले दुःख और कष्ट से रक्षा करता है, जीवन तथा संरक्षण सुरक्षित होता है ।

अदिन्नदाना—विरत रहना जो दिया नहीं गया उसे लेने से [2]

अदिन्नदाना वह उपाय है, जिससे हर व्यक्ति अन्यो को बचाता है निर्धनता और अर्थ हानि से और इसी से व्यक्ति की सम्पत्ति व आजीविका संरक्षित होती है ।

कामेसुमिच्छाचारा—विरत रहना लैंगिक दुराचार से [3]

कामेसुमिच्छाचारा वह उपाय है जिससे प्रत्येक व्यक्ति बचाता है दूसरों को दुःख व संताप से और इसी से परिवार की एकता एवं सौभाग्य सुरक्षित रहता है ।

मूसावादा—विरत रहना झूठ से [4]

मूसावादा तथा असत्य भाषण के अन्य रूपों से विरत रहने के उपाय से प्रत्येक व्यक्ति समाज को बचाता है अविश्वास और बिखराव से तथा इसी से समाजों की एकता और सुरक्षा संरक्षित होती है ।

चार कर्मक्लेशों को करने के कारण

इच्छाएं :

उदाहरणार्थ, अकुशल सुख की इच्छा से कोई व्यक्ति लिप्त हो सकता है लैंगिक दुराचार में ।

क्रोध :

उदाहरणार्थ, अनियंत्रित क्रोध के कारण व्यक्ति किसी को कर सकता है आहत ।

अज्ञान :

उदाहरणार्थ, अज्ञानवश कोई खरीद सकता है चोरी की वस्तुएँ, मिलावटी अथवा नकली उत्पाद, ले सकता है वह, जो दिया नहीं गया ।

भय :

उदाहरणार्थ, हो गयी त्रुटि अथवा अपराध के खुल जाने के भय से कोई बोल सकता है झूठ ।

एक सद्गुणी व्यक्ति तृष्णावश, क्रोध, अज्ञान या भय से भ्रमित नहीं होता । अतः वह इन चार कर्मक्लेशों से अवश्यमेव विरत रहता है ।



बुद्ध सर्वप्रथम प्राथमिक शील का आधार स्थापित करते हैं, जिसे हर किसी को अपवादरहित अनुसरण करने का प्रयास करना ही चाहिए । हमें दुःख का

संवर्धन नहीं करना चाहिए, जो जन्मता है हिंसा से या चोरी से या झूठ से या व्यभिचार से, हम स्वयं के लिए नहीं चाहते कि दुःख भोगें, ऐसे कारणों से, अतः हमें स्वयं भी दूसरों के दुःख का कारण नहीं बनना चाहिए ।

जो कोई स्वभावतया इन कर्मों में लिप्त होगा, देर-सबेर, मुसीबत में पड़ेगा ही। यह तो केवल सरल-सामान्य समझदारी है। इन चार पापों से विरत रहना तथा शराब और नशीले पदार्थों के दुरुपयोग से बचना, पांच शीलों का निर्धारण करते हैं, जिन को बौद्ध अभ्यासी, अपने हर सम्भव प्रयास द्वारा पालन करते हैं।

विस्तृत आधार पर, हर एक व्यक्ति निषिद्ध कर्मों से विरत रह कर वस्तुतः समाज को बचाने में भी योगदान करता है। और जब व्यक्ति सामूहिक रूप से इन कर्मों से बचते हैं तो इकाई के रूप में एक व्यक्ति भी इस प्रकार से समाज द्वारा भी सुरक्षित होता है। बुद्ध ने इसलिए इन नैतिक आधारों को बहुत आवश्यक बताया। और यही है व्यक्ति तथा समाज की सुखशान्ति का आधार।



टिप्पणियाँ

- [1] प्राणिमात्र में जीव-जन्तु भी सम्मिलित है न कि केवल मनुष्य ।
- [2] इसमें वह सब भी आ जाता है जो किसी से छूट गया हो या इधर-उधर रखा गया हो । यथासम्भव यही प्रयास करना चाहिए कि ऐसी वस्तु उसके सही मालिक को पहुँचा दी जाए । इसमें सर्वाधिकार तथा बौद्धिक सम्पदा भी आती है जहाँ नकल, अनाधिकार उपयोग असली स्वामियों को हानि पहुँचाता है ।
- [3] इसका अर्थ है व्यभिचार, अन्यो के प्रेमलों से सांठगांठ रखना या अपने आप को जबरन किसी पर थोपना ।
- [4] इसमें हर प्रकार के मिथ्या शब्द या वचन आ जाते हैं जो हानिकारक हैं जैसे कि मानहानि, निन्दा, निरर्थक गप्पशाप्य या अफवाह फैलाना ।

2. सम्पत्ति का संवर्धन एवं प्रबन्धन

धन संवर्धन

वह जो बुद्धिमान है तथा शील में सुदृढ़ है प्रदीप्त होता है जैसे पर्वत शिखर पर अग्नि स्त्री-पुरुष धैर्य से धीरे-धीरे सम्पत्ति बनाते हैं जैसे मधुमक्खी मधु एकत्र करती है इस प्रकार सम्पत्ति का समुचित संवर्धन होगा जैसे दीमक की बांबी उठती जाती है ऊँची ।

धन प्रबन्धन

जो ऐसे धनोपार्जन करता है वह घर-परिवार के लिए तैयार होता है । धन के चार भाग करने चाहिए ताकि व्यक्ति के सदा अच्छे मित्र रहें और रहे अनुकूल जीवन । एक भाग व्यय करना चाहिए तथा मेहनत के फलों को उपभोग करना चाहिए । संभवतः कुछ अंश जरूरतमंद और अल्पभागियों के लिये भी खर्च करना चाहिए । दो भाग अपना व्यापार चलाने के लिए या बढ़ाने के लिए, एक भाग बचाना चाहिए दुर्दिनों के लिए ।



धनोपार्जन करना चाहिए 'आर्य आष्टांगिक मार्ग' के 'सम्यक आजीव' के अनुरूप। इस का अर्थ है ऐसे व्यवसाय जिस में हत्या हो, पशु मांस का विक्रय हो तथा मनुष्यों का व्यापार हो, अस्त्र-शास्त्र, विष तथा नशीले पदार्थ आदि हों, इन से विरत रहना चाहिए। शील रहित, अनैतिक तथा असंवैधानिक प्रकार की आजीविकाओं से भी विरत रहना चाहिए। बुद्ध ईमानदार तथा बुद्धिमान लोगों की प्रशंसा करते थे जो अपनी कमाई तथा बचत के लिए सम्यक-आजीविका का पालन करते थे।

बुद्ध की सलाह बड़ी रोचक है कि धनोपार्जन धैर्यपूर्वक तथा क्रमशः करना चाहिए। यह परामर्श कितना कारगर है, विशेषतया आजकल आधुनिक समय में, जहां हम अक्सर देखते हैं धन की खतरनाक सट्टेबाजी में कि कैसे एकदम धन की बाढ़ आ जाती है और ऐसे ही सूखा पड़ जाता है तथा कितने लोग धोखे में आ कर अपनी बचत भी गवां बैठते हैं, ऐसी तुरन्त धनवान बनने की योजना में, जहां तुरन्त धनवान बनना संशयात्मक होता है।

अपनी सम्पत्ति धैर्यपूर्वक तथा धीरे-धीरे बनाने वाला अक्सर स्थिर प्रकृति का बनता है और वह परिवार बसाने के लिए अधिक तैयार होता है। धन को चार भागों में बांट कर इस प्रकार प्रयोग करना चाहिए।

एक भाग अपने ऊपर तथा परिवार पर व्यय करना चाहिए, जिसका कुछ भाग स्वेच्छा से दान आदि के लिए होना चाहिए।

दो भाग अपने धन को बनाए रखने तथा बढ़ाने के लिए प्रयोग करना चाहिए जैसे कि अपने व्यवसाय में निवेश कर, जिस से कि वह जीवन्त रहे और लगातार स्थिर तथा विपुल आय आती रहे। आज कल के सन्दर्भ में, यह दो भाग संभवतया स्थिर लम्बे समय के निवेशों में लगाना चाहिए। आखिरी भाग को दुर्दिनों के लिए अलग से बचत की तरह रखना चाहिए। दुर्भाग्य कभी भी आकर मार कर सकता है और हमें इस के लिए भली प्रकार तैयार रहना चाहिए।

यह सब विशेषतया अच्छे अनुस्मारक हैं; क्योंकि आजकल हम निरन्तर मीडिया की बरसात से प्रभावित रहते हैं जो हमारे लालच की आग में घी डालता रहता है कि कैसे हम आसानी से धनवान बन जाएं तथा हमारी तृष्णा को जबरन उकसाता रहता है, उन सब वस्तुओं के स्वामित्व के लिए जो अन्ततः तुच्छ, ओछी, महंगी तथा निरर्थक होती हैं। इस कारण कई लोग नादानी से खर्चा करते हैं तथा अत्यधिक कर्ज में डूब जाते हैं जिससे धन से सम्बन्धित कठिनाईयों का परिणाम सामने आता है। निःसंदेह यह घरेलू तथा दाम्पत्य जीवन की मुसीबतों का दिवाला निकालने का और अपराध तक का कारण बन सकता है।

अतः, जबकि बुद्ध की धन-संचालन की सलाह साधारण तथा पारम्परिक लग सकती है, इसको मार्गदर्शन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है और यदि इसका अनुसरण किया जाए तो इसका प्रचुर प्रभाव कई लोगों की माली हालत सुधारने में होगा। अन्ततः यह स्थिर सम्पनता तथा अपने और परिवार को सुखी जीवन की ओर अग्रसर करेगा।



टिप्पणी :

शिक्षा का यह भाग सिगालोवाद सुक्त में बाद में आगे आयेगा। इस को यहाँ इस लिए रखा गया है ताकि सम्पत्ति सम्बन्धित शिक्षा (भाग 2 तथा 3) पढ़ने की सुविधा के लिए इकट्ठे आ सकें।



3. धन सम्पत्ति संरक्षण

सम्पत्तिनाश के छः कारणों से विरत रहना

शराब तथा नशीले पदार्थों का व्यसन जो स्व-संयम का नाश करता है

खर्चीलापन तथा धन की तत्काल हानि
अधिक झगड़ा तथा कलह
अस्वस्थता तथा रूग्णता की प्रवृत्ति
संदिग्ध तथा हीन छवि
लज्जाहीन व्यवहार तथा अशोभनीय प्रदर्शन
मूर्खता तथा विवेकहीनता

आवारागर्दी तथा देर रात बाहर रहना

खतरों की संभावना
जीवन साथी तथा बच्चों के लिए संभावित जोखिम
घर बचावरहित तथा असुरक्षित
अपराधी होने की शंका
अफवाहों तथा चर्चाओं का विषय
कई मुसीबतों का सामना

अक्सर की मौज-मस्ती तथा मनोरंजन की लत

अवकाश तथा मनोरंजन संयम से ठीक है । परन्तु मौज-मस्ती तथा मनोरंजन की लत वाला व्यक्ति सदा निम्न प्रकार की सोच रखेगा जो परिवार तथा व्यवसाय के लिए हानिकारक है :

“नृत्य कहाँ चल रहा है ?”

“गायन कहाँ चल रहा है ?”

“संगीत कहाँ चल रहा है ?”

“चलचित्रों में क्या चल रहा है ?”

“तमाशों में कौन-कौन है ?”

जुए की लत

विजेता नाराज़गी तथा घृणा के कारक बनते हैं ।
हारने वाले अपनी हानि पर दुःखी होते हैं, अपनी करनी पर पछताते हैं ।
बचत, मेहनत की कमाई तथा उत्तराधिकार नष्ट होते हैं ।
इनकी बात जनता में या न्यायालय में कम विश्वसनीय होती है ।
अपने सम्बन्धियों तथा मित्रों द्वारा हीन तथा तिरस्कृत माने जाते हैं ।
शादी-ब्याह के लिये उपयुक्त नहीं समझा जाता ।

बुरों की मित्रता

धूर्तों के साथ मित्रता तथा सम्बन्ध
पियक्कड़ों के साथ मित्रता तथा सम्बन्ध
नशेड़ियों के साथ मित्रता तथा सम्बन्ध
धोखेबाज़ों, जालसाजों के साथ मित्रता तथा सम्बन्ध
वंचक तथा गुंडों के साथ मित्रता तथा सम्बन्ध

प्रमाद तथा निठल्लापन

काम न करने के कई बहाने होना :

बहुत ठण्ड है

बहुत गर्मी है

बहुत देर हो गई

अभी जल्दी है

बहुत भूख लगी है

पेट अधिक भर गया है

कर्तव्य तथा जिम्मेदारी की अनदेखी होती है। व्यक्ति धन नहीं कमा पाता। अपना तथा परिवार का भरण-पोषण नहीं कर पाता। कोई भी विपुल धन तथा बचत शीघ्र ही क्षीण हो जाती है। इनमें से अधिकतर बातें स्वयं ही स्पष्ट हैं, परन्तु नशीले पदार्थों के विषय में खास तौर पर बात करनी चाहिए।

बुद्ध ने ऐसे पदार्थों के विरुद्ध कई बार राय दी है। इस प्रवचन में भी तथा अन्य विशेष शिक्षाओं में भी। आजकल यह बात खास तौर पर लागू होती है, जैसे कि हम कई लोगों को देखते हैं, चाहे गरीब हों या अमीर, नामी या अनजान, जो अपने आपको तथा दूसरों को शराब तथा असंवैधानिक ड्रग से अत्यन्त हानि पहुँचा रहे हैं।

तत्पश्चात्, अक्सर तथा अधिक मद्यपान प्रायः बहुत-सी खर्चीली तथा अक्सर अनैतिक एवं अस्वस्थ करतूतों से जुड़ा होता है जिससे आगे चलकर कई व्यक्तिगत स्वास्थ्य तथा धन सम्बन्धी कठिनाईयाँ बन जाती हैं। और नशे में गाड़ी चलाना तथा ड्रग का अवैध कारोबार आजकल समाज के अत्यधिक भयानक तथा विनाशक अपराधों की श्रेणी में है।

अपने धन तथा बचत का नाश करने के ये छः सुनिश्चित रास्ते हैं। इन करतूतों की लत से अपने लिए तथा समाज के लिए भी कई भयानक परिणाम होंगे। एक समझदार व्यक्ति अवश्य चाहेगा कि मेहनत की गाढ़ी कमाई को अवश्य संभाला जाए। इन छः करतूतों से बचकर धन की स्थिरता अवश्य निश्चित होगी।



सारांश

हालांकि 'अच्छे समय' के कई मित्र हो सकते हैं, तथा अन्य लोग जो ऊपर से मित्रता का दावा करते हैं, लेकिन एक सच्चा मित्र वही है जो मुसीबत के समय निकट बना रहे।

इन छः चीजों से कोई बर्बाद ही होगा :

देर तक सोना, व्यभिचार, वैर, लक्ष्यहीनता, नुकसानदेह मित्र, अत्यधिक कंजूसी।

कोई इसी जीवन में ही दुःखी नहीं रहेगा, वरन् अगले में भी होगा, यदि स्त्री या पुरुष के बुरे संगी-साथी हैं और वह बुराई में समय गंवाते हैं।

इन छः चीजों में लिप्त कोई भी स्त्री अथवा पुरुष विनष्ट ही होंगे :

जुआ तथा स्वच्छन्द सम्भोग, मद्यपान तथा नाच गाने में अति रूचि, दिन भर सोना, असमय दिशाविहीन आवारागर्दी, हानिकारक मित्रों की संगत, परम कंजूसी।

जो कोई आनन्द लेता है जुए में, मद्यपान में, व्यभिचार में, हीन जीवनयापन में तथा विवेकशील लोगों से बचने में, वह अवश्य ही नष्ट हो जाएगा।

जो कोई इधर पी उधर पी कर अपने आपको पियक्कड़ बनाता रहता है, जल्दी ही ऋण में डूब जाएगा, निर्धन हो जाएगा, बेघर हो जाएगा तथा अपना एवं परिवार की यशहानि करवाएगा अथवा करवाएगी।

देर तक सोने से कोई घर-परिवार का निर्वाह ठीक ढंग से नहीं कर सकता, रात होने पर उठना तथा हमेशा नशे में रहना।

जो कोई लगातार काम न करने के बहाने बनाता रहेगा तथा आधे अधूरे काम छोड़ेगा वह सफलता के कई अवसर खो देगा।

जो काम-काज की कठिनाईयों से अधिक परेशान नहीं होता, जो काम न करने के बहाने नहीं ढूँढ़ता, जो अपनी जिम्मेदारी निभाता है वह सदा आनन्द मनाएगा अथवा मनाएगी।

4. झूठे मित्र और सच्चे मित्र

झूठे मित्र

वे जो लेते हैं :

वे ले लेते हैं जो कुछ ले सकते हैं ।
वे थोड़ा देते हैं पर अधिक मांगते हैं ।
वे उचित कार्य केवल दिखावे के लिए करते हैं ।
वे अपने लाभ के लिए ही मित्र हैं ।

वे जो बातों से मोहते हैं :

वे गुजरे समय की अच्छी मित्रता का दावा करते हैं ।
वे भविष्य में अच्छे मित्र होने का दावा करते हैं ।
वे उदारता से लाभ उठाना चाहते हैं, पर खोखले शब्दों से ।
जब बुलाया जाता है वे कहते हैं, सहायता करने में असमर्थ हैं ।

वे जो चापलूस हैं :

वे गलत को भी सही बताते हैं ।
वे सही या गलत में उसी को सही बताते हैं, जिसमें उनका भी लाभ हो ।
वे आपके सामने आप का गुणगान करेंगे ।
वे आपके पीछे आपकी निन्दा करेंगे, जब आप आसपास न हों ।

वे जो बर्बाद करते हैं :

वे मद्यपान के साथी होते हैं ।
वे बिना सुप्रयोजन देर रात बाहर रहने के साथी होते हैं ।
वे बार-बार मनोरंजन के स्थानों पर जाने के साथी होते हैं ।
वे जुआ खेलने में साथी होते हैं ।

संक्षेप में :

मित्र जो लेने वाले हैं ।
मित्र जो बातों से लुभाते हैं ।
मित्र जो चापलूसी करते हैं ।
मित्र जो बर्बादी लाते हैं ।
बुद्धिमान जानेंगे कि यह चारों मित्र नहीं हैं, शत्रु हैं तथा इन से बचना चाहिए, जैसे कोई खतरनाक रास्ते से बचता है ।

सच्चे मित्र

जो सहायक साथी हैं :

वे बचाते हैं, जब आप असुरक्षित होते हैं ।
वे आपके सामान को बचाते हैं, जब आप असुरक्षित होते हैं ।
वे आपके साथ होते हैं, जब आप मुसीबत में होते हैं ।
वे आवश्यकता से अधिक देते हैं, जब आवश्यकता होती है ।

जो अच्छे-बुरे समय में सम रहते हैं :

वे आप पर विश्वास कर गुप्त बातें भी बताते हैं ।
वे विश्वास योग्य होते हैं, आपकी गुप्त बातों के लिए ।
वे आपको मुसीबत में छोड़ते नहीं ।
वे अपना जीवन तक आपके लिए दे सकते हैं ।

जो अच्छे सलाहकार हैं :

वे गलत काम में आपको संयमित करते हैं ।
वे अच्छे काम में आपको उत्साहित करते हैं ।
वे अश्रुत को सुनाते हैं ।
वे सही रास्ता दिखाते हैं तथा आध्यात्मिक साधना में साथी हाते हैं ।

जो करूणामय होते हैं :

वे आपके दुर्भाग्य में सहानुभूति दिखाते हैं ।
वे आपके सौभाग्य में आनन्दित होते हैं ।
वे दूसरों को आपके विरुद्ध बोलने से रोकते हैं ।
वे उनका अनुमोदन करते हैं, जो आपके लिए अच्छा बोलते हैं ।

संक्षेप में :

मित्र जो सहायता करते हैं ।
मित्र जो अच्छे-बुरे समय में साथ रहते हैं ।
मित्र जो अच्छी सलाह देते हैं ।
मित्र जो करूणावान हैं ।
बुद्धिमान जानेंगे कि यह चारों
सच्चे मित्र हैं तथा उनको खजाने की तरह संजोते हैं,
जैसे माँ अपने बच्चे को ।



बुद्ध के अनुसार, मित्रता एक मात्र कारण, विशेष-विशेष कारण है, जो व्यक्ति के जीवन की दिशा निर्धारित करती है । अच्छे प्रकार का मित्र सहायक हो सकता है उसका भी, जो अत्यधिक भटका हुआ है और उसे अच्छे की ओर परिवर्तित कर सकता है, जबकि गलत किस्म के दोस्त एक ईमानदार व्यक्ति का भी विनाश कर सकते हैं । अच्छे मित्र, विशेषतया कल्याण मित्र, आध्यात्मिक मित्र, एक दूसरे को ऊँचाईयों तक ले जा सकते हैं ।

बुद्ध दर्शाते हैं कि जैसे मित्र हम बनाते हैं, हम उन्हीं जैसे हो जाते हैं और यदि हम अनजाने में बुरे मित्रों के संग हो जाते हैं तो हमारा पतन अतिशीघ्र निश्चित है । बुरी संगत से बचना चाहिए, वह और बात है कि हम उनका साथ दें, मदद की तरह तथा सुधार के लिए । सच्चे मित्र दुर्लभ होते हैं, अतः उनको संजोना चाहिए ।

5. सम्बन्धों का संरक्षण

छः प्रकार के रिश्तों को बचाना :

छः दिशाएं

जब हम अपना जीवन आरम्भ करते हैं, हम बच्चे होते हैं जिनका घर में लालन पालन होता है । पूर्व दिशा बच्चों को तथा माता-पिता को दर्शाती है ।

युवा होने पर जीवन का अगला धरातल हम विद्यालय में बिताते हैं । दक्षिण दिशा विद्यार्थी तथा अध्यापकों को दर्शाती है ।

युवा-वयस्क होने पर परिवार का आरम्भ होता है । पश्चिम दिशा पति-पत्नी का प्रतीक है ।

आगे बढ़कर, हमारा सामाजिक जीवन आरम्भ होता है । उत्तर दिशा मित्र तथा सहयोगी दर्शाती है ।

कमाऊ होने पर हमारा व्यापार तथा अन्य कार्य होता है । नीचे की दिशा मालिकों, नियोक्ता तथा कर्मचारियों का प्रतीक है ।

जब हम जीवन में अधिक परिपक्व होते हैं, हम उच्च आदर्श ढूँढ़ते हैं । ऊपर की दिशा साधारण लोगों को तथा आध्यात्मिक गुरुओं को दर्शाती है ।



बुद्ध ने सुस्पष्टता से तथा कल्पना संपन्नता से रिश्तों के भिन्न समूहों को चित्रित किया है छः दिशाओं के द्वारा, जिनको बचाना चाहिए । हर दिशा एक सामाजिक रिश्ते को दिखाती है, जिस में एक की दूसरे के साथ आदान-प्रदान की ज़िम्मेदारी है ।

चारों प्रमुख दिशाओं की सांकेतिकता को आगे प्रयोग करें, हर दिशा जीवन का अलग धरातल प्रगट करती है जिस पर हर कोई, बचपन से वयस्क होने तक,

गुज़रता है। तदोपरान्त पाताल या नीचे की दिशा दर्शाती है आजीविका कमाने को, जो सम्पूर्णतया जीवन की जमीन से जुड़ी वास्तविकता है तथा आकाश या ऊपर की दिशा उच्च आध्यात्मिक जीवन दिखलाती है।

बुद्ध धम्म में, सम्बन्ध परस्पर आदान-प्रदान पर आधारित दो तरफा होने चाहिए, न कि एक तरफा। उदारता की भावना तथा विचार संपन्न व्यवहार आवश्यक है। इस प्रकार, हर व्यक्ति के दूसरों की सहायता करने से तथा ख़्याल रखने से, बदले में हर व्यक्ति इस सकारात्मक व्यवहार से लाभान्वित होता है। इस प्रकार से समाज के सब रिश्ते-नाते सुरक्षित रहते हैं तथा जनता का कल्याण सुरक्षित रहता है।



पूर्व की सुरक्षा - बच्चे तथा माता-पिता

बच्चों को माता-पिता के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए :

आवश्यकतानुसार माँ-बाप को सहारा देकर [1]

उनके व्यवसाय में सहायता देकर, काम से या और किसी उचित तरीकों से परिवार को संगठित रखकर

उत्तरदायित्व के योग्य बनकर [2]

दिवंगत माँ-बाप या सम्बन्धियों की यादगार में दान आदि करके।

माँ-बाप को बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए :

अपने बच्चों को गलत काम से रोक कर

सही काम में उनका उत्साह बढ़ा कर [3]

उनको शिल्प-व्यवसाय सिखा कर [4]

विवाह योग्य साथी के चयन में सहायता अथवा परामर्श दे कर।

उचित समय पर उनको उत्तराधिकार सौंप कर [5]

जब माँ-बाप तथा बच्चे एक दूसरे के साथ इस प्रकार व्यवहार करेंगे, पूर्व दिशा सुरक्षित रहेगी तथा परिवार शान्त बनेगा और सुरक्षित रहेगा।

दक्षिण की सुरक्षा - विद्यार्थी तथा अध्यापक

विद्यार्थियों को अध्यापकों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए :

अपने अध्यापकों के प्रति आदरवान होकर

उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर

व्यक्तिगत सेवा से

सीखने में मन लगा कर

जब सिखाया जा रहा हो तो सावधानी से ध्यान देकर

अध्यापकों को विद्यार्थियों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए :

अपने विद्यार्थियों को स्व-संयम उन्नत करने का अभ्यास करा कर

उनको पढ़ाकर जिससे वे पाठ को भली प्रकार समझ सकें

उनको अच्छी-सन्तुलित शिक्षा प्रदान कर

मित्रों व सम्बन्धियों में उनका परिचय करा कर [6]

उनकी सुरक्षा तथा भलाई में सहायता करके

जब अध्यापक तथा विद्यार्थी एक दूसरे के साथ ऐसा व्यवहार रखेंगे, तो

दक्षिण दिशा सुरक्षित रहेगी तथा विद्यालय शान्त तथा सुरक्षित होगा।

पश्चिम की सुरक्षा - पति तथा पत्नी

पति को अपनी पत्नी के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए :

पत्नी के साथ विनम्र व्यवहार से

उसको मान देकर [7]

उसके प्रति वफ़ादार रह कर

घर का स्वामित्व उसके साथ बांट कर

उसको आभूषण तथा उपहार देकर [8]

पत्नी को पति के साथ कैसे बरतना चाहिए :

घर को ठीक से संचालित करके
ससुराल वालों की खातिर तथा घरेलू नौकरों से भला व्यवहार कर [9]
पति से वफ़ादार रह कर
परिवार की सम्पत्ति के संरक्षण में सहायता कर
अपने कर्तव्यों में निपुण तथा मेहनती रह कर
जब पति तथा पत्नी एक दूसरे से इस प्रकार व्यवहार करेंगे, पश्चिम दिशा
सुरक्षित रहेगी तथा घर-परिवार शान्त तथा सुरक्षित बनेगा ।

उत्तर की सुरक्षा - मित्र और सहयोगी-साथी

मित्रों तथा सहयोगियों से कैसे बर्ताव किया जाए :

उदार होकर तथा सहयोग के लिये तत्पर रह कर
प्रिय वाणी से
सहयोगी बनकर
पक्षपात रहित तथा पूर्वाग्रह रहित रहकर
सहृदय तथा ईमानदार रह कर

मित्र-सहयोगी आपस में कैसे व्यवहार करें :

जब वे असुरक्षित हों तो उनका ध्यान रखकर
जब वे असुरक्षित हों, उनकी सम्पत्ति का ध्यान रखकर
भय तथा मुसीबत के समय आश्रय बनकर
आवश्यकता के समय उनको न त्याग कर
उनके परिवार को आदर दे तथा ध्यान रखकर
जब मित्र सहयोगी इस प्रकार बर्ताव करेंगे, उत्तर दिशा सुरक्षित रहेगी तथा
समाज शान्त और सुरक्षित रहेगा ।

पाताल दिशा की सुरक्षा - स्वामी तथा कर्मचारी

स्वामियों को कैसे कर्मचारियों से बरतना चाहिए :

अपने कर्मचारियों को उनके योग्यतानुसार काम देकर
उनके काम का उचित मेहनताना देकर
उनके स्वास्थ्य का ध्यान रख कर
उनको विशेषरूप से पुरस्कृत कर [11]
उनको छुट्टी तथा अवकाश प्रदान कर [12]

कर्मचारियों को स्वामी के साथ कैसे बरतना चाहिए :

काम के लिए जल्दी पहुंच कर
आवश्यकतानुसार देर तक काम कर
जो दिया जाता है, केवल वही लेकर
अपना कार्य अच्छा कर
अपने स्वामी की अच्छी इज़्जत का ध्यान कर तथा कीर्ति फैला कर

आकाश दिशा की सुरक्षा - आध्यात्मिक गुरु तथा उपासक

उपासकों को अपने गुरु के साथ कैसे बरतना चाहिए :

विनम्र कार्यों से
विनम्र बातचीत से
विनम्र विचारों से [13]
अपना घर उनके लिए खुला रखकर
उनको भौतिक आवश्यकताएं प्रदान कर [14]

आध्यात्मिक गुरुओं को उपासकों, अनुयायियों के साथ कैसे बरतना चाहिए :

उन्हें गलत काम से रोककर

उन्हें अच्छे काम के लिये प्रोत्साहित कर

उनके प्रति करुणा भाव रखकर

अश्रुत को सिखाकर

श्रुत को दृढ़ कर

उनको रास्ता दिखा कर तथा आध्यात्मिक साधना में मार्गदर्शन कर [15]

जब आध्यात्मिक गुरु तथा उपासक एक दूसरे के साथ इस प्रकार व्यवहार करते हैं तो आकाश दिशा सुरक्षित होती है तथा आध्यात्मिक संस्थान शांत व सुरक्षित होते हैं ।

माता-पिता पूर्व हैं ।

गुरुगण दक्षिण हैं ।

वैवाहिक साथी (पति/पत्नी) पश्चिम हैं ।

मित्र तथा सहयोगी उत्तर हैं ।

कर्मचारी तथा स्वामी पाताल हैं ।

आध्यात्मिक गुरु आकाश हैं ।

इन दिशाओं का सम्मान होना चाहिए उसके द्वारा

जो अच्छे जीवन यापन के योग्य होंगे ।



टिप्पणियाँ

[1] यह बच्चों के लिए अपने माता-पिता के प्रति विशेष आधारभूत कर्तव्य हैं । उन्होंने जो बच्चों के लालन-पालन में तन-मन-धन से मुश्किलें उठाई हैं, उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उन्हें अपने माँ-बाप को जैसे भी

आवश्यक हो सन्तुष्ट रखना चाहिए तथा बुढ़ापे में उन्हें संभालना चाहिए । बुढ़ के अनुसार एकमात्र साधन, जिसके द्वारा हम अपने माँ-बाप से ऋणमुक्त हो सकते हैं, वह है उनको धम्म सिखाना तथा धम्म का अनुसरण करना ।

[2] माँ-बाप बच्चों के प्रथम गुरु होते हैं, उनको सक्रिय मार्ग दर्शन करना चाहिए, केवल बुराईयों से बचना ही नहीं वरन् अच्छाईयों के लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिए । ऐसा करने के लिए सर्वोत्तम तरीका है कि वे अपने आप अच्छे बनें तथा अपने बच्चों के लिए आदर्श बनें ।

[3] इस का अर्थ होगा सद्व्यवहार, निष्ठा तथा बच्चों के द्वारा माँ-बाप के प्रति किया जा सकने वाला सर्वोत्तम, जो वे कर सकते हों, उनके लिए जिन्होंने कठिन परिश्रम किया तथा उनको उत्तराधिकार दिया, थोड़ा या बहुत जो भी रहा हो ।

[4] आजकल के प्रसंग में इस कर्तव्य का अर्थ है कि वे अपने बच्चों को कम से कम प्राथमिक शिक्षा अवश्य दिलवाएं । बौद्ध माँ-बाप कुछ बुद्ध शिक्षा भी सम्मिलित करें । आजकल कई बौद्ध माँ-बाप जाने-अनजाने इस जिम्मेदारी की अनदेखी कर जाते हैं, अधिकांश इस कारण कि उनको स्वयं इस विषय में अधिक ज्ञान नहीं है । फिर भी, सब बौद्ध माँ-बाप को इस अतिआवश्यक जिम्मेदारी की अनदेखी नहीं करनी चाहिए, अपने बच्चों को सही मार्ग पर लगाने में, जितनी भी जल्दी हो सके लगा देना चाहिये ।

[5] इस के अति व्यवहारिक गम्भीर निहितार्थ है, विशेषतया आजकल, बहुत से लोग मृत्यु के लिए ठीक से तैयार नहीं होते तथा अस्पष्ट वसीहत छोड़ जाते हैं, यहाँ तक कि वसीहत ही नहीं करते । अक्सर पीछे का परिवार, इसके परिणामस्वरूप मृतक की सम्पत्ति के लिए, आपस में अत्यन्त दुश्मनी तथा वैर के साथ झगड़ते हैं । माँ-बाप को चाहिए कि वे जितनी अधिक उत्तराधिकार सम्पत्ति अपने बच्चों के नाम करें, अपनी जीतेजी, ताकि ऐसे झगड़े न हों तथा सम्पत्ति की हस्तांतरण क्रिया आसानी से हो जाए ।

[6] इसका अर्थ है कि अध्यापक गुरु अपने शिष्यों को अपने सम्पर्कों से अवगत करा कर उनकी मदद करें। ऐसा करने से विद्यार्थी सही लोगों को जान पाएंगे, जब वे अपनी शिक्षा की प्रगति करेंगे या जब वे नौकरी ढूँढ़ेंगे। बुद्ध 2500 वर्ष पूर्व भी सामाजिक तान-बाने (सोशल नेटवर्किंग) के महत्व को जानते थे।

[7] एक सभ्यता में जहाँ पुरुष अत्यधिक प्रभावशाली था तथा स्त्री दूसरे दर्जे पर थी या इससे भी गौण, बुद्ध ने नारी के प्रति मानसिकता तथा रवैये में बदलाव को प्रोत्साहन दिया तथा जीवन साथियों के बीच समानता को बढ़ावा दिया। यह उस समय अच्छी सलाह थी, जैसे कि अब है कि पति को पत्नी के प्रति सदा सम्मान तथा आदर का बर्ताव रखना चाहिए ताकि सम्बन्ध प्रेम भरा तथा टिकाऊ बना रहे।

[8] पुरातन भारत में जब कोई बैंक न थे, लोग अक्सर अपनी बचत तथा सम्पत्ति आभूषणों के रूप में रखते थे। यह आभूषण व्यक्ति स्वयं पहनते थे और यदि पति की मृत्यु हो जाए तो पत्नी के पास अक्सर यही बचत था। आजकल इसे यूँ समझना चाहिए कि पति की प्रचुर जीवन बीमा सुरक्षा होना चाहिए, बच्चों तथा पत्नी के लिए, असंभावित बुरी-बीमारी या मृत्यु की दशा में। इस अति व्यवहारिक कारण के अतिरिक्त हर पत्नी समय-समय पर पति की भेंट तथा आभूषणों से लाभान्वित रहती है।

[9] घरेलू नौकरों में घर की नौकरानियाँ भी सम्मिलित हैं। आजकल यह सलाह कितनी महत्वपूर्ण है, जैसे कि हम देखते हैं बहुत गृहणियों को नौकरानी के साथ दुर्वहार के कारण, न्यायालय द्वारा बुलावा आता है, परिणाम, उन के अपने परिवार की निन्दा तथा उन्हें कठिनाई होती है।

[10] पत्नी का पति के प्रति कर्तव्य बनता है कि मेहनत की कमाई को अधिक न खर्चे या उजाड़े। उनको बुद्धिमता से खर्चा करना चाहिए और

यथासम्भव बचत करने में सहायता करनी चाहिए ताकि परिवार की संपत्ति का संरक्षण हो। पुनः यह एक और उदाहरण है बुद्ध की व्यवहारिक तथा कालातीत सलाह का, जो उनके समय भी तर्कसंगत थी और हमारे समय भी है।

[11] यह सचमुच एक हैरत की बात है कि बुद्ध ने यह बिन्दु यहाँ सम्मिलित किए, क्योंकि वे 2500 वर्ष पूर्व बने थे, जब दास प्रथा का प्रचलन था, काम करने वालों का शोषण किया जाता था तथा न्यूनतम मजदूरी या काम करने की आधारभूत सुविधाओं जैसी कोई वस्तु अथवा नियम नहीं थे। अभी पिछली सदी में ही कामगार यूनियनों ने कामगारों के अधिकार प्राप्त किए हैं।

[13] इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि विनम्र कार्य, बोलचाल एवं विचार केवल आध्यात्मिक गुरुओं के प्रति प्रयोग किए जाएं। यह समुचित कर्म सब प्राणियों के प्रति कार्यान्वित करें तो सत्यतः अपने गुरुओं का ऋण भार ही उतारा जाता है, जिसके लिए उन्होंने इतना प्रयास किया, वही शिक्षा का प्रयोग हो, जिससे स्वयं भी लाभान्वित हों तथा अन्य भी।

[14] इस का अर्थ यूँ लिया जा सकता है कि उपासक सभी गुणवान आध्यात्मिक गुरुओं को सहयोग दें, आमतौर पर, और मात्र एक ही विशेष आध्यात्मिक गुरु तथा भिक्षु के प्रति अत्यधिक भक्ति भाव न रखें। यदि गुरु ईमानदार है और अच्छी शिक्षा प्रदान करता है तो सब ठीक है। फिर भी, भटक जाने का भय रहता है यदि पक्षपात से कोई अशुद्ध तथा अपूर्ण शिक्षाओं से अन्धा हो जाए, यदि ऐसे रूचिकर गुरु या भिक्षु को कुछ हो जाता है तो मूल्यवान तथा आवश्यक आध्यात्मिक मार्ग दर्शन के विषय में उपासक असाधारण भक्ति के कारण पतन को प्राप्त हो सकता है।

[15] बौद्ध संदर्भ में इसका अर्थ होगा मेत्ता, करुणा, मुदिता, उपेक्खा, ध्यान तथा अन्य उच्च शिक्षाओं का अभ्यास।

6. सफलता के लिए गुण

सफल व्यक्तियों के गुण

बुद्धिमान तथा शीलवान

सज्जन तथा वाक्पटु

विनम्र तथा सहज

ऐसा व्यक्ति सफलता प्राप्त करेगा ।

वीर्यवान तथा अप्रमादी

मुश्किलों में स्थिरचित्त

सदाचारी तथा तीव्र बुद्धि

ऐसा व्यक्ति सफलता प्राप्त करेगा ।

मिलनसार तथा मित्रतापूर्ण

बातचीत में विनम्र तथा निःस्वार्थी

मार्गदर्शक, गुरु तथा नायक

ऐसा व्यक्ति सफलता प्राप्त करेगा ।



गुण, जो व्यक्ति के चरित्र से सम्बन्धित हैं, प्राथमिक हैं तथा शील वह आधारशिला है जिस पर बाकी सब कुछ टिकता है । इस प्रकार व्यक्ति को सच्ची तथा स्थायी सफलता के लिए प्रज्ञावान तथा शीलवान होना आवश्यक है । इसका अर्थ है कि व्यक्ति न केवल कुशल तथा अकुशल का भेद करने में समर्थ हो वरन् वह सब यथार्थ तथा करने में भी सक्षम हो जो कुशल है तथा बच सके उस से जो अकुशल है । व्यक्ति सज्जन भी हो तथा कर्कष न हो, दूसरों को शब्दों से चोट न पहुँचाता हो तथा विनम्र और सौम्य तथा आनन्दकर हो ।

तत्पश्चात् आते हैं कामकाजी जीवन के लिये आवश्यक गुण । आजीविका कमाने के लिए या व्यापार में कठोर मेहनत की स्वेच्छा का कोई विकल्प नहीं है । कठिनाईयों तथा मुसीबतों के होते हुए भी स्थिर रहना तथा कठिनाईयों के सम्मुख अपनी सत्य निष्ठा बरकरार रखना भी आवश्यक तत्व हैं । सुव्यवहार होना तथा तरक्की के लिए नए आयामों में दिलचस्पी रखना व्यापार या कामकाज की सफलता के लिए अन्य आवश्यक गुण हैं ।

अन्ततः व्यक्ति को खुला तथा मित्रवत होना चाहिए न कि तटस्थ तथा घमण्डी । व्यक्ति को सुमधुर बात करनी चाहिए तथा स्वयं अच्छी मिसाल कायम करके दूसरों को सिखाना चाहिए तथा अपने ज्ञान और अनुभव की सहभागिता के लिए तत्पर रहना चाहिए । अपनी उपलब्धि के मार्ग पर दूसरों को अग्रसर करने से किसी भी व्यक्ति को पूर्ण तथा परम सफलता मिलेगी ।



सफल नायकों के गुण

उदारता, सुमधुर वाणी

दूसरों की सहायता करने वाला

सबके साथ ईमानदार बर्ताव

हर जगह तथा हर प्रकरण की मांग के अनुसार ।

यह चार सफलता की कुन्जियाँ संसार को चलाती हैं, जैसे चलती गाड़ी के पहिये की धुरी की कील । यदि यह चार सफलता की कुन्जियाँ नहीं हैं तो किसी माँ या बाप को अपने बच्चों का आदर तथा सम्मान नहीं मिलेगा ।

बुद्धिमान लोग सफलता की इन चार कुंजियों पर सम्यक मनन करते हैं ।
इसलिए वे महानता तथा गुणगान को उपलब्ध होते हैं जिसके वे हकदार हैं ।



किसी समाज की सफलता के लिए सकारात्मक गुणों के नायकों की आवश्यकता होती है। ये मार्गदर्शक चाहे व्यवसाय में हों या सरकार में, उदार होने चाहिए तथा अत्यधिक लालच से मुक्त । यदि नहीं, तो वे अधीन हो जाएंगे भ्रष्टाचार के, जनता के संसाधनों में हेरा-फेरी के तथा अपनी ही कंपनी या जनता की चोरी के । भ्रष्टाचार, यदि रोका न गया, तो किसी भी समाज को तथा अन्ततः पूरे समाज को अवश्यमेव अधोगत चक्र में डाल देगा और विकट संकट में धकेल देगा ।

अच्छे नेताओं को चाहिए कि वे निःस्वार्थ हों, करूणावान हों तथा तत्पर हों, समाज के धन संसाधनों द्वारा ज़रूरतमन्द तथा सुविधाविहीन लोगों की मदद के लिए, जिससे वे सुविधाविहीन अपना उद्धार कर सकें । इस प्रकार समाज उन्नत होगा तथा ऊंचाईयों की ओर अग्रसर होगा ।

नेताओं को बातचीत की शैली में कुशल होना चाहिये तथा निश्चित ही किसी को अपमानित अथवा नीचा दिखाने वाली भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिये; क्योंकि इससे वैर, प्रतिशोध व वैमनस्य पैदा होता है। नेता लोग कभी अपने पद का नाजायज़ फायदा न उठाएँ तथा हर दशा में नियमों का पालन करें। अन्ततः वे न्याय और समानता पर विशेष बल दें, चाहे कोई भी हो, अमीर या गरीब किसी भी धर्म, जाति या पद वाला ।

सारांश में समाज में नेताओं को उदार, हंसमुख, सहायता करने वाला तथा पक्षपातरहित होना चाहिए, उनका लक्ष्य होना चाहिए सबको खुशहाल, आनन्दित तथा समृद्ध देखने का। यह गुण समाज को एक सूत्र में बांधते हैं,

जिसके बिना वह विकृति तथा पतन को प्राप्त होगा । यदि उनमें इनमें से कोई भी गुण कम होगा तो समाज के नेताओं को युवा पीढ़ी से आदर नहीं मिलेगा ।

नेता, जो इन गुणों की आवश्यकता को समझते हैं तथा पालन करते हैं, इस प्रकार, महानता, यश और प्रशंसा प्राप्त करेंगे, क्योंकि वे समाज को स्थिरता, संपन्नता तथा विकास की ओर ले जाते हैं ।



संदर्भ :

An Approach to Buddhist Social Philosophy -
Ven. P. Gnanarama

A Constitution for Living - Bhikkhu P.A. Payutto

Buddhism for Every Man - W.G. Weeraratne

Moral and Ethical Conduct of a Buddhist - Dr. K. Sri
Dhamananda

Sigalovada Sutta - Ven. P. Pameratana

Sigalovada Sutta - Piya Tan

Sigalovada Sutta - Narada Thera

Sigalovada Sutta - John Kelly, Sue Sawyer and
Victoria Yareham

The Charter of an Ideal Society - Ven. P. Gnanarama

The Sigalovada in Pictures - Ven K. Dhammasiri

The Way to Social Harmony - Ven. U. Pyinnyathiha





धन-सम्पत्ति कैसे अर्जित की जाए

ब्यग्घपज्ज सुत्त

सम्पत्ति कैसे अर्जित की जाए ब्यग्घपज्ज सुत्त पर आधारित है, यह “दीघजानु सुत्त” के नाम से भी जाना जाता है। यह उन परिस्थितियों का वर्णन करता है जो उपासकों के कल्याण का अभिवर्धन करती हैं।

इस सुत्त के अनुसार एक उपासक, जिस का नाम दीघजानु था, बुद्ध के पास आया तो उन से सलाह पूछी। दीघजानु ने कहा कि एक साधारण मनुष्य की तरह, जिसकी पत्नी तथा बच्चे हैं, वह और उसका परिवार संसारिक सुखों का आनन्द मनाता है, जैसे कि अच्छे कपड़े, सुगन्धित इत्र तथा कीमती चाँदी-सोने के आभूषण। उसने बुद्ध से पूछा कि उसको शिक्षा दें कि वह कैसे इस जीवन में भी तथा आने वाले जीवनों में भी निरन्तर समृद्धि तथा प्रसन्नता सुनिश्चित कर सकता है।

तब बुद्ध ने दीघजानु को यह प्रवचन देना आरम्भ किया और ऐसा करने में उन्होंने एक बड़े तालाब की उपमा का प्रयोग किया जिस में कि वर्षा का पानी एकत्रित होता है। उन्होंने बताया कि कैसे सम्पत्ति, भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों, उसी प्रकार किसी के भी द्वारा एकत्रित की जा सकती हैं, जिसके पास उचित गुण हों।

1. भौतिक सम्पत्ति तथा उन्नति

चार गुण जो भौतिक सम्पत्ति तथा उन्नति पैदा करते हैं।

निरन्तर कोशिश

किसी भी साधन से कोई आजीविका अर्जित करने में लगता है, वह स्त्री या

पुरुष मेहनती होना चाहिए, आलसी न होना चाहिए । उसे समझना चाहिए कि क्या करना है, उसे सुचारू रूप से सीखे, उसे अच्छी तरह करे तथा जहां उचित हो दूसरों को भी काम सौंपे ।

उचित देख-रेख

जो सम्पत्ति विधिवत तथा अधिकार पूर्वक अर्जित की गई है, उसकी देख-रेख ठीक ढंग से होनी चाहिए । सम्पत्ति को धोखा-धड़ी तथा हेरा-फेरी से बचाना चाहिए तथा उचित प्रबन्धन करना चाहिए ताकि अनुचित करों से और सरकार के हस्तांतरण से बचा जा सके । अपने स्वामित्व को चोरी तथा विनाश से भली प्रकार सुरक्षित रखना चाहिए । परिवार के गैरजिम्मेदार सदस्यों द्वारा सम्पत्ति को लुटाने न देना चाहिए ।

अच्छी संगत

अच्छे किस्म के मित्रों की संगत रखनी चाहिए । वे बूढ़े हैं या युवा इस बात का कोई महत्व नहीं है, यदि वे शीलवान, परोपकारी तथा बुद्धिमान और आध्यात्मिक हैं । इस प्रकार वह सकारात्मक रूप से प्रभावित होगा अथवा होगी तथा सही जीवन यापन होगा ।

सम्यक आजीविका

व्यक्ति को अपनी आय तथा व्यय के प्रति सचेत रहना चाहिए तथा अपनी सीमा में रहना चाहिए । न तो अधिक खर्चीला होना चाहिए, न ही कंजूस तथा सुनिश्चित करना चाहिए कि आय, व्यय से अधिक रहे, न कि इसका उल्टा । जो कोई अपने साधनों को परे जाता है, कई कठिनाइयों में पड़ेगा तथा जल्दी ही विनष्ट हो जाएगा । इसके विपरीत एक कंजूस, जो अपनी सम्पत्ति का गुप्त संचय करता है, वह सुख से नहीं रहेगा तथा दुःखद अन्त को प्राप्त होगा ।

भौतिक सम्पत्ति तथा प्रगति की हानि वाले चार कारण

अत्यधिक मौज-मस्ती तथा यौन-स्वच्छन्दता
मदिरापान तथा नशे की लत
जुए की लत
बुरे लोगों की संगत

भौतिक लाभ तथा प्रगति को लाने वाले चार कारण

मौज-मस्ती तथा स्वच्छन्दता में आत्मसंयम
शराब तथा अन्य नशे से आत्मसंयम
जुए से आत्मसंयम
अच्छे लोगों की संगत

एक बड़े तालाब की कल्पना करें, जिसमें चार ओर से पानी भरता है तथा चार ओर से निकलता है । चार प्रवेश चार कारण हैं लाभ करने वाले तथा चार निकास हैं हानि करने वाले ।

यदि प्रवेश खुले रखे जायें तथा निकास बन्द तो पानी की उपलब्धता बारिश न होने पर भी कम नहीं होगी ।

उसी विशाल तालाब के यदि प्रवेश खुले रहें तथा निकास बन्द तो वर्षा होने पर जल स्तर अवश्य बढ़ेगा ।

अतः हमेशा हानि के चार कारणों से बचें तथा लाभ के चार कारणों के अनुसार रहें ।

2. आध्यात्मिक सम्पत्ति तथा प्रगति

चार गुण जो आने वाले जन्मों में सुख तथा कल्याण सुनिश्चित करते हैं ।

श्रद्धा

यह बुद्ध में तथा उनकी शिक्षा में विश्वास है। यह अन्धभक्ति नहीं है वरन् विश्वासयुक्त श्रद्धा है, जो ज्ञान तथा समझ-बूझ पर आधारित है।

शील

यह विरत रहना है प्राणी वध से, चोरी, यौन मिथ्याचार से, झूठ तथा नशे से, जो आत्मसंयम का नाश करता है।

उदारता

यह धन लोलुपता से मुक्ति है, उदात्त होना, परोपकारी होना। ज़रूरतमंद को मदद करने से सुख प्राप्त होता है, दान तथा भिक्षादि देने से आनन्द मिलता है।

प्रज्ञा

यह अस्तित्व की अनित्यता का स्वानुभूत ज्ञान है, यह कि जो कुछ सृजित होने वाला है, वह अन्ततः विनाश को भी प्राप्त होगा। यह एक समझ है, जो स्थायी शान्ति तथा सुख प्रदान करती है।

संक्षेप में

अपने काम में मेहनत तथा कार्य कुशलता,
अपनी सम्पत्ति का सुप्रबन्ध,
संतुलित जीवन जीना,
जो संजोया है, उसको बचाना।

आध्यात्मिक आत्मविश्वास एवं शीलों की सघनता से, उदारता और लोलुपविहीनता से व्यक्ति सदा प्रयत्नशील रहता है, भावी जन्मों के सुख के लिये।

आध्यात्मिक विश्वास सम्पन्न व्यक्ति के लिए, बुद्ध द्वारा उपदेशित आठ गुण

हैं, जो वर्तमान तथा भावी जन्मों में सुख का मार्ग प्रशस्त करते हैं तथा पुण्य और परोपकार की वृद्धि करते हैं।



भौतिक सम्पत्ति तथा उन्नति

इस सबका निचोड़ है कुछ काम करना तथा अच्छी तरह करना। कोई जादू के गुर, प्रार्थनाएं, रीति-रिवाज़, ताबीज़-गंडा नहीं है, जिससे सम्पत्ति आती है तथा बुद्ध ने कभी नहीं कहा कि उन में विश्वास करने से कोई भौतिक फलों की प्राप्ति होगी। कठिन मेहनत, सावधानी तथा बुद्धिमत्ता से पूर्ण कार्य सफलता के प्रमुख गुण हैं।

सफलता के लिए अन्य आवश्यक गुण भी महत्त्वपूर्ण सहायक बातें हैं। उदाहरणार्थ, भौतिक समृद्धि के क्रमिक विकास के लिए जो कमाया हुआ है, उसके प्रति सावधानी और रख-रखाव करना अतिआवश्यक है। जो कुछ इतने कष्ट से अर्जित किया जाता है, उसको इतनी आसानी से गवांन नहीं चाहिए।

दूसरा अति आवश्यक निर्णायक बिन्दु है हमारी मित्रता। इसकी चेतावनी बुद्ध द्वारा बार-बार दी जाती है। ग़लत संगत या अनैतिक किस्म के मित्र तथा साथी विनाश की ओर अग्रसर कर सकते हैं, क्योंकि वे प्रोत्साहित कर सकते हैं पियक्कड़पना, जुआ, अविवेकपूर्ण यौनाचार, बेईमानी तथा अन्य बुराईयों की ओर। यदि हम असावधानी से या बारंबार ग़लत लोगों से सांठगांठ रखेंगे तो स्थायी और प्रचुर धन कमाने की बात लगभग रह ही न जाएगी।

देखने में कुछ कम खतरनाक हमारे ऐसे मित्र हैं, जो हमारे भौतिकतावादी समाज में अधिक धन सम्पत्ति हथियाने के लिए लोलुपता तथा दबाव का अधिकाधिक वातावरण पैदा करते हैं। जबकि आवश्यक नहीं कि यह बुरी बात हो, यदि ऐसा धन बुद्धिमानी पूर्वक प्रयोग किया जाता है, परन्तु भय यह है कि कोई इस अन्तहीन भोग विलास के अधीन हो जाए तथा किसी भी प्रकार के

आध्यात्मिक विकास की वह अनदेखी ही कर दे । इससे भी अधिक भयावह दबाव है, खर्चीले जीवनयापन को बनाए रखने का, ऐसी जीवन शैली बनाए रखने के लिए अब कोई भी रास्ता अपनाया जाता है, चाहे नियम विरुद्ध, असंवैधानिक या कि अपराधमय ही क्यों न हो ।

अन्तिम सहयोगी बात बस साधारण समझ-बूझ है, जो है कि अपनी आय के अनुसार ही रहना । यह कहने को आसान है पर कठिन है एक ऐसे समाज में जहां दिखाऊ भोग, शान-शौकत, को मान्यता दी जाती है, बल्कि, अक्सर बढ़ावा भी दिया जाता है, और यह बात भी विरुद्ध ही पड़ती है कि धन-संस्थान, नित्य क्रम से, कई प्रकार की आसान ऋण योजनाएं प्रस्तुत करते रहते हैं कि लोग खर्चीले जीवनयापन में फंसे रहें ।

हमें सदा अपने को याद कराने का प्रयास करना चाहिए कि सारपूर्ण बात वह कंपनी की मुहर नहीं है जो हमारे भौतिक सामानों पर लगी है वरन् हमारे भीतर की गुणवत्ता है, जिसके हम धनी हैं ।

स्वच्छन्द यौनाचार, जुआ, अनावश्यक खाना-पीना यही लगता है कि समाज आजकल इसी को बहुत कुछ मान्य लक्षण समझ बैठा है । पुनः, सही मित्र होने से हमको इन अकुशल कृत्यों से साफ बचने में सहायता मिलेगी तथा इन सब छुपे खड्डों से बच निकलने के लिए काफी आत्मसंयम भी होना चाहिए ।

आध्यात्मिक सम्पत्ति तथा प्रगति

फिर भी, यदि 'खुले प्रवेश' रखने में तथा 'बन्द निकास' रखने में कोई सफल हो जाता है, इस प्रकार भौतिक सम्पदा संचित कर लेता है, व्यक्ति को आध्यात्मिक संपदा संचित करने में अनदेखी कदापि नहीं करनी चाहिए । उन्नत आध्यात्मिकता तथा परिपक्वता के बिना, लालच तथा अन्तहीन तृष्णा अन्ततः बेचैनी तथा दुःख ही निर्मित करेगी ।

एक सफल व्यक्ति को चाहिए कि अधिक और अधिक भौतिक सम्पत्ति बनाने

के आकर्षण को, इस धुन या नशे को, अपने ऊपर हावी न होने दे । व्यक्ति को अपनी भौतिक सम्पत्ति के सदुपयोग का यूँ भी ध्यान रखना चाहिए, कुशल कर्मों द्वारा, जैसे कि ज़रूरतमंद तथा तिरस्कृत व सुविधाविहीन लोगों की सहायता करना तथा धर्म के विस्तार हेतु भी सहायता करना । यह एक तरीका है समाज को कुछ देने का या आभार प्रकट करने का, क्योंकि यह भी कहा जा सकता है कि व्यक्ति को धनी बनाने में समाज ने योगदान दिया ।

यदि किसी ने भौतिक या आध्यात्मिक कोई उन्नति नहीं की तो वह दोनों आँखों से अन्धे के समान है । जो कोई भौतिक उन्नति करता है, वह ऐसा कहा जा सकता है कि, वह एक अच्छी आँख वाला है । तथा जो भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार से उन्नति करता है, वह व्यक्ति ऐसा है जिसकी दोनों आँखें अच्छी हों ।

असली बुद्धिमान व्यक्ति अपनी भौतिक सम्पदा का आध्यात्मिक सम्पदा की वृद्धि के लिये प्रयोग करेगा ।

आगामी व भावी जन्मों के लिये हम सिर्फ अपनी आध्यात्मिक सम्पत्ति अथवा कर्म ही ले जा सकते हैं ।



संदर्भ :

Dighajanu Sutta - Piya Tan

Dighajanu Sutta - Thanissaro Bikkhu

Factors Leading to Welfare - Tormod Kinnes

The Longshank Sutta - Richard Blumberg

The Wholesome Property - Aggamahapandita

Bhadant U Pannya Vamsa

Vyagghapajja Sutta - Narada Thera





60

पतन से कैसे बचें

पराभव सुत्त

पतन से बचने के उपाय पराभव सुत्त पर आधारित हैं। यह एक लघु प्रवचन है जो उन खतरों को उजागर करता है, जिनसे बचकर कोई व्यक्ति भौतिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक मार्ग पर उन्नति कर सकता है।

1. भौतिक पतन

जो आनन्द लेने वाला है अति निद्रा का, भीड़-भड़के का, वह स्त्री या पुरुष भावहीन, सुस्त, चिड़चिड़ा तथा गंवार होता है।

जो यौनाचार में स्वच्छन्द है, पियक्कड़ है, जुआरी है, वह, जो कुछ कमाया है उसे उजाड़ देता है।

जो यौवन को पार कर बूढ़ा हो चुका हो / चुकी है पर एक अति युवा को जीवन संगी बनाता है तथा सदा शक व ईर्ष्या करता है। व्यवसाय खराब हो जाता है तथा व्यापार उपेक्षित होता है।

जो अपने काम-काज का अधिकार ऐसे व्यक्ति को सौंप देता है जो शराबी तथा खर्चीला है।

जो एक अच्छे परिवार में जन्म लेता है, परन्तु सम्पन्न नहीं है फिर भी अत्यधिक महत्वाकांक्षी है, लालची है तथा अधिकार लोलुप है।

61

2. नैतिक पतन

जो साधन सम्पन्न होने पर भी अपना सक्रिय जीवन काट चुके वृद्ध माता-पिता को सहारा नहीं देता ।

जो सम्पन्न है प्रचुर सम्पत्ति से, आभूषणों तथा भोजन सामग्री से, पर अपनी दौलत में अन्य को सहभागी नहीं बनाता ।

जो अपने धन तथा पदवी का गर्व करता है, परन्तु अपने सम्बन्धियों को तुच्छ समझता है ।

जो अपने जीवन साथी से सन्तुष्ट नहीं है तथा वैश्याओं तथा अन्यों की पत्नियों से संलग्न है ।

3. आध्यात्मिक पतन

जो कोई धम्म (अथवा कोई भी उत्तम आध्यात्मिक मार्ग) का अनुरागी है, उसका उत्थान होता है तथा धम्म द्वेषी का पतन होता है ।

जिसे असन्त प्रिय हैं, सन्त अप्रिय हैं । जिसे सज्जनों के बजाय दुष्टों का संग प्रिय है ।

जो गुणी और आध्यात्मिक गुरुओं को झूठ बोल कर ठगता है ।

पतन के इन बारह कारणों में से प्रत्येक कारण भौतिक तथा आध्यात्मिक प्रगति के मार्ग से विमुख करता है तथा अन्ततः दुःख-दर्द प्रदान करता है ।

पतन के सब कारण वित्तीय बर्बादी के भी नुस्खे हैं । एक अमीर व्यक्ति यदि

अपने ही वृद्ध माँ-बाप को सहारा नहीं देता तो वह अवश्य ही नैतिक-दिवालिया है । और जो व्यक्ति शीलयुक्त आध्यात्मिक शिक्षाओं से द्वेष रखता है, कभी भी सच्ची तथा स्थायी सुख-शान्ति का आनन्द नहीं ले सकेगा ।

परन्तु वे जो इन खतरों के प्रति जागरूक हैं तथा अपना जीवन तदनुसार बचकर व्यतीत करते हैं, उनके लिए एक उच्चतर मार्ग, जो अधिक सम्पन्नता तथा शोभनीयता की ओर जाता है, खुला है ।



संदर्भ :

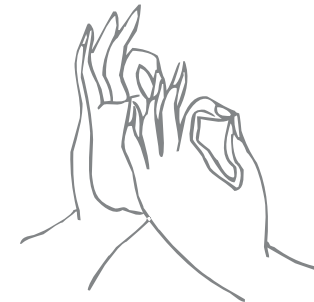
Causes of Downfall Abound - Tormod Kinnes

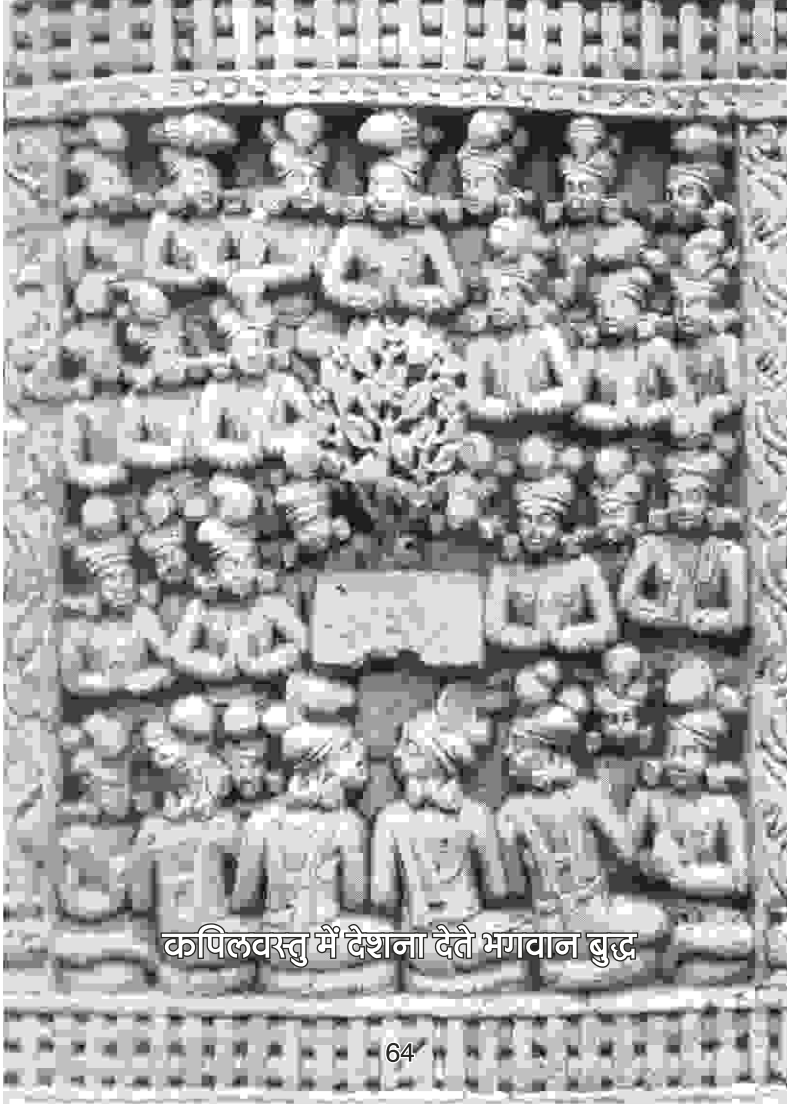
Parabhava Sutta - Narada Thera

Parabhava Sutta - Piyadassi Thera

The Wholesome Property - Aggamahapandita

Bhaddanta U Pannya Vamsa





कपिलवस्तु में देखा जा रहा है भगवान बुद्ध

मंगलमय जीवन

मंगल सुत्त

‘मंगलमय जीवन’ मंगल सुत्त पर आधारित है जिसको मंगलों पर प्रवचन भी कह सकते हैं, यह बुद्ध के अत्यधिक जाने-पहचाने तथा विशेष सूत्रों में से एक है। इस सुत्त में जीवन के उच्चतम मंगलों का वर्णन है तथा प्रगति का मार्ग, जिससे अन्ततः स्थायी शान्ति तथा सुख के मंगल उपलब्ध किए जा सकते हैं।

बुद्ध से पूछा गया कि अत्यन्त भाग्यशाली शगुन क्या है जिससे किसी का दिन के आरम्भ में सामना हो सकता है। प्राचीन भारत में ऐसी मान्यता थी कि शगुन से आने वाले दिन के अच्छे भाग्य तथा लाभ की पूर्व सूचना मिल सकती है। इन शगुनों में, कोई दृश्य देखना या कोई नाम सुनना या विशेष गन्ध या स्वाद मिलना, सम्मिलित थे।

बुद्ध ने प्रश्न का सीधा उत्तर नहीं दिया वरन् इस अवसर का सदुपयोग किया अपने एक प्रवचन में, जो कि अति उत्तम तथा व्यापकार्थ है। अपने उत्तर में उन्होंने यह नहीं कहा कि सर्वश्रेष्ठ शगुन क्या है वरन् बताया कि हमारे अपने लिए जीवन में सच्चे मंगल क्या हैं।

इस प्रकार अन्धविश्वासी संकेतों या शगुनों में अपनी खुशकिस्मती या खज़ाने की उम्मीद ढूँढ़ने के बजाय, भगवान बुद्ध ने कहा कि हम स्वयं अपनी खुशकिस्मती या मंगल निर्मित कर सकते हैं। अतः यह स्पष्ट होता है कि हम में से हर एक जीवन में उस दिशा का चयन कर सकता है, जिस पर हम अग्रसर होना चाहें तथा अपने भाग्य का स्वयं निर्धारण करें।

इस प्रकार हम स्वयं वे सब मंगल उपलब्ध कर सकते हैं, जो कि हम प्राप्त करना चाहते हैं, अपने ही उद्योग से बिना किसी बाह्य या अन्य कारणों पर निर्भर हुए, जैसे कि शगुन देवता, प्रार्थनाएं तथा कर्मकाण्ड तथा हमारी नज़र छोटे-मोटे मंगल, जैसे कि किस्मत या धन-दौलत पर ही नहीं रहनी चाहिए वरन् उन मंगलों पर रहनी चाहिए जो विशुद्ध, चिरस्थायी महत्व के हैं ।

मंगल सुक्त में बुद्ध ने बताया कि जीवन में 38 उच्चतम मंगल हैं । इतने उच्चतर मंगलों के होने का कारण यह है कि जो एक किसी के लिये मंगलकारक है, हो सकता वही दूसरे के लिये उस कालावाधि व परिस्थिति में मंगलकारक न हो । एक व्यक्ति जीवन के विशेष स्तर पर 'उच्चतम मंगल' उसी को मानता है जो उसके व्यक्तिगत विकास के अनुकूल हो । अतः जैसे-जैसे व्यक्ति विकास प्राप्त करता है 'उच्चतम मंगल' भी वैसे ही विकसित होते जाते हैं तथा और अधिक "उच्चतम मंगल" के लिए कार्य करने से इस मार्ग पर और उन्नति होती है ।

यह 38 मंगल पाँच भिन्न समूहों में वर्गीकृत किए जा सकते हैं : आवश्यक मंगल, सहायक मंगल, व्यक्तिगत मंगल, उच्चमंगल तथा उच्चतम मंगल । हर वर्ग व्यक्ति के अपने तथा आध्यात्मिक विकास को हर व्यक्ति के लिए दर्शाता है तथा वे गुण भी जो आगे उन्नति करने के लिए चाहिए ।

यह शिक्षा इसलिए व्यक्ति के विकास के लिए बड़ी विस्तृत मार्गदर्शिका है । यह इस प्रकार तर्कसंगत तथा संरचनात्मक क्रम से बनी हुई है कि मंगलों का प्रत्येक समूह अगले उच्चतर मंगलों के लिए आधार बनाने में सहायक है । इसमें अतिसाधारण मंगल या गुण सम्मिलित हैं, जो हर व्यक्ति में होने चाहिए तथा धीरे-धीरे उच्चतर गुणों की ओर अग्रसर करता है, जो उच्चतम मंगल अर्थात् निर्वाण लाभ के लिये आवश्यक है । यह मंगल सुक्त का मुख्य कार्य तथा उद्देश्य है ।

1. सारभूत मंगल

1. मूर्खों की संगत से बचना
2. बुद्धिमानों की संगत करना
3. आदरणीयों का आदर करना
4. उचित स्थान पर निवास करना
5. संचित कुशल कर्मों का होना
6. सही मार्ग पर होना



सारभूत मंगलों के अन्तर्गत अति प्रारम्भिक तथा आधारभूत गुण आते हैं, जो हर एक के पास होने चाहिए । भौतिक व आध्यात्मिक प्रगति के लिये इस समूह के तत्व सुस्थापित होने ही चाहिये ।

1. मूर्खों की संगत से बचना

मूर्ख वे लोग हैं जो अच्छे-बुरे का अन्तर नहीं पहचानते, परिणामतः वे अपने कार्यों द्वारा दूसरों को हानि पहुँचाते हैं । आधारभूत नैतिकता के प्रति वे आदरवान नहीं होते, क्योंकि वे विशेष ध्यान नहीं देते कि उनके कर्मों का क्या फल होगा । अनजाने में ऐसे लोगों का साथ करने से भौतिक तथा आध्यात्मिक कोई भी सफलता प्राप्त करना कठिन हो जाएगा, क्योंकि सदा उनके जैसा व्यवहार करने की ही प्रवृत्ति रहती है । तत्पश्चात्, कुशल कर्मों के लिए या अपना सुधार करने के लिए लेशमात्र भी इच्छा या प्रोत्साहन नहीं रहेगा ।

फिर भी हमें सहायता करने के लिए तत्पर रहना चाहिए, यदि वह आवश्यक हो तथा उनको सुधारने के लिए अन्यो की सहायता भी करना चाहिए । इस प्रकार हमें मूर्खों से बिल्कुल बचना चाहिए । आवश्यक बात यह है कि हम स्वयं

सतर्क रहें तथा अनुचित ढंग से हम उन से प्रभावित न हों । यह मंगल बुद्ध की शिक्षा के ठीक शिखर पर है और स्पष्टतया किसी व्यक्ति के धारण करने के लिए अकेला अतिमहत्वपूर्ण मंगल है, क्योंकि यह मंगल नहीं तो अन्य मंगलों की ओर अग्रसर होना भी सम्भव नहीं ।

2. बुद्धिमानों की संगत करना

बुद्ध ने कहा—पण्डितों की संगत करना। पण्डित वे हैं, जो अच्छे-बुरे का अन्तर पहचानते हैं तथा विषय में पारंगत हैं, इस प्रकार उनके कारण किसी को असुविधा न हो इस बात का ख्याल रखते हैं। उन्हें ज्ञात रहता है कि उनके कर्म न केवल इस जन्म में वरन् अगले जन्मों में भी फलित होते हैं । वे कुशल कर्मों के लिए प्रोत्साहित करते हैं तथा अकुशल कर्मों के लिए निरूत्साहित । हमें सदा ऐसे ईमानदार तथा गुणी लोगों की संगति करनी चाहिए, क्योंकि हमारे जीवन में उचित संगत अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसके बावजूद कि हमारा कितना विकास हो चुका है ।

3. आदरणीयों का आदर करना

हमारे माता-पिता, बड़े तथा गुरुजन वे लोग हैं, जिनका हमें आदर करना चाहिए। हम उनका आदर धन-सामग्री से या अपने व्यवहार से कर सकते हैं । उन्हें उचित आदर और सम्मान देकर, हम उनके मार्गदर्शन से लाभान्वित हो सकते हैं तथा निरन्तर उनसे सीख सकते हैं ।

4. उचित स्थान में रहना

उचित स्थान का अर्थ भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों है । भौतिक तौर पर इसका अर्थ है शांतिपूर्ण स्थान, जहाँ जान-माल यथा संभव सुरक्षित हो । आध्यात्मिक दृष्टिकोण से इसका अर्थ है जहाँ बुद्ध की शिक्षाएँ उपलब्ध हों

तथा जहाँ कोई बुद्ध शिक्षा को शान्तिपूर्वक सीख सकता हो तथा उनका अभ्यास कर सकता हो । उचित स्थान पर निवास के सौभाग्य से भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों विकास संभव हैं ।

5. कुशल कर्मों का संचय

हम निरन्तर अपने पूर्व के कर्मों का फल भुगत रहे हैं । उदाहरणार्थ, यदि हमने पूर्वकाल में कई लोगों का भला किया है, तो यह संभव है कि जब स्वयं हमें सहायता की आवश्यकता होगी, हमें उनमें से किसी न किसी की सहायता मिल जाएगी । इसी क्रम में यदि हम अभी दूसरों की सहायता जारी रखते हैं, यह संभव है कि भविष्य में हमें किसी की सहायता मिल जाएगी, जिसकी सहायता हमने की होगी । अतः हमें निरन्तर भविष्य के लिए अच्छाई करते रहना चाहिए। यह दोहरा सौभाग्य है कि पूर्वकाल में भी कुशल कर्म किए हों तथा भविष्य के लिए कुशल कर्म करने के भी योग्य हों ।

6. सन्मार्ग पर होना

कई लोग जानते तक नहीं कि वे कुमार्ग पर हैं । जिस सही मार्ग पर उन्हें चलना चाहिए उसकी जानकारी तो दूर की बात है । कुमार्ग है अनैतिकता, लोलुपता तथा अज्ञान । सद्मार्ग है शील, उदारता तथा प्रज्ञा । अतः यह एक बड़ा सौभाग्य है, सद्मार्ग को जानना तथा अपने आप को इस भौतिक तथा आध्यात्मिक विकास के मार्ग पर आरूढ़ करना ।

2. सहायक मंगल

7. सुशिक्षित होना

8. काम में निपुण होना

9. विनय (अनुशासन) का पालन करना

10. मधुर वाणी का अभ्यास करना

11. माता-पिता को सहारा देना

12. अपने जीवन साथी तथा बच्चों का ध्यान रखना

13. आजीविका जो हानिकारक न हो



इस समूह के सौभाग्य सम्बन्धित हैं हमारे वयस्क जीवन की तैयारी से तथा पारिवारिक जीवन से एवं उन कारकों से जो एक विकसित, सन्तुलित व हितकर भौतिक जीवन के लिए आवश्यक हैं। ऐसे सहायक सौभाग्य होने से आगे का आदर्श जीवन संभव होता है।

7. सुशिक्षित होना

यह साधारण शिक्षा तथा नैतिक शिक्षा दोनों से सम्बन्धित है। एक अच्छी साधारण शिक्षा आवश्यक है हमारे भौतिक कल्याण के लिए तथा एक अच्छी नैतिक शिक्षा, जैसे कि बुद्ध की शिक्षाओं को समझना, हमारे आध्यात्मिक कल्याण के लिए।

8. काम में निपुण होना

हमें अपने तथा परिवार के भरण-पोषण के लिए सक्षम होना चाहिए तथा इसको निभाने के लिए हमें एक भली-चंगी आजीविका के योग्य होना पड़ेगा। हमारे पास आवश्यक हुनर तथा शिक्षा होनी ही चाहिए। और उसे अपने काम में सुचारू ढंग से लागू करना चाहिए। उचित आजीविका अर्जित करने योग्य होना तथा जीवित रहने मात्र को संघर्षरत न होना तथा बेइमानी और अपराध का रास्ता न पकड़ना, यह सब भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों विकास के लिए आवश्यक हैं।

9. विनय (अनुशासन) का पालन करना

पांचों शीलों का अनुसरण करना अनैतिक तथा हानिकारक कार्यों से बचने के लिए हमारी योग्यता तथा मनोबल को दृढ़ करता है। ऐसी आचार संहिता का पालन हमें मुसीबत तथा कठिनाईयों से बचाएगा, जैसी कि नकारात्मक कार्यों द्वारा लाई ही जाती है।

पंचशील

1. प्राणी हत्या से विरत रहना
2. चोरी से विरत रहना
3. काम मिथ्याचार से विरत रहना
4. झूठ से विरत रहना
5. नशीले पदार्थ तथा नशीली दवाओं के हानिकारक प्रयोग से विरत रहना

10. मधुर वाणी का अभ्यास करना

वाणी लोगों से विचारों के आदान-प्रदान करने का मुख्य साधन है। यदि हम सदा झूठ बोलें, गप्पबाज़ी करें, गाली-गलौज या दूसरों की बुराई करें तो हमारे कई दुश्मन होंगे तथा लोग हमें पसन्द न करेंगे, विश्वास न करेंगे। यह हमारी भौतिक या आध्यात्मिक उन्नति में एक बड़ी बाधा बन जाएगी, जो हम प्राप्त करने की आशा रखते हैं। इसलिए हमें सदा वही बोलना चाहिए जो सत्य है, अर्थपूर्ण है, मधुर है तथा अपने और अन्य के लिए भी लाभदायक है।

11. माता-पिता का भरण-पोषण करना

हमारे माँ-बाप हम को इस दुनिया में लाए तथा जन्म से ही हमारी देख-रेख की, यह कोई अत्यन्त हृदयहीन तथा लापरवाह लोग ही होंगे जो अपने माँ-बाप की देख-रेख न करेंगे। हमें अवश्यमेव कृतज्ञता प्रदर्शित करनी चाहिए, सेवा

सुश्रुषा से, जब भी इसकी आवश्यकता हो तथा सदा उनके प्रेम तथा संभाल को परावर्तित करना चाहिए। बुद्ध ने कहा कि मात्र एक तरीका है, जिससे हम अपने माता-पिता की कृपा से पूर्णतया उन्नत हो सकते हैं, वह है, उनको धम्म कार्यों में सम्मिलित करना तथा प्रोत्साहित करना।

12. जीवनसाथी तथा बच्चों का ध्यान

वैसे तो यह बात बड़ी स्पष्ट प्रतीत होती है पर ऐसे लोग भी हैं, जो यह अतिसाधारण कर्तव्य भी अपने परिवार के प्रति नहीं निभाते। हमें अपने जीवन-साथी को अवश्य सहयोग देना चाहिए तथा उसके प्रति वफ़ादार रहना चाहिए तथा बच्चों की भौतिक आवश्यकताओं की आपूर्ति करनी चाहिए, उन्हें पौत्रिक सहयोग तथा अच्छी शिक्षा देनी चाहिए। इसमें उनकी स्थायी शान्ति व प्रसन्नता के लिये उन्हें धम्म सिखाने का अति गम्भीर कर्तव्य भी सम्मिलित होगा। परिवार की उचित देख-रेख का अर्थ है घर-परिवार में शान्ति तथा सद्भावना का होना और आध्यात्मिक विकास के लिए यह एक और आवश्यक अंग है।

13. आजीविका जो हानिकारक न हो

आर्य आष्टांगिक मार्ग के अनुसार हमें इस प्रकार के कामधन्धे से बचना चाहिए, जिसमें प्राणीहत्या, मांस बेचना, मनुष्यों का व्यापार, हथियार तथा ज़हर, नशीले पदार्थ आदि से सम्बन्ध हों। वे धंधे जो अकुशल, अनैतिक तथा असंवैधानिक हों, उनसे भी बचना चाहिए। किसी ऐसे कार्य में संलग्न होना जो दूसरों को नुकसान पहुँचा सकता हो, व्यक्ति को शुद्ध मानसिक शान्ति से वंचित कर देगा जो आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक है। अतः यह एक बड़ा सौभाग्य ही है यदि हम अपनी आजीविका ऐसे साधनों से चला सकें, जिसमें अकुशल बातें न हों।

3. व्यक्तिगत मंगल

14. उदार होना
15. शीलवान आचरण होना
16. मित्रों-सम्बन्धियों का सहायक होना
17. समाज सेवा करना
18. पाप से बचना
19. पाप के प्रति इच्छा न होना
20. नशीली वस्तुओं से विरत रहना
21. कल्याण कार्यों में तत्पर रहना



इस समूह के तत्व उन बातों को उजागर करते हैं, जिनसे आगे का व्यक्तिगत विकास होता है, जिनको जब हम परिवार में तथा काम-धन्धे में स्थापित हो चुके हों, तब कार्यान्वित करना चाहिए। जब हम इन व्यक्तिगत सौभाग्यों को प्राप्त कर लेंगे तो आगे ऊँचे आध्यात्मिक आदर्शों को प्राप्त करना बड़ा सरल हो जाएगा।

14. उदार होना

लालच, तृष्णा तथा अत्यधिक आसक्ति, विपत्ति तथा दुःख के कारण हैं। उदारता के अभ्यास से हम अपने चित्त की नकारात्मक वृत्तियों को कमज़ोर कर सकते हैं तथा करुणा, दानशीलता तथा स्वार्थपरता को उन्नत कर सकते हैं। हम अन्य लोगों की अपने प्रयास या दान से या आध्यात्मिक रूप से, धर्म में सहभागी बन कर भौतिक सहायता कर सकते हैं। उदारता का अभ्यास बिना खेद के, बिना भेदभाव के तथा बिना संसारिक दृष्टिकोण के होना चाहिए। अन्यों के प्रति शुद्ध मैत्री हमारे लिए तथा हमारे परिवार के लिए खूब प्रेम तथा

शुभेच्छा लाता है। अन्य लोगों की सहायता के योग्य होने की भाग्यशीलता का होना, यह एक बहुत बड़ा मंगल है तथा ऐसा करने से हम अपने लिए और सौभाग्य निश्चित कर लेते हैं।

15. शीलवान आचरण होना

मात्र एक आचार संहिता का पालन करके और मात्र नकारात्मक कार्यों से बचने के उपाय करने के बजाय हम और ऊँचे आचरण की ओर अग्रसरित हो सकते हैं। यह करने का एक अच्छा तरीका होगा, पाँच शीलों के सकारात्मक पहलुओं का पालन। यह और भी बड़ी आध्यात्मिक उपलब्धि की ओर ले जाएगा।

सकारात्मक पंचशील

1. अहिंसा तथा करुणा का अभ्यास
2. दयालुता तथा उदारता का अभ्यास
3. वफ़ादारी तथा ज़िम्मेदारी का अभ्यास
4. सत्य बोलने का तथा मधुरवाणी का अभ्यास
5. आत्म-नियंत्रण तथा सचेतनता का अभ्यास

16. सम्बन्धियों तथा मित्रों का सहायक होना

अपनी पत्नी-बच्चों, सगे सम्बन्धी की देख-रेख के अतिरिक्त, यदि आवश्यकता हो, तो सम्बन्धियों तथा मित्रों की भी सहायता करनी चाहिए। क्योंकि जब हम आवश्यकता की परिस्थिति में, एक दूसरे की सहायता करते हैं, तो हम अपने आसपास सद्भावना का निर्माण करते हैं तथा इससे हमारी आध्यात्मिक उन्नति और सुदृढ़ बनती है।

17. समाज सेवा करना

आम समाज की सहायता, उदारता की ओर भी ऊँची अभिव्यक्ति होगी। यह किया जा सकता है स्कूल, अस्पताल, शरणस्थल, सड़क आदि बनवाकर या

इस प्रयोजन दान देकर, जो सबके लिए लाभदायक हैं। यहाँ तक कि पेड़ पौधे या बगीचों का काम हमारे वातावरण को तथा पृथ्वी की पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण को सुधार सकता है।

इतना ही आवश्यक है कि हम जरूरतमन्द बीमारों तथा वृद्धों की सहायता करें। यदि किसी प्रकार की समाज सेवा का हमारा रूझान है तो हम सचमुच सौभाग्यशाली हैं, क्योंकि हमने काफ़ी उदारता तथा करुणा विकसित कर ली है।

18. पाप से बचना

बुद्ध धम्म के संदर्भ में पाप का अर्थ है ऐसा कोई भी काम, जो हमें या अन्य को या दोनों को हानि पहुँचाए। ऐसे सब नकारात्मक कार्यों से बचना चाहिए।

दस अकुशल कर्म

काया के द्वारा तीन

1. प्राणी हत्या
 2. चोरी
 3. काम मिथ्याचार
- ##### वाणी के द्वारा चार
4. झूठ
 5. निन्दा, बदनामी
 6. कटुवाणी
 7. गप्प

मन के द्वारा तीन

1. लोभ
2. वैर
3. मिथ्या धारणाएँ (जैसे कर्म और पुनर्भव को न मानना)

19. पाप इच्छा न होना

जब हम पांचों शीलों को पालने में दृढ़ हो जाते हैं तथा दस अकुशल कर्मों से बचते हैं तो हम पाएंगे कि अब हमारी इच्छा ही ऐसे अकुशल कर्मों के प्रति समाप्त हो गई है। हम सचमुच अनुभव करने लगते हैं कि जैसे हम स्वयं ऐसे हानिकारक कर्मों का शिकार नहीं होना चाहते, इसी प्रकार हमें दूसरों के प्रति भी अकुशल कर्मों के बर्ताव से बचना चाहिए। यह एक महान सौभाग्य है कि स्वभाव से ही किसी को हानि पहुँचाने से लजाते हों।

20. नशीले पदार्थों से बचना

हालांकि यह पांच शीलों में आ चुका है। बुद्ध ने आवश्यक समझा कि इस पर फिर बल दिया जाए। बुद्ध ने यह सलाह जोर दे कर कही, क्योंकि यदि हम इनके वश में हो जाते हैं तो हम वह अकुशल काम भी कर गुजरते हैं जो हम अन्यथा न करते। यह तो बड़ी बर्बादी होगी कि हम व्यक्तिगत विकास में इतना आगे बढ़ कर, मात्र नशे या नशीली दवाइयों के कारण सब कुछ गंवा दें। नशीले पदार्थों से बचना एक अन्य महा सौभाग्य है।

21. कल्याण कार्यों में तत्पर रहना

हमने समझ लिया है और अब पालन करते हैं, वो सब जो हमारी व्यक्तिगत उन्नति के लिए आवश्यक है। अगला कदम होगा कि हम अपने अभ्यास को संगठित करें और लापरवाही या आत्मतुष्टिवश इसको हाथ से निकल न जाने दें। अपने कुशल व्यवहार को बनाए रखने तथा और भी बढ़ाने के लिए हमें सचेत बने रहना चाहिए। दस कुशल कर्मों के अभ्यास से तब हम और अधिक सौभाग्यशाली होने की सरलता पाएंगे।

दस कुशल कर्म

काया के तीन कर्म :

1. करुणा
2. उदारता
3. आत्म संयम

वाणी के चार कर्म :

4. सच्ची वाणी
5. मृदुल वाणी
6. मधुर वाणी
7. अर्थपूर्ण वाणी

तीन मानसिक कर्म :

8. मुदिता
9. मेत्ता
10. सम्यक दृष्टि



4. उच्चतर मंगल

22. आदरवान होना

23. विनम्र होना

24. सन्तुष्ट होना

25. कृतज्ञ होना

26. उपयुक्त समय पर धम्म सुनना

27. धैर्यवान होना

28. अच्छी सलाह को सुनना

29. भिक्षुओं तथा आध्यात्मिक गुरुओं से मैत्री रखना

30. धम्म के विषयों का विचार विमर्श करना



अब जीवन का लक्ष्य सांसारिक तथा भौतिकता से ऊपर होना चाहिए । आध्यात्मिक आदर्श अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं । निर्वाण के मार्ग पर आरूढ़ होने के लिए उच्चतर मंगल अन्तिम पड़ाव है ।

22. आदरवान होना

हम बुद्ध के त्रिरत्नों के प्रति आदर दिखा सकते हैं, बुद्ध, धम्म, संघ के अलौकिक गुणों का चिन्तन-मनन करके । बड़ों, भिक्षुओं तथा आध्यात्मिक गुरुओं के प्रति आदरवान होने से हमारा शिक्षण तथा मार्गदर्शन निरन्तर बना रहेगा । हम आदर दिखा सकते हैं, उनके प्रति सम्मान पूर्वक व्यवहार से तथा तत्परता से उनकी सेवा में रहकर । इसके अतिरिक्त बुद्ध के प्रति आदरवान होने से हम धम्म सीखने की तथा धम्म का अभ्यास करने की उचित मानसिकता को प्राप्त करते हैं । आदरवान होने से हमारी विनम्रता तथा कृतज्ञता का विकास होता है ।

23. विनम्र होना

कुछ लोग जो अच्छी प्रगति करने में सफल हो चुके हैं, ऐसा समझने लग सकते हैं कि वह सब कुछ पहले से ही जानते हैं तथा अन्य से बढ़चढ़ कर हैं । यदि ऐसा होता है तो सही अभिवृत्ति तथा दूसरों से सीखने के लिए तथा गहरी शिक्षाओं को धारण करने के लिए खुला मन बनाए रखना कठिन हो जाता है । यहाँ भगवान बुद्ध हमें याद दिलाते हैं कि घमण्ड और दम्भ, निरन्तर आध्यात्मिक विकास की सबसे बड़ी रूकावटें हैं । अतः सदा विनम्र रहना एक बड़ा सौभाग्य है ।

24. सन्तुष्ट रहना

अलग-अलग लोगों के जीवन में अलग-अलग आवश्यकताएं होती हैं । सन्तुष्ट रहने का अर्थ यह नहीं कि मेहनत से काम न करें या अपने को सुधारने का प्रयत्न न करें । जबकि भौतिक वस्तुएँ जीवनयापन तथा आराम के लिए आवश्यक हैं, परन्तु कुंजी है, यह मानना कि कब वे पर्याप्त हो गयी हैं । कई लोग विपुल सम्पत्ति वाले हैं, जो दुःखी हैं, क्योंकि वे सोचते हैं कि उनके पास अभी भी काफ़ी सम्पत्ति नहीं है । बुद्धिमान लोग समझे हैं कि भौतिकता की सतत तृष्णा प्यास बुझाने के लिए नमकीन पानी पीने जैसा है, यह अवश्यमेव असंतुष्टि, झुंझलाहट तथा दुःख की ओर ले जाता है । अपनी सन्तुष्टि का स्तर पा लेना ही अपनी मानसिक शान्ति को प्राप्त करना है । सन्तुष्टि परम धन है ।

25. कृतज्ञ होना

ऐसा कहा जाता है कि इस संसार में थोड़े से लोग ऐसे हैं, जो दूसरों की सहायता करने के लिए काफ़ी प्रयास करते हैं । जब कि उनसे भी थोड़े वे लोग हैं, जो मदद पा कर कृतज्ञता महसूस करते हैं । कृतज्ञता अक्सर धन्यवाद तथा सराहना के साथ जुड़ी रहती है, तथा इसमें वह इच्छा भी रहती है कि जो लिया गया है, वह लौटाया भी जाए । यह सब दयालुता तथा सद्भावना के लेन-देन को बढ़ावा देता है तथा भविष्य में भी और अधिक सौभाग्य लाता है ।

26. उपयुक्त समय पर धम्म का सुनना

कोई भी समय धम्म सुनने या स्वाध्याय के लिए उचित है। फिर भी उचित समय उसको कहेंगे जब हम विचलित, परेशानी में या उखड़े हुए अथवा संशयग्रस्त हों। इससे ऐसे समय में शान्ति मिलती है, जब हमें इसकी सर्वाधिक आवश्यकता होती है। हर किसी को यह संयोग या साधन प्राप्त नहीं होता कि धम्म को सुन, सीख सके, हमें सदैव इससे जुड़े रहना चाहिए तथा इस महान मंगल को व्यर्थ न जाने देना चाहिए।

27. धैर्यवान होना

ऐसा कहा जाता है कि धैर्य सबसे ऊँचा गुण है और यह अवश्य ही सबसे कठिनाई से मिलने वाले गुणों में से एक है। हम पर सदा बदलती परिस्थितियों तथा आसपास के लोगों की सनक का दबाव बना रहेगा। इनमें से अधिकतर बातें हमारे वश के बाहर हैं और यदि हम आवश्यकता से अधिक इनसे अपने आप को प्रभावित होने दें तो हम अनावश्यक कष्ट, नाराज़गी तथा क्रोध सहन करेंगे। हमें अपने प्रति भी धैर्यवान होना आवश्यक है, जब हम गलतियाँ करते हैं या आध्यात्मिक मार्ग पर पिछड़ जाते हैं तथा अपने आप को सदा खूब प्रयत्नशील बनाए रखने के लिए भी। धैर्य एक बड़ा सौभाग्य है, क्योंकि यह सहिष्णुता, क्षमा तथा सहायता की ओर ले जाता है। यह किसी भी स्थिति में हमें शान्त, अविश्वभ्य, दिमाग़ ठंडा रखने में तथा शुद्ध रखने में सहायक है।

28. अच्छी सलाह को सुनना

कई लोगों को सलाह सुनना बहुत कठिन जान पड़ता है, अपनी आलोचना या कमियों, त्रुटियों को दिखाया जाना तो दूर की बात है। परन्तु हम गहनतम ज्ञान तथा सच्चा विकास प्राप्त नहीं कर सकते, यदि घमण्ड और ज़िद्दीपन हमारे रास्ते की दीवार बन जाएंगे। खुलापन, बात मानना तथा सही किए जाने पर विनम्रता आवश्यक हैं, क्योंकि हम सम्पूर्ण नहीं हैं और अन्यो से हमें बहुत सीखना है।

29. भिक्षुओं तथा आध्यात्मिक गुरुओं से मैत्री

ऐसे लोगों से मिलना हमें उनकी बुद्धिमता से तथा सौम्यता से सीखने का तथा उत्साह और प्रेरणा प्राप्त करने का मौका देता है। हमें यह भी ध्यान रहता है कि इस संसार में मात्र भौतिकता तथा भोगविलास के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ है और हमें यह भी दिखता है कि ऐसे भी कई लोग हैं, जो इस आध्यात्मिक मार्ग में आनन्दित हैं। ऐसे लोगों की संगत से हमें चार ब्रह्म विहारों के अभ्यास की ओर गतिमान होना चाहिए जो कि चार स्वर्गीय निवास भी माने जाते हैं, क्योंकि इन उत्तम गुणों का अभिवर्धन करने से हमारा मन आध्यात्मिक तथा स्वर्ग जैसी स्थिति को प्राप्त होगा।

चार ब्रह्म विहार

1. मैत्री
2. करुणा
3. मुदिता
4. उपेक्खा

30. धर्म विषयक विचार विमर्श करना

धर्म श्रवण तथा अभ्यास के सौभाग्य को सुदृढ़ करने के लिए धर्म का विचार-विमर्श तथा परस्पर संवाद होना चाहिए। ऐसा करने के लिए हमें आध्यात्मिक मित्रों की संगति का सौभाग्य प्राप्त होता है, जो उसी मार्ग पर अग्रसर हैं, जिस पर हम। हमें अवसर प्राप्त होता है अन्यो के साथ सहभागिता करने का कि हमने क्या सीखा है तथा बुद्ध की शिक्षाओं को सीखने, समझने तथा विकास करने की निरन्तरता का। इस प्रकार हम धम्म से अधिकतर जुड़े रहते हैं और यह वह कारण है, जो हमको बारंबार सीधा उच्चतम मंगलों की ओर ले जाता है।

5. उच्चतम मंगल

31. स्वानुशासन, तप का अभ्यास करना
32. आर्य आष्टांगिक मार्ग के अनुसार जीना
33. चार आर्य सत्यों को प्रज्ञापूर्वक समझना
34. निर्वाण का साक्षात्कार करना
35. लोक धर्मों से विचलित न होना
36. शोकमुक्त होना
37. क्लेशों से मुक्त होना
38. स्थायी शान्ति तथा क्षेम-सुरक्षा प्राप्त करना



इस स्तर पर पहुँचने पर भौतिक विकास का महत्व नहीं रहता । जीवन के ध्येय परिवर्तित हो गए हैं । यह स्तर है गहन आध्यात्मिक अभ्यास का, जिसका एक मात्र अभिप्राय है धम्म मार्ग की उच्चतम उपलब्धियों, सौभाग्यों को प्राप्त करना, धम्म मार्ग के फल निब्बान का साक्षात्कार करना ।

निर्वाण का मार्ग

31. तप का अभ्यास करना

अब हम उच्चतम स्तर पर आ गए हैं, जहाँ आगे बढ़ने के लिए अधिक प्रयास की आवश्यकता है । हमें ऐन्द्रिक सुख या भौतिक असुविधा से यँ ही आसानी से विचलित नहीं होना चाहिए । हमें अपने आप को सिखाना चाहिए कि सन्मार्ग पर केन्द्रित रहें । अत्यधिक सरल तरीका है, पांचो शीलों का कड़ाई से पालन या इससे बेहतर आठ शीलों का पालन । कई सक्रिय बौद्धों का रिवाज़ है, पूर्णिमा तथा नए चाँद वाले दिन आठ शीलों का पालन, पर उनका पालन

अन्य दिनों में भी किया जा सकता है । अपने आप को तप में साधने का अच्छा तरीका है ध्यान शिविरों में भाग लेना, जहाँ हम आठ शीलों का पालन अधिक समय तक कर सकते हैं । इससे हम को स्वैच्छिक सादा जीवन व्यतीत करने का मौका मिलता है, जो हमें मानसिक तथा शारीरिक संयम प्रदान करता है, जिससे हम आष्टांगिक मार्ग पर भली प्रकार चल सकें । ध्यान भावना, विशेषतया विपस्सना या अन्तर्दृष्टि ध्यान भी हम को सर्वोत्तम विधि से तप सिखाता है, जो है सतत सचेतनता ।

आठ शील

1. किसी भी प्राणी हत्या से विरत रहना
2. चोरी से विरत रहना
3. सहवास से विरत रहना
4. झूठ तथा मिथ्या भाषण से विरत रहना
5. नशीले पदार्थों के सेवन से विरत रहना
6. सूर्यास्त के बाद खाने से विरत रहना
7. गायन, वादन, नृत्य संगीत, नाच, तमाशे, इत्र, सौन्दर्य-प्रसाधन तथा साज-सामान से विरत रहना
8. विलासपूर्ण आसन तथा बिस्तर से विरत रहना

32. आर्य आष्टांगिक मार्ग के अनुसार रहना

आध्यात्मिक परिपक्वता के इस स्तर पर इसका यह अर्थ नहीं है कि ऊपर-ऊपर से आष्टांगिक मार्ग का पालन । इस स्तर पर इसका अर्थ है, धम्म मार्ग के प्रत्येक अंग का गंभीरता तथा सचेतनता से निर्वाह । पहले के सब सौभाग्य अथवा मंगल इस मार्ग पर पक्के इरादे तथा समर्पण से चलने की हमारी तैयारी हैं । आष्टांगिक मार्ग तीन पहलुओं में संक्षिप्त किया जा सकता है, शील, समाधि तथा प्रज्ञा अर्थात् यथाभूत ज्ञान ।

आर्य आष्टांगिक मार्ग

शील समूह

1. सम्यक वाणी

झूठ, चुगली, निन्दा, कटु शब्द तथा निरर्थक बातचीत से विरत रहना । सच्ची, शान्त, दयामय तथा अर्थपूर्ण वाणी को विकसित करना ।

2. सम्यक कर्मान्त

प्राणी हत्या, चोरी, काम मिथ्याचार से विरत रहना, किसी की हानि न करना, ईमानदारी तथा विश्वसनीयता को विकसित करना ।

3. सम्यक आजीविका

प्राणी हत्या (मनुष्यों एवं पशुओं दोनों की), पशु मांस का व्यापार, मनुष्यों का व्यापार, हथियार, ज़हर तथा नशीले पदार्थ वाले काम धन्धों से बचना । वे काम जो नीतिविरुद्ध, शील विरुद्ध तथा असंवैधानिक हैं, उन से भी बचना चाहिए ।

समाधि समूह

4. सम्यक व्यायाम

अकुशल विचार मन में उठे ही नहीं अतः मानसिक संयम का उपयोग करना तथा जो अकुशल विचार मन में आएँ उसे हटाना । कुशल विचार विकसित करना तथा उन कुशल विचारों को संजोये रखना, जो मन में उठते हैं ।

5. सम्यक स्मृति

काया के प्रति, काया की स्थिति तथा वेदनाओं के प्रति सचेत रहना । चित्त, चित्त के विचार, भावनाओं तथा संवेदनाओं के प्रति सचेत रहना ।

6. सम्यक समाधि

ध्यान साधना का अभ्यास करना, चित्त को एकाग्र करने का अभ्यास करना, जिससे प्रज्ञा का विकास तथा प्राप्ति हो सके ।

प्रज्ञा समूह

7. सम्यक दृष्टि

चार आर्य सत्त्यों को समझना तथा अपनाना ।

8. सम्यक संकल्प

उदारता, मैत्री भावना तथा करुणा का विकास करना ।

33. चार आर्य सत्त्यों को समझना

आष्टांगिक मार्ग के पालन से चार आर्य सत्त्यों की सच्ची समझ उत्पन्न होगी । यह अध्ययन पर आधारित पुस्तक-ज्ञान से या मात्र सोच विचार से भिन्न है । यह गहन तथा अपने अनुभव पर घटित अस्तित्व के यथातथ्य सत्त्यों का बोध है, जो सावधानीपूर्वक शील, चित्त विकास तथा प्रज्ञा के अभ्यास से उपजता है ।

आष्टांगिक मार्ग का हर पहलू अन्य पहलुओं को विकसित तथा उन्नत करने में सहायक है । उदाहरण के लिए, शील पालन आवश्यक आधार है चित्त विकास का, जो प्रज्ञा प्राप्ति की ओर ले जाता है । प्रज्ञा ही हम को शीलों के लाभ दिखाती है, जिनको हम अधिक ध्यान से पालन करेंगे ।

शील पालन का उच्च स्तर चित्त के विकास को संभव करता है, जिसके कारण प्रज्ञा का और अधिक गहरा भेदन होता है । और आध्यात्मिक उन्नति का यह चक्र चलता रहता है, ऊपर उठते हुए चक्राकार में, चार आर्य सत्त्यों की सच्ची समझ तथा अन्ततः निब्बान प्राप्ति की ओर ।

चार आर्य सत्य

1. प्राणीमात्र दुःख के अधीन हैं

दुःख को अक्सर कष्ट के भाव से समझा जाता है, परन्तु यह नकारात्मक वेदनाओं का एक विस्तृत फैलाव आच्छादित करता है, जिसमें आता है तनाव, असंतुष्टि तथा भौतिक दुःख। दुःख है, क्योंकि हर प्राणी ग्रसित हो ही सकते हैं बीमारी से, प्रियों के वियोग से, अपनी इच्छा की पूर्ति न होने से, बुढ़ापे से तथा मृत्यु से।

2. दुःख इच्छा और तृष्णा से उपजता है

सब प्राणी सुखद संवेदनाओं के लिए लालायित रहते हैं तथा दुःखद संवेदनाओं से बचने की इच्छा रखते हैं। यह संवेदनाएं भौतिक या मनोवैज्ञानिक हो सकती हैं तथा जब यह इच्छाएं-तृष्णाएं पूरी नहीं होती, तब दुःख उपजता है।

3. इच्छा-तृष्णा का उन्मूलन कर दुःख से मुक्त हुआ जा सकता है

निब्बान अथवा निर्वाण शान्ति की एक ऐसी अवस्था है, जिसमें लोभ, द्वेष तथा मोह और इस प्रकार से दुःख, समूल नष्ट हो गये होते हैं।

4. दुःख से परे अवस्था भी है, जो कि आर्य आष्टांगिक मार्ग है

दुःख को न्यून किया जा सकता है, कमजोर करके अन्ततः समूल नष्ट कर, तदनुसार, निर्वाण का साक्षात्कार किया जा सकता है, उस मार्ग के अनुसरण से, जो बुद्ध ने सिखाया है।

34. निब्बान का साक्षात्कार

हम में से हर व्यक्ति निब्बान को उपलब्ध होने में समर्थ है। हम एक दम सम्बोधि को उपलब्ध नहीं भी हों पर हमारे लिए एक ऐसे स्तर को पहुँच जाना

संभव है, जहाँ से निब्बान का लाभ सुनिश्चित ही हो। सम्बोधि, आवश्यक नहीं कि एक दम या पूर्णतया प्राप्त हो जाए, अधिकांश लोगों के लिए यह क्रमिक स्तरों से प्राप्त होगी।

इस प्रकार, सम्बोधि को उपलब्ध होने के चार स्तर हैं जो इस प्रकार हैं, स्रोतापत्ति, सकृतागामी, अनागामी तथा अर्हत। जिस किसी ने पहले तीन स्तर प्राप्त कर लिए हैं, अगले स्तर पर बढ़ सकता है, अपनी साधना के अनुसार। सम्पूर्ण सम्बोधि के लिए दस बाधाओं अथवा बेड़ियों को हटाना होगा।

दस बाधाएं:

1. **सत्कायदिट्ठिका:** अर्थात् उच्छेदवाद या शाश्वतवाद इन दो अतियों में विश्वास। उच्छेदवादी दृष्टि मृत्यु के साथ ही सब कुछ नष्ट हो जाने में विश्वास करती है। और शाश्वतवादी दृष्टि मृत्यु के बाद भी एक शाश्वत-अमर आत्मा* की विद्यमानता में विश्वास करती है।
2. **विचिकिच्चा:** अर्थात् शंका-कुशंका, बुद्ध की शिक्षाओं के प्रति, विशेषतः उनके द्वारा उपदेशित कर्म, कर्म फल व पुनर्भव में अविश्वास।
3. **शीलव्रतपरामर्श :** शील, पूजा, वन्दना इत्यादि वाह्य धर्मांगों को ही सम्पूर्ण धम्म समझना। यह विश्वास कि बलि, कर्मकाण्ड या अनुष्ठान से व्यक्ति पवित्र होता है।
4. **कामराग:** कामासक्ति अर्थात् ऐन्द्रिक सुखों के प्रति आसक्ति।
5. **व्यापाद:** क्रोध और द्वेष भावना।
6. **रूपराग:** रूप जगत में अस्तित्व की लालसा अर्थात् देवलोक, देवयोनि में अस्तित्व की इच्छा।
7. **अरूपराग:** सूक्ष्म जगत में अस्तित्व की इच्छा।
8. **मान:** अर्थात् दर्प, घमण्ड, अहंकार, दम्भ।
9. **औधत्य:** अस्थिरता, दृढ़ संकल्प का अभाव।
10. **अविद्या:** अज्ञानता व मोह।

*इसको स्व के आभास के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिये, जिससे सम्पूर्ण सम्बोधि के बाद अर्हत भी मुक्त हो जाते हैं।

उपरोक्त दस में से जो प्रथम तीन बन्धनों को सम्पूर्णता से तोड़ दे, उसे स्रोतापन्न कहते हैं। स्रोतापन्न अर्थात् धम्म के स्रोत में उतर जाना। स्रोतापन्न वे लोग हैं, जिन्हें अधिकतम सात बार जन्म लेना पड़ सकता है, पूर्ण बुद्धत्व के पहले वे निर्वाण के “स्रोत में उतर” चुके हैं। उनके बचे हुए जन्मों में वे केवल मनुष्य या स्वर्गीय क्षेत्र में उत्पन्न होंगे तथा निम्न क्षेत्रों में कभी नहीं। स्रोतापन्न ने पहले तीन अवरोध समूल नष्ट कर दिए होते हैं। परन्तु उनको अभी लम्बा सफ़र तय करना है, क्योंकि अभी अगले दो अवरोध क्षीण करने हैं या बाकी के सब अवरोध समूल नष्ट करने हैं।

स्रोतापन्न की एक पहचान यह है कि वे पाँच शीलों का कड़ाई से पालन करते हैं, लेकिन बिना कठिनाई के, तथा वे किसी प्रकार के हानिकारक कर्मों में पूर्णतया अनिच्छुक रहते हैं। उनका दूसरा लक्षण है कभी न विचलित होने वाली श्रद्धा—बुद्ध, धम्म तथा संघ में। ये लक्षण प्राकृतिक रूप से प्रकट हो सकते हैं, संभवतया पूर्व जन्मों से लाए गये हों या वर्तमान जीवन में उन्नत किए गए हों, आष्टांगिक मार्ग के गहन अभ्यास से।

उपरोक्त वर्णित दस बन्धनों में से जो प्रथम पाँच बन्धनों को तोड़ दे, लेकिन चौथा व पाँचवाँ बन्धन अर्थात् कामराग और व्यापाद बन्धन थोड़ा शिथिल रह जाये, उसे सकृतगामी कहते हैं। सकृतगामी का अर्थ होता है—जो अभी एक जन्म और लेगा और वह जन्म अन्तिम होगा। कामराग व व्यापाद की शेष इच्छा ही उसके एक और जन्म का कारण बनती है, लेकिन वह जन्म अन्तिम होता है। सकृतगामी सम्बोधि को उपलब्ध होने के पूर्व मनुष्य या देव लोक में केवल एक जन्म और लेंगे। अनागामी उन्हें कहते हैं जो प्रथम पाँच बन्धनों को सम्पूर्णता से तोड़ देता है और शेष पाँच बन्धन शिथिल रहते हैं। अनागामी अर्थात् जो जा कर अब आयेगा नहीं। वह मनुष्य लोक में फिर जन्म नहीं लेता। वह अपनी शेष साधना देव लोक में पूरी करता है। अनागामी, फिर न लौटने वालों का बड़े ऊँचे तथा विशुद्ध देव लोक में अन्तिम जीवन होगा तथा वे उस लोक में सम्पूर्ण बुद्धत्व प्राप्त कर लेंगे। और जो दस बन्धनों को सम्पूर्णता से तोड़ देता है, उसे अर्हत या अरहन्त कहते हैं। अर मायने होता है शत्रु और हन्त

अर्थात् मारना। जिसने दस बन्धनों के शत्रुओं को एकदम मार दिया वह अर्हत! भगवान बुद्ध अर्हत हैं।

अर्हत ने सफलतापूर्वक दसों अवरोध नष्ट कर दिए हैं तथा पूर्ण बुद्धत्व को प्राप्त हैं। उन्होंने अपने को पुनर्भव से मुक्त कर लिया है तथा निर्वाण अर्थात् निब्बान को उपलब्ध हो गये हैं।

हम सब को अथक प्रयास करना चाहिए कि कम से कम स्रोतापन्न हो जाएं। यह अवश्य ही सच्चे बौद्धों की पहुँच में है, चाहे वे भिक्षु हों, भिक्षुणी हों या उपासक हों, जिन्होंने जीवन में धम्म को मान्यता दी है तथा आष्टांगिक मार्ग के अनुसार रहते हैं। प्रतिबद्धता तथा ईमानदारी से ये बिल्कुल इसी जीवन काल में प्राप्त किया जा सकता है।

धम्म मार्ग के फल

अर्हत्व को उपलब्ध व्यक्ति के धम्म मार्ग के सर्वोच्च फल अथवा परम मंगल निम्नवत हैं। जबकि हम यह सब मंगल अभी पूरी तरह न भी प्राप्त कर सकें, कम से कम हम इस योग्य तो हो जाएंगे कि निब्बान के इन फलों का स्वाद और अनुभव जान सकें। निब्बान का मात्र थोड़ा-सा स्वाद लेने से भी हम आगे बढ़ने का प्रयास करने को उत्साहित होंगे।

35. लोक धर्मों से अविचलित रहना

हमारे जीवन में सदा उतार-चढ़ाव आता रहेगा, कभी सुखदायी, कभी दुःखदायी। यह अस्तित्व की प्रकृति ही है कि परिवर्तन सदा चलता रहता है तथा हमारे जीवन से सम्बन्धित बदलाव एक सिरे से दूसरे सिरे के बीच ऊपर नीचे होते रहते हैं। अपने अस्तित्व की सदा परिवर्तनशील प्रकृति जानकर तथा उपेक्षा का अभ्यास कर हम इन सांसारिक परिस्थितियों से प्रभावित न होने योग्य हो जाते हैं।

आठ लोक धर्म

लाभ तथा हानि
मान तथा अपमान

प्रशंसा तथा निन्दा
सुख तथा दुःख

36. दुःख से मुक्त होना

शोक, सन्ताप, दुःख, चिन्ता हमारे जीवन के अंग हैं तथा वे उपजते हैं आसक्ति और लगाव से, जो हम उन वस्तुओं (व्यक्तियों, विचारों) से रखते हैं, जिनको हम चाहते हैं और प्रेम करते हैं। प्रबुद्ध परिवर्तनशीलता को जानते हैं कि जो कुछ सृजित होता है, अवश्य ही विनाश को भी प्राप्त होता है। इस सत्य का सीधा सामना करने से तथा प्रज्ञापूर्वक जानने से व्यक्ति दुःख से मुक्त होगा।

37. क्लेष विमुक्ति

सब दुःख तथा असन्तुष्टि के मूल कारण हैं लोभ, द्वेष तथा मोह के क्लेष। क्लेषों के अतिसूक्ष्म पहलू भी समूल नष्ट करने चाहिए। इन सूक्ष्म पहलुओं में आते हैं तृष्णा, आसक्ति, द्वेष, चिड़चिड़ाहट, अरूचि तथा अविद्या। जो सम्बन्ध को प्राप्त होते हैं, वे इन क्लेषों से पूर्णतया मुक्त होते हैं।

38. स्थाई शान्ति तथा सुरक्षा प्राप्त करना

हमारे लौकिक अस्तित्व की निरन्तर परिवर्तित होती हुई तथा असन्तोषजनक प्रकृति के विरुद्ध, निर्वाण की सुख-शान्ति स्थिर है। निर्वाण का थोड़ा-सा भी स्वाद फिर कभी लुप्त नहीं होता। अतः निर्वाण को उपलब्ध होना ही सम्पूर्ण शान्ति और सुरक्षा का महामंगल प्राप्त करना है।

संक्षेप में :

वे, जो इस शिक्षा का आचरण करेंगे,
वे परम सुरक्षा स्थापित कर लेंगे,
तथा वे कहीं भी हों असीम सुख प्राप्त कर लेंगे,
ये हैं 38 महामंगल।



इन 38 मंगलों का संवर्धन कर हम सब मंगलमय जीवन का आनन्द ले सकते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि बुद्ध के मंगलसुत्त के प्रवचन के
उपरान्त कई प्राणियों को स्रोतापन्न,
सकृतागामी तथा अनागामी पद का लाभ हो गया था।



संदर्भ:

- A Discourse on the Ariyavasa Sutta - Ven. Mahasi Sayadaw
- An Exposition of the Mangala Sutta - Bikkhu Pesala
- Liberation - Relevance of Sutta - Vinaya - Ven. Dhammavuddho Thera
- Life's Highest Blessings - Dr. R.L. Soni
- Mangala Sutta - Ven. K. Gunaratana
- Mangala Sutta - Narada Thera
- Mangala Sutta - Piya Tan
- Managla Sutta - Thanissaro Bikkhu
- Mangala Sutta - Ven. Sayadaw Ashin Nyanissara
- Managala Sutta Vanana - Ven. K.Gunaratana
- The 38 Blessings - Ven. U Nanadicca Maha Thera
- The 38 Supreme Blessings - Punnadhammo Bikkhu
- The Workings of Kamma - Pa-Auk Tawya Sayadaw
- These are the Highest Blessings - Kathryn Guta





सारांश

बुद्ध जानते थे कि हर कोई गहन आध्यात्मिक अभ्यास के लिए तैयार नहीं है और न इस योग्य है। अधिकतर घर-परिवार के हिस्से बन कर संतुष्ट हैं या अपना व्यापार चलाने में या सामाजिक कार्यकलापों में सन्तुष्ट हैं तथा आनन्द मानते हैं। बुद्ध ने कहा कि इसमें कोई दोष नहीं है कि लोग अपने परिवार में तथा भौतिक सम्पत्ति में आनन्दित हों और जीवन में सुख प्राप्त करें।

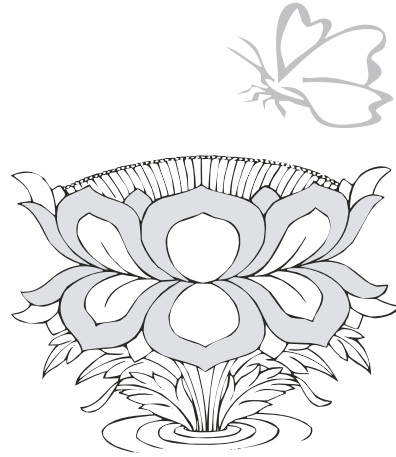
परन्तु उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि अपने सुख की प्राप्ति अन्धों का हक मार कर नहीं होनी चाहिए। ऐसी प्रसन्नता अल्पकालिक होगी और अन्ततः हमें दुःख ही देगी। दूसरों की अकारण ही सहायता कर तथा प्रसन्न करने से न केवल हमारी अपनी प्रसन्नता सुरक्षित रहेगी वरन् आने वाले समय में लम्बी अवधि तक बनी रहेगी।

यह कोई भी देख सकता है कि इस पुस्तिका की अधिकतर बातें बिल्कुल सीधी-साधारण हैं। दुर्भाग्यवश हम में से अधिकतर इन सब को अपने जीवन में लागू नहीं करते हैं! यह शिक्षाएं हम को दिशा दिखाती हैं तथा याद दिलाती हैं कि कैसे हमको अपने कल्याण के लिए तथा समाज कल्याण के लिए जीवनयापन करना है।

इन शिक्षाओं को भली प्रकार विचार करने तथा पालन करने से लगभग हमारे लिए सुख शान्ति निश्चित हो जाती है, साथ ही हमारे परिवार और समाज के लिए। इस प्रकार इस वर्तमान जीवन में तथा भविष्य के कई जीवनों के लिए और अधिक सुख-शान्ति की परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं। और वे लोग जो इन शिक्षाओं को लगन से तथा ईमानदारी से पालन करते हैं, उनके लिए निवारण का परम मंगल, बस कुछ ही समय की बात है।

बुद्ध की शिक्षाओं को पालन करके देखें तो सही । एक प्रयास करें तथा स्वयं उनका असर देखें । और यदि शिक्षाएँ आपके लाभ के लिए हैं, तो उनके भी अपने भले के लिए, अपने परिवार तथा मित्रों को सहभागी बनाएं ।

**भगवान बुद्ध ने मार्गदर्शन कर दिया है ।
हमें मात्र मार्ग पर चलने की आवश्यकता है !**



परिशिष्ट 1

सिगालोवाद सुत्त सिगाल को उपदेश

गृहस्थों की आचार संहिता

पालि से अनुवादित

नारद धेरा

(कैंडी : बुद्धिस्ट पब्लिकेशन सोसायटी, 1985)

ऐसा मैंने सुना :

एक समय भगवान राजगृह के वेणुवन के कलन्दक निवाप में विहार करते थे। अब उसी समय, युवा सिगाल, एक गृहस्थ का पुत्र, सवेरे जल्दी उठकर, राजगृह से चल कर, गीले कपड़े तथा गीले बाल, हाथ जोड़कर कई दिशाओं की पूजा करता था - पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, आकाश तथा पाताल।

तब भगवान्, पूर्वाद्ध में चीवर पहन भिक्षापात्र तथा चीवर लेकर, राजगृह में भिक्षाटन के लिए निकले। अब उन्होंने युवा सिगाल को इस प्रकार पूजा करते देखा तथा उसे इस प्रकार सम्बोधित किया :

“किस कारण तुम युवा गृहपति, सवेरे जल्दी उठ, गीले कपड़े तथा गीले बाल लिए, राजगृह से निकल, हाथ जोड़कर इन भिन्न दिशाओं की—पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, आकाश तथा पाताल की पूजा करते हो ?”

“मेरे पिता ने, भगवान्, देहपात के समय मुझे कहा था: छहों दिशाएं, प्रियपुत्र,

तुम पूजोगे। तथा, मैं, भगवान् अपने पिता के आदेश को सत्कार, मान, गुरुकार पूजा भाव देते हुए, सवेरे जल्दी उठ, गीले कपड़ों, बालों से राजगृह को छोड़, छहों दिशाओं को हाथ जोड़ कर पूजता हूँ।”

“ऐसे नहीं, युवा गृहस्थ, छः दिशाओं का पूजन आर्य विनय के अनुसार होना चाहिए।”

“फिर कैसे, भगवान्, आर्य विनय के अनुसार, छः दिशाओं की पूजा की जाए? अच्छा हो, देव, यदि भगवान् मुझे धम्म सिखाएँ, यह दिखाते हुए कि कैसे छः दिशाओं का पूजन आर्य पद्धति के अनुसार किया जाना चाहिए।”

“अच्छा, युवा गृहस्थ सुनो! तथा भली प्रकार मन में धारण कर लो, मैं बोलता हूँ।”

“बहुत अच्छा देव”, युवा सिगाल ने उत्तर दिया।

“गृहपति पुत्र सिगाल, जब किसी आर्य धम्मनुयायी श्रावक के चार कर्म क्लेश नष्ट हो गये रहते हैं, चार स्थानों से वह पाप कर्म करने की स्थिति में नहीं रहता और भोगों के छः दुर्गति मार्गों का सेवन नहीं करता—तब वह इन चौदह पापों से विरत रह कर, छहों दिशाओं को आच्छादित कर, उभयलोक की विजय प्राप्ति में लग जाता है, तब उसका यह लोक सुसेवित हो ही जाता है और परलोक भी। वह देहच्युति के बाद मरणान्तर सुगतिमय स्वर्ग लोक में उत्पन्न होता है।

(1) कौन-से चार कर्म क्लेश नष्ट हो गये रहते हैं? प्राणीहत्या, गृहपति, एक बुराई है, तथा इसी प्रकार है चोरी, काम दुराचार तथा झूठ बोलना। यह वे चार कर्म क्लेश हैं, जिनको उसने समूल नष्ट कर दिया है।”

भगवान् ने ऐसा कहा। तथा जब गुरुवर यह कह चुके, उन्होंने फिर आगे कहा :

“प्राणी हत्या, चोरी, झूठ तथा काम दुराचार

इन चार बुराईयों की पण्डितजन प्रशंसा नहीं करते

(2) किन चार स्थानों से वह पाप कर्म नहीं करता? तृष्णा के वश में आकर ही कोई पाप कर्म करता है। क्रोध के वश में आकर ही कोई पाप करता है। अविद्या के वश में आकर ही कोई पाप करता है। भय के वश में आकर ही कोई पाप करता है।

“पर जहाँ तक आर्य श्रावक तृष्णा, क्रोध, अविद्या तथा भय के वशीभूत नहीं होता, वह कोई पाप नहीं करता।

“जो कोई तृष्णा, द्वेष या भय,

या अविद्या वश धम्म का अतिक्रमण करेगा

उसका सारा यश क्षीण हो जाएगा

कृष्ण पक्ष के चन्द्रमा की तरह।

जो कोई तृष्णा, द्वेष या भय

या अविद्या के कारण धम्म का कभी अतिक्रमण नहीं करता

उसका सब यश बढ़ेगा

शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह।

(3) धन विनाश के कौन-से छः कारण हैं, जिनका वह सेवन नहीं करता?

(क) नशीले पदार्थों के सेवन में लिप्त होना, जिससे मूढ़ता तथा प्रमाद उत्पन्न होता है;

(ख) असमय गलियों में मटरगश्ती करना;

(ग) जुए में लिप्त होना, जिससे लापरवाही उत्पन्न होती है;

(घ) बुरे साथियों से सांठ-गांठ रखना;

(ङ) आलस्य की आदत;

(क) युवा गृहस्थ, नशीले पदार्थों की लिप्तता के यह छः दुष्परिणाम हैं, जो

मूढ़ता तथा प्रमाद उत्पन्न करते हैं:

(1) धन की हानि

(2) झगड़ों की वृद्धि

(3) रोगों की संभावना

(4) अपयश अर्जित करना

(5) लज्जाहीन अंग प्रदर्शन

(6) प्रज्ञा की दुर्बलता

(ख) यह हैं युवा गृहस्थ, छः दुष्परिणाम असमय गलियों में मटरगश्ती के:

(1) वह स्वयं बचाव तथा सुरक्षा से रहित होता है,

(2) उसकी पत्नी तथा बच्चे सुरक्षा तथा बचाव रहित होते हैं,

(3) उसकी सम्पत्ति बचाव तथा सुरक्षा रहित होती है,

(4) उस पर बुरे कामों में लिप्त होने की शंका बनती है, [3]

(5) उस पर गुलत अफवाहों की संभावना होती है,

(6) वह कई मुसीबतों में पड़ता है,

(ग) यह हैं युवा गृहस्थ, छः हानियां नाच-तमाशे का आदी होने की, वह यही सोचता रहता है:

(1) नृत्य कहाँ पर चल रहा है?

(2) गायन कहाँ चल रहा है?

(3) संगीत कहाँ चल रहा है?

(4) काव्य-गान कहाँ चल रहा है?

(5) मंजीरा वादन कहाँ है?

(6) कुम्भवादन कहाँ है? [4]

(घ) यह हैं युवा गृहस्थ, जुए में लिप्त होने की छः हानियाँ :

- (1) जीतने वाला द्वेष का कारण बनता है,
 - (2) हारने वाला धन जाने से शोक करता है,
 - (3) धन की हानि,
 - (4) कानून की अदालत में उसकी बात की अवहेलना की जाती है,
 - (5) वह अपने मित्रों तथा सहयोगियों द्वारा तिरस्कृत होता है,
 - (6) शादी-ब्याह के विषय में उसे पसन्द नहीं किया जाता, क्योंकि लोग कहेंगे कि वह जुआरी है तथा पत्नी के भरण-पोषण योग्य नहीं है ।
- (ड) यह हैं युवा गृहस्थ, छः दुष्परिणाम बुरे लोगों की संगति के, जैसे: आवारा, जुआरी, शराबी, कृतघ्न, धोखेबाज़, अपराधी, छहों में कोई भी उसका मित्र बन जाता है ।
- (च) यह हैं युवा गृहस्थ, छः दुष्परिणाम आलस्य के अधीन होने के । वह कोई काम नहीं करता, यूँ कह कर:
- (1) कि ठंड बहुत ज़्यादा है,
 - (2) कि गर्मी बहुत ज़्यादा है,
 - (3) कि शाम हो गई, बहुत देर हो गई,
 - (4) कि सुबह-सवेरे, बहुत जल्दी है,
 - (5) कि उसे बहुत भूख लगी है,
 - (6) कि वह अधिक ही खा गया है ।

इस प्रकार जीने से, वह कई कर्तव्यों को नहीं करता, नया धन वह कमाता नहीं, जो उसने कमा रखा है धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है ।”

भगवान ने ऐसा कहा, तथा जब गुरुवर यह कह चुके, उन्होंने फिर आगे कहा :

“एक बोतल का दोस्त होता है; वह “दोस्त, दोस्त” केवल कहता है, खाली मुँह पर वह साथी तथा दोस्त है, केवल अपने लाभ के लिए ।

सूर्योदय तक सोना, पति/पत्नी से यौन विश्वासघात, चिड़चिड़ापन, दूसरों का नुकसान चाहने वाला, बुरे साथी, लालच—ये छः कारण मनुष्य का सर्वनाश करते हैं ।

जिस व्यक्ति के बुरे सहयोगी तथा मित्र होते हैं, पापाचार में लिप्त होता है, वह दोनों लोकों में नष्ट-भ्रष्ट होता है—इस लोक में तथा परलोक में ।

जुआ, (पर) नारी, शराब, नृत्य, गाना-बजाना, दिन में सोना, असमय का घुमक्कड़पन, बुरी संगत, लोभ—यह नौ कारण [5] व्यक्ति को बर्बाद करते हैं ।

जो जुआ खेलता है तथा नशा करता है, पराई स्त्री से सांठ-गांठ रखता है, जो अन्यो को प्राणप्रिय हैं, नीच लोगों की संगत करता है तथा पण्डितों की संगत नहीं करता—वह अवनति को प्राप्त होता है, जैसे कि कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा ।

जो नशे में है, गरीब है, मोहताज है, पियक्कड़ है, शराबखानों में जाता रहता है, कर्ज में ऐसे डूब जाता है जैसे पानी में पत्थर, जल्दी ही अपने परिवार को बदनाम कर लेता है ।

जो आदतन दिन में सोता है, रात को देर तक जागता है, सदा नशे में रहता है, व्यभिचारी है, वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के योग्य नहीं है ।

जो कहता है बहुत गर्मी है, बहुत ठंडा है, बहुत देर हो गई है और कार्यों को अधूरा छोड़ देता है, ऐसे मनुष्यों के अवसर सदा के लिए हाथ से निकल जाते हैं ।

परन्तु जो सदी-गर्मी की तनिक भी परवाह नहीं करता और जो अपना कर्तव्य पुरुषार्थपूर्वक करता है, वह सुख से कभी वंचित नहीं होता ।

यह चार, युवा गृहपति, मित्र के रूप में शत्रु समझने चाहिए :

- (1) वह मित्र, जो धन सम्पत्ति हड़पता है ।
 - (2) जो केवल बातें बनाने वाला है,
 - (3) जो चापलूसी करता है,
 - (4) जो विनाश का कारण बनता है ।
- (1) चार प्रकार से, तरुण गृहस्थ, हड़पने वाले को, मित्र के रूप में शत्रु समझना चाहिए :
- (क) वह मित्र की सम्पत्ति हड़पता है,
 - (ख) वह देता तो कम है और मांगता अधिक है,
 - (ग) वह भय के वश कर्तव्य निभाता है,
 - (घ) वह अपने लाभ के कारण ही साथ जुड़ता है ।
- (2) चार प्रकार से, तरुण गृहस्थ, बातूनी को मित्र के रूप में शत्रु समझना चाहिए:
- (क) बीते समय की मित्रता की बात करता है,
 - (ख) भविष्य की मित्रता की बात करता है,
 - (ग) वह खोखली बातों से ही लाभ उठाना चाहता है,
 - (घ) जब उसकी सहायता की आवश्यकता होती है तो अपनी असमर्थता जताता है ।
- (3) चार प्रकार से, तरुण गृहस्थ, चापलूसी करने वाले को मित्र के रूप में शत्रु समझना चाहिए:
- (क) वह मित्र के अकुशल कार्यों का समर्थन करता है,
 - (ख) वह मित्र के कुशल कार्यों का समर्थन नहीं करता,
 - (ग) वह उसके सामने उसकी प्रशंसा करता है,

(घ) वह पीठ पीछे उसकी निन्दा करता है ।

- (4) चार प्रकार से, तरुण गृहस्थ, जो बर्बादी का कारण बनता है, उसे मित्र के रूप में शत्रु समझना चाहिए:
- (क) वह नशीले पदार्थों के सेवन का साथी है, जिनके सेवन से प्रमाद तथा मूढ़ता उत्पन्न होती है,
 - (ख) वह असमय गलियों में मटरगश्ती करने का साथी है,
 - (ग) वह नाच-तमाशे की लत का साथी है,
 - (घ) वह जुआ खेलने का साथी है, जिस कारण प्रमाद पैदा होता है।”

भगवान ने ऐसा कहा, तथा जब गुरुवर यह कह चुके, उन्होंने फिर आगे कहा :

“मित्र, जो पर-धन-हारी है
मित्र, जो बातों से मोहता है
मित्र, जो झूठी प्रशंसा करता है
मित्र, जो विनाश का कारण बनता है
इन चार को पण्डितजन शत्रु समझते हैं,
उन्हें दूर से छोड़ दो जैसे भययुक्त मार्ग।

यह चार, तरुण गृहपति, सुहृदय मित्र समझने चाहिए :

- (1) वह, जो उपकारी है
 - (2) जो सुख-दुःख में साथ है
 - (3) जो नेक सलाह देता है
 - (4) जो सहानुभूति रखता है
- (1) चार प्रकार से, तरुण गृहस्थ, एक उपकारी को सुहृदय मित्र समझना चाहिए :

- (1) वह अरक्षित की रक्षा करता है
 - (2) वह अरक्षित सम्पत्ति का संरक्षण करता है
 - (3) जब तुम खतरे में होते हो, वह तुम्हारी शरण बन जाता है,
 - (4) सहयोग की आवश्यकता के समय वह आवश्यकता से दुगुना सहयोग करता है ।
- (2) चार प्रकार से, तरुण गृहस्थ, जो सुख-दुःख में सम है, उसे सुहृदय मित्र समझना चाहिए :
- (1) वह अपने रहस्य की बातें बता देता है,
 - (2) तुम्हारे रहस्यों को नहीं खोलता,
 - (3) मुसीबत में तुम्हारा साथ नहीं छोड़ता,
 - (4) वह तुम्हारे लिए जीवन तक बलिदान कर सकता है
- (3) चार प्रकार से, तरुण गृहस्थ, नेक सलाह देने वाले को सुहृदय मित्र समझना चाहिए :
- (1) वह पाप करने से रोकता है,
 - (2) वह पुण्य के लिए उत्साहित करता है,
 - (3) वह उस ज्ञान को बताता है, जो ज्ञात नहीं है,
 - (4) वह सद्गति का मार्ग प्रशस्त करता है
- (4) चार प्रकार से, तरुण गृहस्थ, सहानुभूति रखने वाले को सुहृदय मित्र समझना चाहिए :
- (1) वह तुम्हारे दुःख से सुखी नहीं होता,
 - (2) वह तुम्हारे सुख से सुखी होता है,
 - (3) वह तुम्हारी बुराई करने वाले को रोकता है,

- (4) वह तुम्हारे प्रति अच्छा कहने वालों की प्रशंसा करता है तथा कैसे तरुण गृहस्थ, एक आर्य शिष्य छः दिशाओं को आच्छादित करता है? ”

भगवान ने इस प्रकार कहा, और जब गुरुवर ऐसा कह चुके तो वे आगे फिर बोले :

“मित्र जो सहायक है
मित्र सुख तथा दुःख का
मित्र नेक सलाह देने वाला
मित्र जो सहानुभूति भी रखता है
यह चार प्रकार के मित्रों को पण्डितजन मित्र कहते हैं
तथा उनका सत्कार पूर्वक पोषण करना चाहिये
जैसे माँ पोषण करती है
अपने स्वयं के बच्चे का ।

पण्डित और सदाचारी जलती आग सम चमकते हैं ।
वह जो बिना किसी की हानि कर धन संचय करता है
मधुमक्खी सरीखा है जो मधु एकत्र करती है [6]
उसकी सम्पत्ति खूब बढ़ती है
दीमक की तेज़ बढ़ती बांबी की तरह ।

इस प्रकार धन संचय से
एक योग्य गृहस्थ कुलपुत्र
चार भागों में धन विभाजित करता है :
इस प्रकार वह मित्र लाभ प्राप्त करेगा ।
एक भाग वह अपनी आवश्यकता पर व्यय करता है [7]

दो भाग अपने काम-काज पर लगाता है
चौथा आकस्मिकता हेतु बचा रखता है।

इन को इस प्रकार से छः दिशाओं के रूप में देखना चाहिए। माँ-बाप को पूर्व समझकर देखना चाहिए, गुरुजनों को दक्षिण, पत्नी-बच्चों को पश्चिम, मित्र तथा संगियों को उत्तर, नौकर-चाकरों को पाताल, साधु तथा श्रमणों को आकाश [8]

पाँच प्रकार से, तरुण गृहस्थ, एक बच्चे को पूर्व दिशा की तरह माँ-बाप के प्रति अपेक्षित कार्य करने चाहिए :

- (1) उन्होंने मेरा भरण-पोषण किया, मैं उन्हें सहारा दूँगा,
- (2) मैं इनके कार्य निभाऊँगा,
- (3) मैं कुल की परम्परा कायम रखूँगा,
- (4) मैं विरासत के योग्य बनूँगा,
- (5) इसके अतिरिक्त मैं दिवंगत सम्बन्धियों के आदर हेतु दान-पुण्य करूँगा [9]

पाँच प्रकार से, तरुण गृहस्थ, माँ-बाप इस प्रकार अपेक्षित कार्यों से अपने बच्चों द्वारा पूर्व की तरह सेवित हो, अपनी अनुकम्पा दिखाते हैं:

- (1) वे उनको बुराई से रोकते हैं,
- (2) वे उन्हें कुशल कर्मों के लिए प्रेरित करते हैं,
- (3) वे उन्हें शिल्प-शिक्षा आदि सिखाते हैं,
- (4) वे उचित विवाह का प्रबन्ध करते हैं,
- (5) उचित समय पर वे उनको अपना उत्तराधिकार निष्पादन करते हैं।

इन पाँच विधियों से बच्चे माँ-बाप, जो पूर्व दिशा की तरह हैं, के प्रति अपेक्षित कार्य करते हैं तथा माँ-बाप अपनी अनुकम्पा बच्चों पर दिखाते हैं। इस प्रकार

पूर्व दिशा को पूरित करते हैं तथा सुरक्षित और क्षेमयुक्त करते हैं।

पाँच प्रकार से, युवा गृहस्थ, एक शिष्य अपने गुरु की अपेक्षित सेवा करता है, दक्षिण की तरह :

- (1) आसन से नमन पूर्वक तत्पर उठ कर,
- (2) उसकी सेवा-शुश्रूषा से,
- (3) सीखने में रुचि दिखा कर,
- (4) व्यक्तिगत सेवा से,
- (5) निर्देश प्राप्त करते समय आदरपूर्वक स्मृतिमान हो कर।

पाँच प्रकार से, तरुण गृहस्थ, शिष्यों द्वारा दक्षिण दिशा के रूप में सेवित गुरुजन अनुकम्पा करते हैं :

- (1) वे उन्हें सर्वोत्तम विनय (अनुशासन) देते हैं,
- (2) वे सुनिश्चित करते हैं कि वे भली प्रकार शिक्षा समझें,
- (3) वे उन्हें कला तथा विज्ञान सिखाते हैं,
- (4) वे उन्हें अपने मित्रों तथा सहयोगियों से मिलवाते हैं,
- (5) वे हर ओर उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध करते हैं।

अपने शिष्यों द्वारा, दक्षिण दिशा के रूप में, इस प्रकार सेवित हो इन पाँच प्रकार से उन पर अनुकम्पा करते हैं। इस प्रकार उनके द्वारा दक्षिण दिशा पूरित होती है, सुरक्षित तथा क्षेमयुक्त होती है।

पाँच प्रकार से, हे तरुण गृहस्थ, एक पति को अपनी पत्नी की पश्चिम दिशा के रूप में सेवा करनी चाहिये:

- (1) उसके प्रति विनम्र होकर,
- (2) उसका तिरस्कार न कर,

- (3) उसके प्रति निष्ठावान रह कर,
- (4) उसको अधिकार प्रदान कर,
- (5) उसको अलंकार प्रदान कर ।

पत्नी, पति के द्वारा, पश्चिम की तरह इस प्रकार सेवित हो कर पति को पाँच प्रकार से सहयोग देती है:

- (1) वह अपना काम दक्षतापूर्वक करती है,
- (2) वह परिजनों तथा नौकर-चाकरों का ख्याल रखती है,
- (3) वह निष्ठावान होती है,
- (4) वह अर्जित की रक्षा करती है,
- (5) वह अपने कार्यों में आलस्यरहित तथा दक्ष होती है ।

इन पाँच प्रकार से पत्नी अपने पति पर अनुकम्पा करती है, जो उसके प्रति अपने बच्चों द्वारा पूर्व की तरह अपेक्षित कार्य करता है। इस प्रकार पश्चिम दिशा उसके द्वारा पूरित होती है तथा सुरक्षित और क्षेमयुक्त रहती है ।

पाँच प्रकार से, तरुण गृहस्थ, एक कुल पुत्र को अपने मित्रों तथा सहयोगियों के प्रति अपेक्षित कार्य करने चाहिए, उत्तर दिशा की तरह पूरित करना चाहिए :

- (1) मुक्त हस्त से दान द्वारा,
- (2) प्रिय बातचीत से,
- (3) सहयोगी बनने से,
- (4) पक्षपात न करने से,
- (5) विश्वास प्रदान करने से ।

मित्र तथा सहयोगी कुलपुत्र द्वारा अपेक्षित कार्यों से अनुग्रहीत हो, उत्तर की तरह, उसको पाँच प्रकार से सहयोग प्रदान करते हैं:

- (1) प्रमाद या भूल करने पर रक्षा करते हैं,

- (2) प्रमत्त होने पर वे उसकी सम्पत्ति की रक्षा करते हैं,
- (3) संकट आने पर वे उसे शरण देते हैं,
- (4) मुसीबत में उसका साथ नहीं छोड़ते,
- (5) अन्य साधारणजन भी ऐसे मित्र, आमाल्य वाले का सत्कार करते हैं ।

मित्र तथा सहयोगी, इन पाँच प्रकार से कुल-पुत्र द्वारा, अपेक्षित कार्यों से उत्तर की तरह अनुग्रहीत हो उसको अपना सहयोग प्रदान करते हैं। इस प्रकार उत्तर दिशा सुरक्षित, क्षेमयुक्त एवं भयरहित होती है ।

पाँच प्रकार से स्वामी को नौकर चाकरों के प्रति, पाताल की तरह, कृपालु होना चाहिए :

- (1) उनकी योग्यता के अनुसार काम सौंप कर,
- (2) उन्हें भोजन तथा वेतन प्रदान कर,
- (3) बीमारी में उनका ख्याल कर,
- (4) उनको सुस्वादु भोजन बाँट कर,
- (5) उनको समयानुसार अवकाश दे कर ।

अपने स्वामी द्वारा इस प्रकार नौकर-चाकर, पाताल की तरह, अपेक्षित कार्यों से अनुग्रहीत हो, उस पर पाँच प्रकार से अनुकम्पा करते हैं:

- (1) वे, उससे पहले उठते हैं,
- (2) वे, उसके बाद सोते हैं,
- (3) वे, चोरी नहीं करते,
- (4) वे अपना काम दक्षता से करते हैं,
- (5) वे, उसका नाम और यश बढ़ाते हैं ।

अपने स्वामी द्वारा इस प्रकार, नौकर-चाकर, पाताल की तरह, अनुग्रहीत हो,

इन पाँच प्रकार से उसके हित में जुटते हैं । इस प्रकार वह पाताल को पूरित करता है तथा सुरक्षित एवं क्षेमयुक्त बनाता है ।

पाँच प्रकार से, तरुण गृहस्थ, गृहस्थ को साधुओं तथा श्रमणों के प्रति, आकाश की तरह, आदरवान होना चाहिए :

- (1) मैत्री भावयुक्त कायिक कर्म से,
- (2) मैत्री भावयुक्त वाचिक कर्म से,
- (3) मैत्री भावयुक्त मानसिक कर्म से,
- (4) उनके लिए अपने दरवाजे खुले रख कर,
- (5) उनकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर ।

साधु, संन्यासी, श्रमण, गृहस्थ द्वारा, इस प्रकार सेवित हो, आकाश की तरह, उस पर छः प्रकार से अनुकम्पा करते हैं :

- (1) वे, उसे बुराई से बचाते हैं,
- (2) वे, उसे अच्छाई में लगाते हैं,
- (3) वे, उसे कुशल मन आशीष देते हैं,
- (4) वे, उसे अश्रुत विद्या सुनाते हैं,
- (5) वे श्रुत को दृढ़ करते हैं,
- (6) वे स्वर्गसम चित्त दशा का मार्गदर्शन करते हैं ।

ऐसे छः प्रकार से साधु, संन्यासी, श्रमण गृहस्थ पर अपनी अनुकम्पा करते हैं, जिसने उन्हें आकाश की तरह सेवित किया है । इस प्रकार आकाश पूरित होता है तथा सुरक्षित और क्षेमयुक्त होता है ।”

भगवान ने ऐसा कहा, और जब गुरुवर ऐसा कह चुके तो फिर उन्होंने कहा :

“माता-पिता पूर्व हैं,
गुरुजन दक्षिण हैं,

पत्नी तथा बच्चे पश्चिम हैं,
मित्र-सहयोगी उत्तर हैं,
नौकर-चाकर और अधीनस्थ व आश्रित,
नीचे की दिशा, अर्थात् पाताल हैं,
संन्यासी, श्रमण आकाश हैं,
जो गृहस्थी चलाने योग्य है,
इन छः दिशाओं को नमन करे !

जो पण्डित तथा गुणवान है,
सरल तथा कुशल बुद्धि है,
विनीत तथा सहकारी है,
ऐसे व्यक्ति को यश प्राप्त होता है ।

जो ऊर्जावान है, आलसी नहीं है,
मुसीबत में स्थिरचित्त है,
दोष रहित आचारवाला तथा मेधावी है
ऐसे व्यक्ति को यश प्राप्त होता है ।

जो दूसरों का ख्याल रखने वाला तथा मैत्रीपूर्ण है,
मुक्तहस्त तथा निःस्वार्थी है,
मार्गदर्शक, प्रशिक्षक, नेतृत्व करने वाला है,
ऐसे व्यक्ति को यश प्राप्त होता ।

जो इस संसार में दान,
दूसरों के हित का निष्पादक,
प्रियभाषी तथा
प्रत्येक व्यक्ति में

यथायोग्य समता का व्यवहार करता है।

उसके ये गुण, चलते रथ की स्थिर नाभि के समान हैं।

यदि ये कारक गुण न हों

न माता पुत्र से मान-पूजा पा सके,

न पिता पुत्र से ।

क्योंकि पण्डितजन इन गुणों के संग्रह का पूरा ध्यान रखते हैं,

अतः वे समाज में प्रतिष्ठा व प्रशंसा पाते हैं।”

जब भगवान ऐसा बोल चुके, सिगाल, तरुण गृहस्थ, इस प्रकार बोला :
“साधु, भगवान, साधु ! यह तो ऐसा हो गया, भगवान, कि कोई व्यक्ति किसी उल्टी वस्तु को सीधा कर दे या छुपी बात स्पष्ट कर दे या भटके हुए को सही मार्ग दिखा दे या अंधेरे में दीपक दिखा दे, जिससे कि वे जिनकी आँखें हैं, देख सकें । ठीक ऐसे, भगवान ने धर्म को अनेकविध से स्पष्ट किया है; मैं शरणागत हूँ, भगवान, बुद्ध में, धम्म में तथा संघ में। भगवान मुझे उपासक की तरह स्वीकार करें, जिसने कि आज से ही, जीवन पर्यन्त शरण ले ली हो।”

दीघनिकाय संख्या 31

टिप्पणियाँ :

[1] कम्म-किलेस-साधारण अर्थ—चित्तमलों के कार्य

[2] ये चार अगतियाँ हैं, ‘बुराई के रास्ते’ :

छन्द (राग), द्वेष, मोह, भय

[3] दूसरों के लिए अपराध

[4] एक प्रकार का मनोरंजन

[5] मूल पालि भाषा में “छः दुर्गुण” लिखा है, लेकिन यहाँ संयुक्त शब्दों

यथा नृत्य-गीत को दो अलग-अलग शब्द मान कर “नौ दुर्गुण” लिखा है।

[6] धम्मपद गाथा 49: “जिस प्रकार फूल के वर्ण या गंध को क्षति पहुँचाए बिना भ्रमर (मधुमक्खी) रस को लेकर चल देता है, ऐसे गांव में मुनि विचरण करे।”

[7] इस भाग में वह भी सम्मलित है जो कुशल कर्मों पर व्यय किया जाता है, भिक्षुओं को भेंट तथा दान आदि ।

[8] यह प्रतीक जान-बूझ चुना गया है, जैसे पूर्व दिशा से दिन का उदय होता है, अतः जीवन माँ-बाप के संरक्षण से शुरू होता है; गुरुजनों को दिया जाने वाला शिक्षा शुल्क अर्थात् दक्षिणा और दक्षिण दिशा एक ही मूल शब्द से व्युत्पन्न हैं; घरेलू जिम्मेदारियों की शुरूआत होती है, जब किशोर युवा होता है, जैसे पश्चिम दिशा दिन की पूर्णता दर्शाता है; उत्तर अर्थात् ‘परे’ अर्थात् मित्रों के सहयोग से व्यक्ति विपत्तियों से परे हो जाता है”-राइस डेविस ।

[9] यह आर्यों का पवित्र रिवाज है, जो कभी पूर्वजों को नहीं भूलते । यह रिवाज अभी भी श्रीलंका में श्रद्धापूर्वक बौद्धों द्वारा निभाया जाता है, जो तीसरे माह के आठवें दिन, भिक्षुओं को दान-दक्षिणा देने का धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, इसी प्रकार पितरों के मृत्यु दिवस के अवसर पर हर साल अनुष्ठान करते हैं । इसके अतिरिक्त किसी भी पुण्यकार्य (अच्छा काम) के बाद एक बौद्ध अपने पितरों को नहीं भूलता तथा पुण्यानुमोदन करता है । बुद्ध के परामर्श के अनुसार माँ-बाप के प्रति ऐसी ही निष्ठा तथा कृतज्ञता ।

[10] शब्दार्थ ‘आस पास के लोग’ (परिजन)



परिशिष्ट 2

ब्यगघपज्ज सुत्त (दीघजानु सुत्त) कल्याण के साधन

पालि से अनुवाद

नारद धेरा

(कैण्डी : बुद्धिस्ट पब्लिकेशन सोसायटी, 1985)

अनुवादक की टिप्पणी : इस सूत्र में बुद्ध समृद्ध गृहस्थों को निर्देश देते हैं कि कैसे वे अपनी समृद्धि का संरक्षण तथा संवर्धन कर सकते हैं तथा कैसे धन के विनाश से बच सकते हैं। अकेला धन, हालांकि, एक सम्पूर्ण मानव नहीं बनाता, न ही समरसतापूर्ण समाज। धन का स्वामित्व अधिकतर मनुष्य की तृष्णा को कई गुणा बढ़ाता है तथा वह सदा के लिए धन एवं शक्ति संग्रह में ही लगा रह जाता है। यह बेलगाम तृष्णा, हालांकि, उसे असंतुष्ट ही छोड़ देती है तथा उसका आध्यात्मिक विकास अवरूद्ध कर देती है। साधन विहीनों की नाराज़गी के माध्यम से यह समाज में अन्तर्द्वंद तथा विसंगति को जन्म देती है, तृष्णा के असंयत परिणामों के द्वारा जो स्वयं को शोषित अनुभव करते हैं।

अतएव बुद्ध अपने भौतिक कल्याण के निर्देश के साथ चार आवश्यक आध्यात्मिक कल्याण के साधन संलग्न करते हैं:

शाश्वत के बुद्धत्व में विश्वास, शील, उदारता, प्रज्ञा। ये चार, मनुष्य के मन में उत्कृष्ट मूल्यों की एक अनुभूति भर देंगे। तब वह केवल अपना भौतिक हित ही नहीं साधेगा, वरन समाज के प्रति अपने कर्तव्य भी जानेगा। मात्र एक

निहितार्थ की ही बात की जाए; एक बुद्धिमान तथा प्रचुर उदारता को कार्यान्वित करना समाज में तनाव तथा संघर्षों को कम कर देगा।

अतः इन भौतिक तथा आध्यात्मिक निर्देशों का पालन समाज में एक आदर्श नागरिक का निर्माण करेंगे।



ऐसा मैंने सुना :

एक समय भगवान कोलिय प्रदेश के कर्करपत्र नामक कोलियों [1] के एक निगम में विहार करते थे। तब दीघजानु [2] नाम का कोलियपुत्र भगवान के निकट आया, आदरपूर्वक उनको नमन किया तथा एक ओर बैठ गया। ऐसे बैठ कर, उसने भगवान को निम्न प्रकार से सम्बोधित किया:

“भन्ते! हम गृहस्थजन काम भोगों में लिप्त रहने वाले, पुत्र-पौत्रों की भीड़ में अपनी जीवन यात्रा करते रहते हैं। माला, गन्ध-विलेपन करना, काशी के चन्दन का शरीर पर लेप, और सोने-चाँदी का संग्रह करना ही हमारा जीवन लक्ष्य बन गया है। हम जैसे लोगों के लिये भी, भन्ते! हे भगवान! आप ऐसे धम्म की देसना करें, जिस धम्म का आचरण कर हमारा यह जन्म भी हितकर-सुखकर हो और परलोक भी हितकर-सुखकर हो।”

संसारिक उन्नति के साधन

“चार साधन ब्यगघपज्ज, [3] एक गृहस्थ के इसी जीवन में मंगल तथा सुख के लिए सहायक होते हैं। कौन चार ?

“सतत प्रयास की उपलब्धि (उत्थानपाद-सम्पदा), उपलब्धि की रक्षा का सतत प्रयास (आरक्ष-सम्पदा), अच्छी मित्रता (कल्याण मित्रता) तथा संतुलित आजीविका (समजीविता)।

“निरन्तर प्रयास की उपलब्धि (उत्थानपाद-सम्पदा) क्या है?

“इसमें, ब्यग्घपज्ज, जिस किसी काम से गृहस्थ आजीविका अर्जित करता है, खेती से, व्यापार से, पशुपालन से, धनुर्विद्या से, राजा की नौकरी से या किसी और शिल्प से—वह उसमें पारंगत होता है तथा आलस्य नहीं करता। वह इस विवेक शक्ति से सम्पन्न होता है कि उचित तौर तरीके क्या हैं; वह कार्य में निपुण तथा दक्ष होता है। यह निरन्तर प्रयास की उपलब्धि उत्थानपाद-सम्पदा कहलाती है।

“आरक्ष-सम्पदा क्या है?

इसमें, ब्यग्घपज्ज, जो सम्पत्ति एक गृहस्थ के अधिकार में होती है, मेहनत से कमाई गई, बाहुबल से अर्जित की गई, पसीना बहाकर, सही तरीकों से, ईमानदारी से कमाई गई—देख-भाल करके ऐसा वह संचालन करता है तथा उस पर नज़र रख कर, ताकि राजा उसको हड़प न ले, चोर उसे चुरा न ले, आग उसे जला न दे, पानी उसे बहा न दे, न ही भटके हुए उत्तराधिकारी उसे ले उड़ें। यह आरक्ष-सम्पदा है।

“कल्याण मित्रता क्या है?

“इसमें ब्यग्घपज्ज, जिस किसी ग्राम या शहर में गृहस्थ रहता है, वह जुड़ता है, बातचीत करता है, अन्य गृहस्थों या उनके पुत्रों के साथ बहस करता है, चाहे वे युवा तथा सुसंस्कृत हों, चाहे वे वृद्ध तथा सुसंस्कृत हों, श्रद्धा सम्पन्न [4], शील कुशलता से पूर्ण हो (शील सम्पन्न), त्याग से पूर्ण हो (त्याग सम्पन्न), बुद्धि से पूर्ण हो (प्रज्ञा सम्पन्न)। वह श्रद्धालुओं की श्रद्धा के अनुसार कार्य करता है, शीलवानों के शील के साथ, त्यागियों के त्याग के साथ, प्रज्ञावानों की प्रज्ञा के साथ। यह कल्याण मित्रता कहलाती है।

“समजीविता क्या है?

यहाँ पर, ब्यग्घपज्ज, एक गृहस्थ अपनी आय तथा व्यय जानते हुए एक संतुलित जीवन यापन करता है, न फिजूलखर्ची न कंजूसी, जानते हुए कि इस प्रकार कि उसकी आय व्यय से बढ़कर रहेगी, न कि उसका व्यय आय से बढ़कर।

“जैसे कि एक तुलाधर सुनार [5], या उसका शागिर्द, तराजू पकड़ कर जानता है कि कितना झुक गया है, कितना उठ गया है, उस प्रकार एक गृहस्थ अपनी आय तथा व्यय को जान कर संतुलित जीवन जीता है, न तो बेहद खर्चीला न बेहद कंजूस, इस प्रकार समझते हुए कि उसकी आय व्यय से अधिक रहेगी, न कि उसका व्यय आय से अधिक होगा।”

“ब्यग्घपज्ज, यदि एक गृहस्थ कम आय वाला खर्चीला जीवन व्यतीत करेगा, तो कई लोग ऐसा कहेंगे—‘यह व्यक्ति अपनी सम्पत्ति का ऐसे आनन्द लेता है जैसे कोई बेल-फल खाता है’ [6], यदि ब्यग्घपज्ज, एक प्रचुर आय वाला गृहस्थ कंजूसी का जीवन व्यतीत करेगा तो कई लोग कहेंगे—‘यह व्यक्ति एक भुक्खड़ की तरह मरेगा’।”

“इस प्रकार संचित धन सम्पत्ति, ब्यग्घपज्ज, चार प्रकार से नाश होती है:

“(1) अधिक भोग विलास (2) मदिरापान की लत (3) जुआ (4) पापी लोगों से दोस्ती, संगति तथा सांठ-गांठ।”

“जैसे कि एक बड़े तालाब में चार जल प्रवेश तथा चार जल-निकास के रास्ते हों, यदि कोई व्यक्ति प्रवेश मार्ग बन्द कर दे तथा निकास मार्ग खोल दे तथा काफी वर्षा न हो, तो तालाब में जल की कमी की उम्मीद रहेगी लेकिन वृद्धि की नहीं; वैसे ही संचित सम्पत्ति के विनाश के लिए चार रास्ते हैं—भोग-विलास का आधिक्य, मदिरापान की लत, तथा जुआ और पापी लोगों से दोस्ती, संगति तथा सांठ-गांठ।

“जमा पूँजी की संवृद्धि के चार मार्ग हैं:

(1) काम भोगों में संयम (2) मदिरापान में संयम (3) जुए में रत न होना
(4) अच्छे लोगों से मित्रता, संगति तथा सांठ-गांठ ।”

“जैसे कि एक बड़ा तालाब हो, जिसमें चार प्रवेश तथा चार निकास हों। यदि कोई व्यक्ति प्रवेश खोल दे तथा निकास बन्द कर दे और बारिश भी खूब हो जाए, तो उस तालाब में अवश्य ही जल बढ़ने की संभावना रहेगी तथा घटने की नहीं, इसी प्रकार ये चार बातें जमा पूँजी की वृद्धि के स्रोत हैं।”

“ये चार बातें, ब्यगघपज्ज, एक गृहस्थ के इसी जीवन काल में कल्याण तथा प्रसन्नता में सहायक हैं।”

“आध्यात्मिक विकास के साधन”

“चार बातें, ब्यगघपज्ज, सहायक हैं एक गृहस्थ के कल्याण तथा प्रसन्नता के लिए, उसके अगले जीवन में। कौन चार?”

“श्रद्धा की उपलब्धि (श्रद्धा-सम्पदा), शीलों की उपलब्धि (शील-सम्पदा), त्याग की उपलब्धि (त्याग सम्पदा) तथा प्रज्ञा की उपलब्धि (प्रज्ञा-सम्पदा)।”

“श्रद्धा सम्पदा—श्रद्धा की उपलब्धि क्या है?”

“इसमें एक गृहस्थ श्रद्धा-सम्पन्न होता है, वह सम्यक सम्बुद्ध तथागत की बुद्धत्व उपलब्धि में आश्वस्त होता है; यथातथ्य, वे सम्यक सम्बुद्ध हैं, पूर्णतया ज्ञान प्राप्त, विद्या तथा आचरणों से सम्पन्न, सुगत, लोकों को जानने वाले, सिखाये जाने योग्य मनुष्यों के नायक, देव तथा मनुष्यों के गुरु, सर्वज्ञ तथा धन्य हैं। इसे कहते हैं श्रद्धा की उपलब्धि—श्रद्धा सम्पदा।”

“शील सम्पदा—शीलों की उपलब्धि क्या है?”

“इसमें एक गृहस्थ प्राणी हत्या से, चोरी से, यौन मिथ्याचार से, झूठ बोलने से

तथा नशीले पदार्थों से, जो स्मृतिनाश तथा प्रमाद उत्पन्न करते हैं, विरत रहता है। यह कहलाता है शील उपलब्धि—शील सम्पदा।”

“त्याग सम्पदा—त्याग की उपलब्धि क्या है?”

“इसमें एक गृहस्थ अपने को चित्तमलों तथा धन लोलुपता से मुक्त रख कर घर में रहता है, त्याग में संलग्न, मुक्त हस्त, उदारता में आनन्दित, ज़रूरतमन्दों की सहायता करने वाला, दान-दक्षिणा (भिक्षा देने) में प्रसन्न। यह कहलाता है त्याग की उपलब्धि—त्याग सम्पदा।”

“प्रज्ञा सम्पदा—प्रज्ञा की उपलब्धि क्या है?”

“इसमें एक गृहस्थ प्रज्ञावान है; वह ऐसी प्रज्ञा से सम्पन्न है कि (पंच स्कन्धों की) उत्पत्ति तथा लय को समझता है; वह आर्य विपस्सना से सम्पन्न है, जो दुःख विमुक्ति का लाभ देती है। इसे कहते हैं प्रज्ञा की उपलब्धि—प्रज्ञा सम्पदा।”

“यह चार बातें, ब्यगघपज्ज, सहायक हैं एक गृहस्थ के अगले जन्मों में कल्याण तथा प्रसन्नता के लिए।

अपने कर्तव्यों को ध्यान तथा मेहनत से करने वाला,
बुद्धिमानी से धन संचय करने वाला,
वह संतुलित जीवन व्यतीत करता है,
संचित का संरक्षण करते हुए।

श्रद्धा तथा शील से भी सम्पन्न,
उदार तथा धनलोलुपताविहीन,
सदा पथ शोधन को प्रवृत्त,
जो परलोक में कल्याणकर है।

यूँ श्रद्धा से ओत-प्रोत गृहस्थ को,
उनके द्वारा, जिनका 'सम्यक सम्बुद्ध' समुचित नाम है,
यह आठ बातें बताई गई हैं,
जो लोक तथा परलोक में आनन्दकर हैं ।”

अंगुत्तर निकाय VIII.54

टिप्पणियाँ :

- [1] कोलिय, शाक्यों के प्रतिस्पर्धी थे । रानी महामाया कोलिय वंश से सम्बन्धित थीं तथा राजा शुद्धोधन शाक्य से ।
- [2] सीधे अर्थों में लम्बे घुटनों वाला ।
- [3] 'व्याघ्रों का पथ अथवा ब्यगघपज्ज'; उसे यूँ कहा जाता था, क्योंकि उसके पूर्वज उस वनमार्ग के निवासी थे, जो व्याघ्रों से आतंकित था ।
- [4] श्रद्धा अन्धविश्वास नहीं है । यह ज्ञान पर आधारित विश्वास है ।
- [5] 'तुलाधर'—सीधे अर्थों में तुला रखने वाला ।
- [6] उदम्बरखदक - समीक्षा के अनुसार जो बेल खाना चाहता है, वह पेड़ को हिलाता है, जिससे कई फल गिर जाते हैं परन्तु कुछ ही खाये जाते हैं, जबकि अधिकतर खराब हो जाते हैं ।



पराभव सुत्त पतन

पालि से अनुवादित

नारद थेरा

(कैंडी : बुद्धिस्ट पब्लिकेशन सोसायटी, 1985)

अनुवादक की टिप्पणी : जब कि मंगल सुत्त सम्बन्धित है जीवन पद्धति से, जो कि उन्नति तथा सुख की ओर अग्रसर करती है, पराभव सुत्त पतन के कारणों की ओर संकेत कर इसको अनुपूरित करता है। जो अपने आप को इन व्यवहार दोषों से मलिन होने देता है, वह अपनी ही सांसारिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक प्रगति को अवरूद्ध करता है तथा मनुष्य में जो कुछ सचमुच आर्य तथा मानवीय है उसको हीन करता है। परन्तु जो इन खतरों से सतर्क है, वह इन 38 मंगलों के मार्ग को खुला रखता है, जिसके लिए मनुष्य प्रकृति सक्षम है ।



ऐसा मैंने सुना :

एक बार भगवान जेतवन में अनाथपिंडक के विहार में, श्रावस्ती, में विहार करते थे। जब रात्रि काफ़ी बीत चुकी, एक देवता अपनी दीप्ति से समस्त जेतवन को आलोकित करते हुए, भगवान के सम्मुख प्रस्तुत हुआ, समीप आकर, आदरपूर्वक अभिवादन कर, एक ओर खड़ा हो गया । एक ओर खड़े हो वह भगवान से गाथा में बोला :

देवता : हम आप गौतम से, अवनति की ओर जाने वाले पुरुष के विषय में पूछते हैं, यही पूछने के लिए भगवान के पास आए हैं । कृपया, हमें अवनति के कारण बताएं !

भगवान :

उन्नतिगामी पुरुष आसानी से जाना जा सकता है, ऐसे ही अवनतिगामी पुरुष भी आसानी से जाना जा सकता है । वह जो धम्म से प्रेम करता है, उन्नति करता है तथा धम्मद्वेषी की अवनति होती है ।

देवता:

इस प्रकार अवनति के पहले कारण को हमने जान लिया । भगवान! कृपया अवनति का दूसरा कारण बतायें ।

भगवान :

जिसे असन्त प्रिय होते हैं, सन्त अप्रिय होते हैं, असत्य धम्म में रूचि होती है, वह उसकी अवनति का मुख्य कारण है ।

देवता :

इस प्रकार अवनति के दूसरे कारण को हमने जान लिया । भगवान! कृपया अवनति का तीसरा कारण बतायें ।

भगवान :

निद्रालु होना, भीड़-भाड़ में मस्त होना, परिश्रम न करना, आलस्य तथा क्रोध करना—यह किसी की अवनति का मुख्य कारण है ।

देवता :

इस प्रकार अवनति का तीसरा कारण हमने जान लिया । भगवान! कृपया अवनति का चौथा कारण बतायें ।

भगवान :

जो समर्थ होते हुए भी अपने बूढ़े, जीर्ण गतयौवन माता-पिता का भरण-पोषण नहीं करता—यह उसकी अवनति का मुख्य कारण है ।

देवता :

इस प्रकार अवनति का चौथा कारण हमने जान लिया । भगवान! कृपया अवनति का पाँचवा कारण बतायें ।

भगवान :

जो ब्राह्मण, श्रमण या किसी दूसरे याचक को झूठ बोल कर धोखा देता है—वह उसकी अवनति का कारण है ।

देवता :

इस प्रकार अवनति का पाँचवा कारण हमने जान लिया । भगवान! कृपया अवनति का छठा कारण बतायें ।

भगवान :

विपुल धन, स्वर्ण और भोजन से सम्पन्न होना, और उसका अकेले ही उपभोग करना—यह व्यक्ति के पतन का मुख्य कारण है ।

देवता :

इस प्रकार अवनति का छठा कारण हमने जान लिया । भगवान! कृपया अवनति का सातवाँ कारण बतायें ।

भगवान :

जो व्यक्ति जाति, धन या गोत्र का घमंड करता है तथा अपने भाई-बन्धुओं को तिरस्कृत करता है—यह उसकी अवनति का मुख्य कारण है ।

देवता :

इस प्रकार अवनति का सातवाँ कारण हमने जान लिया। भगवान! कृपया अवनति का आठवाँ कारण बतायें।

भगवान :

जो व्यक्ति स्त्रियों के पीछे भागता रहता है, शराबी तथा जुआरी है, कमाये हुए धन को फिजूल खर्च कर देता है—यह उसकी अवनति का मुख्य कारण है।

देवता :

इस प्रकार अवनति का आठवाँ कारण हमने जान लिया। भगवान! कृपया अवनति का नवाँ कारण बतायें।

भगवान :

जो अपनी पत्नी से असन्तुष्ट रहता है तथा वेश्याओं और पराई स्त्रियों के साथ दिखाई देता है—यह उसकी अवनति का मुख्य कारण है।

देवता :

इस प्रकार अवनति का नवाँ कारण हमने जान लिया। भगवान! कृपया अवनति का दसवाँ कारण बतायें।

भगवान :

यौवन समाप्त होने पर जब व्यक्ति नवयुवति को लाता है तो उसकी ईर्ष्या के कारण वह नहीं सो सकता है—यह उसकी अवनति का मुख्य कारण है।

देवता :

इस प्रकार अवनति का दसवाँ कारण हमने जान लिया। भगवान! कृपया अवनति का ग्यारहवाँ कारण बतायें।

भगवान :

किसी लोभी अथवा सम्पत्ति को खा-पी कर उड़ाने वाली स्त्री या पुरुष को सम्पत्ति का स्वामी बना दिया जाये, तो वह उसकी अवनति का मुख्य कारण है।

देवता :

इस प्रकार अवनति का ग्यारहवाँ कारण हमने जान लिया। भगवान! कृपया अवनति का बारहवाँ कारण बतायें।

भगवान :

उत्तम कुल में उत्पन्न तथा अति महत्वाकांक्षी, अल्प सम्पत्ति-साधन वाला पुरुष जब राज्य की कामना करता है—यह उसकी अवनति का मुख्य कारण है।

संसार में अवनति के इतने कारणों को जानकर पण्डित आर्य दृष्टि से सम्पन्न हो लोक में सुख-पूर्वक रहता है।



सुत्त निपात 1.6 पराभव सुत्त (मूल पालि)

एवं मे सुत्तं। एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डकस्स आरामे। अथ खो अज्जतरा देवता अभिक्कन्ताय रत्तिया अभिक्कन्तवण्णा केवलकप्पं जेतवनं ओभासेत्वा, येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठिता खो सा देवता भगवन्तं गाथाय अज्झभासि :

पराभवन्त पुरिसं मयं पुच्छाम गोतमं ।

भगवन्तं पुट्टमागम्म, किं पराभवतो मुखं ।।।।।

सुविज्जानो भवं होति, अविज्जानो पराभवो ।
 धम्मकामी भवं होति, धम्मदेसी पराभवो ॥12॥
 इति हेतं बिजानाम, पथमो सो पराभवो ।
 दुतियं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं ॥13॥
 असन्तस्स पिया होन्ति, सन्ते न कुरुते पियं ।
 असतं धम्मं रोचेति, तं पराभवतो मुखं ॥14॥
 इति हेतं बिजानाम, दुतियो सो पराभवो ।
 ततियं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं ॥15॥
 निहासिली सभासिली अनुट्टाता च यो नरो ।
 अलसो कोधपञ्जाणो, तं पराभवतो मुखं ॥16॥
 इति हेतं बिजानाम, ततियो सो पराभवो ।
 चतुत्थं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं ॥17॥
 यो मातरं वा पितरं वा जिण्णकं गतयोब्बन ।
 पहु सन्ते न भरति, तं पराभवतो मुखं ॥18॥
 इति हेतं बिजानाम, चतुत्थो सो पराभवो ।
 पञ्चम भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं ॥19॥
 यो ब्राह्मणं व समणं वा अञ्ज वा पि वनिब्बकं ।
 मुसावादेन पञ्चेति, तं पराभवतो मुखं ॥20॥
 इति हेतं बिजानाम, पञ्चमो सो पराभवो ।
 छट्टम भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं ॥21॥
 पहूतवित्तो पुरिसो सहिरञ्जो सभोजनो ।
 एको भुञ्जति सादूनि, तं पराभवतो मुखं ॥22॥
 इति हेतं बिजानाम, छट्टमो सो पराभवो ।
 सत्तम भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं ॥23॥

जातित्थद्धो धनत्थद्धो गोत्तत्थद्धो च यो नरो ।
 सञ्जाति अतिमञ्जेति, तं पराभवतो मुखं ॥14॥
 इति हेतं बिजानाम, सत्तमो सो पराभवो ।
 अट्टम भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं ॥15॥
 इत्थिधुत्तो सुराधुत्तो, अक्खधुत्तो च यो नरो ।
 लद्धं लद्धं विनासेति, तं पराभवतो मुखं ॥16॥
 इति हेतं बिजानाम, अट्टमो सो पराभवो ।
 नवम भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं ॥17॥
 सेहि दारेहि असंतुट्टो वेसियासु पदिस्सति ।
 दिस्सति परदारेसु, तं पराभवतो मुखं ॥18॥
 इति हेतं बिजानाम, नवमो सो पराभवो ।
 दसम भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं ॥19॥
 अतीतयोब्बनो पोसो आनेति तिम्बुरुत्थिनिं ।
 तस्सा इस्सा न सुपति, तं पराभवतो मुखं ॥20॥
 इति हेतं बिजानाम, दसमो सो पराभवो ।
 एकादसम भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं ॥21॥
 इत्थि सोण्डिं विकिरणिं पुरिसं वापि तादिसं ।
 इस्सारियस्मिं ठपेति, तं पराभवतो मुखं ॥22॥
 इति हेतं बिजानाम, एकादसमो सो पराभवो ।
 द्वादसम भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं ॥23॥
 अप्पभोगो महातण्हो खत्तिये जायते कुले ।
 सोध रञ्जं पत्थयति, तं पराभवतो मुखं ॥24॥
 एते पराभवे लोके पण्डितो समवेक्खियं ।
 अरियो दस्सनसम्पन्नो स लोकं भजते जिवति ॥25॥



परिशिष्ट 4



महामंगल सुत्त मंगलों पर प्रवचन

पालि से अनुवादित

नारद थेरा

(कैण्डी: बुद्धिस्ट पब्लिकेशन सोसायटी, 1985)

ऐसा मैंने सुना : [1]

एक समय भगवान श्रावस्ती के निकट [2] अनाथपिंडक के जेतवनाराम में विहार करते थे। [3]

जब रात्रि काफ़ी बीत चुकी, एक देवता अपनी दीप्ति से समस्त जेतवन को आलोकित करते हुए, भगवान के सम्मुख उपस्थित हुआ, समीप आकर, आदरपूर्वक अभिवादन कर, एक ओर खड़ा हो गया। एक ओर खड़े हो भगवान से वह गाथा में बोला :

“कल्याण की आकाक्षां रखते हुए, कई देवताओं तथा मनुष्यों ने मंगल के विषय में विचार किया है। [4] कृपया, मुझे बतावें कि उत्तम मंगल क्या है !”

भगवान :

मूर्खों की संगति न करना, [5] बुद्धिमानों की संगति करना तथा आदरणीयों का आदर करना—यह उत्तम मंगल है।

अनुकूल स्थानों में निवास करना, [6] पूर्व के संचित पुण्यों का होना और

सम्यक आत्मनिरीक्षण करना [7]—यह उत्तम मंगल है।

बहुश्रुत होना, शिल्प में निपुण होना, [8] सुशिक्षित होना, [9] तथा सुभाषित होना [10]—यह उत्तम मंगल है।

माता-पिता की सेवा करना, बच्चों तथा स्त्री का पालन-पोषण करना तथा शान्तिदायक आजीविका में लगा होना—यह उत्तम मंगल है।

देने में उदार होना, आचरण में धम्मानुकूल होना, [11] बन्धु-बान्धवों का आदर-सत्कार करना तथा दोषरहित कार्य करना—यह उत्तम मंगल है।

पाप के आधिक्य से घृणा करना तथा विरत रहना, मदिरापान का संयम रखना, धम्म पालन में अप्रमादी होना [12]—यह उत्तम मंगल है।

प्रतिष्ठा पाना, [13] विनम्र रहना, सन्तुष्ट रहना, कृतज्ञ होना तथा उचित समय पर धम्म सुनना—यह उत्तम मंगल है।

क्षमाशील होना, आज्ञाकारी होना, श्रमणों का दर्शन करना तथा उचित समय पर धम्म चर्चा करना—यह उत्तम मंगल है।

तप [15], ब्रह्मचर्य का पालन, आर्य सत्त्यों का दर्शन, निर्वाण का साक्षात्कार—यह उत्तम मंगल है।

जिसका चित्त लोक धर्म से विचलित नहीं होता [16], वह शोकरहित, निर्मल तथा निर्भय रहता है [17]—यह उत्तम मंगल है।

जो इस प्रकार के कार्य करते हैं, सदा अपराजित रहते हैं, सब प्रकार के सुख को उपलब्ध होते हैं—यह उत्तम मंगल है।

सुत्त निपात 2.4

टिप्पणियाँ : (मुख्यता व्याख्याओं से उद्धृत)

- [1] यह सुत्त सुत्त-निपात नामक ग्रन्थ से लिया गया है (v.258ff)। यह खुदकपाठ में भी है। देखिए महामंगल जातक (No. 453)। अधिक जानकारी के लिए देखें Life's Highest Blessings by Dr. R.L. Soni [2], Wheel No. 254/256.
- [2] बलरामपुर के निकट वर्तमान सहेत-महेत से इसकी पहचान की गई है।
- [3] शब्दशः अनाथपिंडक, साधारणतया “अनाथों का नाथ”; इन का पहले का नाम था सुदत्त। बुद्ध धम्म में आने के बाद, उन्होंने राजकुमार जेत का उद्यान खरीद लिया तथा एक विहार का निर्माण किया, इसे आगे चलकर जेतवन नाम दिया गया। यह वह विहार था जिसमें भगवान बुद्ध ने अधिकतर वर्षावास बिताये (वर्षावास-तीन महीने का शिविर प्रवास, जुलाई पूर्णमासी से आरम्भ)। भगवान बुद्ध से सम्बन्धित बहुत से प्रवचन तथा घटनाएं जेतवन में घटित हुईं। यहीं पर भगवान ने बीमार भिक्षु की सेवा की, जिसे उसके साथियों ने छोड़ दिया था, तथा उन्हें समझाया “जो कोई, भिक्षुओं, मेरी सेवा करना चाहता है, उसे बीमारों की सेवा करनी चाहिए।” यहीं पर भगवान ने बड़ी मर्मस्पर्शी विधि से अनित्य का नियम सिखाया, यह कहते हुए दुखियारी युवा किसागतमी से, जो अपना मृत बच्चा लिए हुए आई थी, कि सरसों का एक दाना ऐसे परिवार से लावे, जिसमें कभी कोई मरा नहीं।
- [4] व्याख्या के अनुसार मंगल का अर्थ है, प्रसन्नता तथा समृद्धि की ओर ले जाने वाला।
- [5] यह केवल मूर्खों तथा अशिक्षितों तक सीमित नहीं है, वरन् वे भी जो विचार, वाणी, कर्म से दुष्ट हों।
- [6] कोई स्थान जहाँ पर भिक्षु, भिक्षुणियाँ तथा उपासक लम्बे समय तक रहें; जहाँ पवित्र लोग दस पारमिताओं की पूर्णता पर आरूढ़ हों, और जहाँ धम्म जीवन्त सिद्धान्त की भांति होता है।
- [7] सही निर्णय करना, अनैतिकता को नैतिकता के लिए, अश्रद्धा को श्रद्धा के लिए, स्वार्थ को निःस्वार्थता के लिए।
- [8] गृहस्थ के अहानिकर शिल्प, जिसमें किसी प्राणी को कष्ट नहीं पहुँचाता, न कोई अन्याय (अनर्थ) होता है तथा गृहत्यागी भिक्षु के शिल्प जैसे कि चीवर आदि की सिलाई।
- [9] विनय का अर्थ है मन, वाणी तथा कर्म का संयम। व्याख्या के अनुसार दो प्रकार का संयम कहा गया है—एक गृहस्थ का जो कि दस अकुशल कर्मों से विरत रहना है तथा भिक्षुओं का जो कि पातिमोक्ख (भिक्षुओं की आचार संहिता) के अनुसार आपत्तियाँ न करना, या कि ‘नैतिक शुद्धता के चार अंगों’ का पालन करना है।
- [10] सुभाषित वाणी, समयानुकूल, सच्ची तथा मैत्रीपूर्ण, लाभदायक तथा मैत्री भावना से कही गई।
- [11] सम्यक व्यवहार हैं, दस कुशल कर्मों का पालन करना मन से, वाणी से तथा कर्म से; चित्त को लोभ, द्वेष तथा मिथ्यादृष्टि से मुक्त करना; बचना असत्य से, निन्दा से, गाली से, तथा ओछी बात से; तथा असहमति के कर्म, प्राणी हत्या, चोरी तथा यौन मिथ्याचार के सम्बन्ध में।
- [12] शराब तथा नशीले पदार्थों से पूर्ण मुक्ति।
- [13] भिक्षुओं के प्रति (तथा अवश्यमेव अन्य धर्मावलंबियों के प्रति भी), गुरुओं, माँ-बाप, बड़े तथा वरिष्ठ पद वालों के प्रति, इत्यादि।

- [14] उदाहरणतया, जब कोई अकुशल विचारों से ग्रस्त होता है ।
 [15] आत्म-संयम (तपो) : लोलुपताओं तथा घृणाओं (राग-द्वेष) का दमन
 इन्द्रिय संयम से तथा आलस्य का दमन वीर्य भावना से ।
 [16] लोक धम्म, अर्थात् परिस्थितियाँ, जो संसार में जीवन से अपरिहार्यता
 जुड़ी हुई हैं; मुख्य रूप से यह आठ हैं; लाभ तथा हानि, मान तथा
 अपमान, प्रशंसा तथा निन्दा, दुःख तथा सुख ।
 [17] यह तीनों बातें एक अर्हत के चित्त से सम्बन्धित हैं; असोकः शोक
 रहित; विरजः पाप रहित अर्थात् राग, द्वेष तथा मोह से मुक्त; खेमः
 इन्द्रियों की काम तृष्णा के बन्धनों से मुक्ति, बार-बार जन्म (भव),
 दृष्टिवाद (दिष्टी) एवं अविद्या (अविज्जा) ।
 [18] ऊपर कही गई अड़तीस मंगल कारक बातें ।



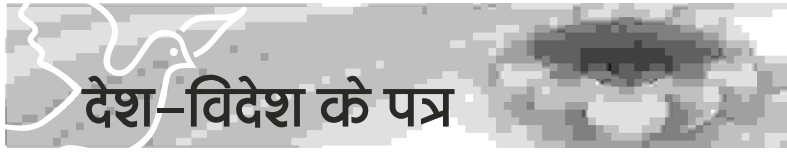
महामंगल सुत्त (मूल पालि)

एवं मे सुत्तं । एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डकस्स
 आरामे । अथ खो अञ्जतरा देवता अभिक्कन्ताय रत्तिया अभिक्कन्तवण्णा
 केवलकप्पं जेतवनं ओभासेत्वा, येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा
 भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि । एकमन्तं ठिता खो सा देवता भगवन्तं
 गाथाय अज्झभासि :

बहु देवा मनुस्सा च मङ्गलानि अचिन्तयुं ।
 आकङ्कमाना सोत्थानं ब्रूहि मङ्गलमुत्तमं ॥१॥
 असेवना च बालानं पण्डितानञ्च सेवना ।
 पूजा च पूजनीयानं एतं मङ्गलमुत्तमं ॥२॥

पतिरूप देसवासो च पुब्बे च कतपुञ्जता ।
 अत्तसम्पापणिधि च एतं मङ्गलमुत्तमं ॥३॥
 बाहुसच्चं च सिप्पंच विनयो च सुसिक्खितो ।
 सुभासिता च या वाचा एतं मङ्गलमुत्तमं ॥४॥
 माता-पितु उपट्टानं पुत्तादारस्स सङ्गहो ।
 अनाकुला च कम्मन्ता एतं मङ्गलमुत्तमं ॥५॥
 दानञ्च धम्मचरिया च जातकानं च सङ्गहो ।
 अनवज्जानि कम्मनि एतं मङ्गलमुत्तमं ॥६॥
 आरति विरति पापा मज्जपाना च सञ्जमो ।
 अप्पमादो च धम्मेषु एतं मङ्गलमुत्तमं ॥७॥
 गारवो च निवातो च संतुट्ठि च कतञ्जुता ।
 कालेन धम्मसवर्णं एतं मङ्गलमुत्तमं ॥८॥
 खन्ती च सोवचस्सता समणानं च दस्सनं ।
 कालेन धम्मसाकच्छा एतं मङ्गलमुत्तमं ॥९॥
 तपो च ब्रह्मचरियं च अरियसच्चान दस्सनं ।
 निब्बान सच्छिकिरिया च एतं मङ्गलमुत्तमं ॥१०॥
 फुट्टस्स लोकधम्मोहि चित्तं यस्स न कम्पति ।
 असोकं विरजं खेमं एतं मङ्गलमुत्तमं ॥११॥
 एतादिसानि कत्वान सब्बत्थं अपराजिता ।
 सब्बत्थ सोत्थिं गच्छन्ति तं तेसं मङ्गलमुत्तमं 'ति ॥१२॥





देश-विदेश के पत्र

यह पुस्तिका उन सबको समर्पित है, जिन्होंने यह अद्भुत, प्रेरणात्मक, हृदय को लुभाने वाले पत्र मेरी वेबसाइट को लिखे थे तथा जो धम्म को फैला रहे हैं, जहाँ कहीं भी वे हैं। यहाँ कई लोगों के पत्र शामिल न कर पाने के कारण क्षमा प्रार्थी हूँ। मेरी कृतज्ञता और धन्यवाद विस्तृत रूप से सबको प्रेषित है।

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आपकी सौम्य भेंट की मैं कितनी सराहना करता हूँ। मैं कुछ वर्षों से बौद्ध पुस्तकें पढ़ रहा हूँ पर ऐसा स्पष्ट विवरण जैसा कि 'जस्ट बी गुड' पुस्तिका में आपने लिखा है, ऐसा मैंने कभी नहीं पढ़ा। मैं यह सामग्री प्रतिदिन पढ़ता रहा हूँ, परिणामतः मैं आश्चर्य हो गया हूँ कि मुझे कौन से मार्ग पर चलना है। मैं आप की 'साईट' को गहरी समझ प्राप्त करने के लिए अक्सर देखता रहूँगा, पर सदा आपके प्रारम्भिक परिचय पर लौटता रहूँगा, जो मुझे प्रेरणात्मक लगा। आपने मेरे जीवन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है तथा मैं आपको अपनी सुखदतम शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। धन्यवाद।

केविन शेल्डन

तस्मानिया, ऑस्ट्रेलिया

आपने बड़ा प्रयास किया है तथा कई भूखे लोगों की सहायता की है, जिनमें मैं भी हूँ। मुझे विश्वास है, यदि आप न होते, मैं धम्म का प्रशिक्षण न बनता। मैं बुद्ध की शिक्षा के अनुसार जीने का प्रयास करूँगा।

जॉन शिशोम

इल्लिनायस, यू.एस.ए.

क्या प्रकटीकरण है— बस अच्छे बन जाओ! वाह! लोगों से दुर्भावना तथा घृणा के बजाए मैत्री तथा क्षमा की भावना रखना, इतना कुछ आसान है। क्या यही बुद्धत्व है? मैं नहीं जानता पर यह कितना अच्छा लगता है। बुद्ध कितने विशिष्ट व्यक्ति रहे होंगे। कर्म का नियम बिलकुल न्यायसंगत है तथा जीवन पुनः अद्भुत हो जाता है। शुभकामनाएं तथा धन्यवाद।

पीटर पावर

डारसेट, यूनाइटेड किंगडम

सामग्री के लिए बहुत धन्यवाद। यह मेरे लिए अत्यन्त सहायक रही है। इसने मेरा जीवन बदल दिया है।

मिलानी एडम्स

पेंसिलवानिया, यू.एस.ए.

जो कोई जिज्ञासापूर्ति करना चाहता हो, उसके लिए अति उत्तम वेबसाईट है। आपने धर्म का रहस्योद्घाटन कर दिया है तथा यह दिखा दिया है कि कैसे बौद्ध शिक्षाएं हर एक के लिए आशा प्रस्तुत करती हैं। आपको ढेर सारा धन्यवाद।

अजीथ

सिंगापुर

धन्यवाद, आपकी सहायता से मैंने अपने मन तथा मस्तिष्क में कुछ शान्ति का आभास किया है। इस ज्ञान ने मेरा जीवन बदल दिया है, वह प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए कितने भी शब्द पर्याप्त नहीं है।

स्टेसी

फ्लोरिडा, यू.एस.ए.

मैं आपका धन्यवाद करना चाहूँगी, अपना समय देने के लिए उस प्राप्ति हेतु जिसमें आपकी आस्था है तथा उसे अन्य लोगों में बांटने के लिए। नए बौद्धों के लिए आपकी वेबसाईट एक शक्तिशाली स्रोत है।

एमिली

टेक्सास, यू. एस. ए.

मैं अभी निःशुल्क प्राप्त 'जस्ट बी गुड' पढ़ कर हटा हूँ, पुस्तक जो आपने भेंजी। अद्भुत ! मैं आजकल इसको पुनः पढ़ रहा हूँ क्योंकि यह इतनी घनीभूत है तथा मुझे इसकी 'तह तक' जाने के लिए कई बार पढ़ना पड़ेगा। यह कई मूल्यवान बातों से भरी हुई है, जैसे कि आपकी वेबसाईट तथा परामर्श। जिस महान कार्य को आप कर रहे हैं, उसको बनाए रखें। आप विश्व के लिए एक वरदान हैं।

कर्सटन मैक-लाचलन

ब्रिसबेन, आस्ट्रेलिया

इन सब बढ़िया, सुन्दर, ज्ञानवर्धक तथा उन्नत करने वाले बौद्ध साहित्य, सीडी, स्टिकर इत्यादि के लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। इस साहित्य को अपने अस्पताल के आध्यात्मिक कक्ष में रखकर हम बड़े प्रसन्न हैं। हमारे बहुत से रोगियों के लिए यह बड़ा सहायक है। आप और आपके साथी, जो इस सब शुभकर्म में लगे हुए हैं, सबका महान मंगल हो, धन्यवाद।

माइकल मेलचर

पेंसिलवानिया, यू. एस. ए.

बस मैं तुम्हारे संज्ञान में लाना चाहती हूँ कि 'जस्ट बी गुड' पुस्तिका मैंने पढ़ ली है और यह गजब की है। सरल, सारगर्भित और सुन्दर। अपनी एक

सहकर्मी को मैंने इसकी एक प्रति दी और वह इसे पढ़ कर झूम उठी। एक बार फिर, तुम यशस्वी हो! अपना ख्याल रखना।

बेकी

सलेम, यू. एस. ए.

मैं तो बस इतना ही कहना चाहूँगी धन्यवाद, धन्यवाद ! मैंने सत्कारपूर्वक निःशुल्क साहित्य प्राप्त किया, जिसे आपने मेरे लिए भेजा था। मैं इन साधनों द्वारा शिक्षित करने का तथा बुद्धवाणी को प्रसारित करने के लिए प्रयोग कर रही हूँ। पुनः धन्यवाद।

क्रिस्टी टाऊनसेंट

लिसेस्टर, इंग्लैण्ड

आपका भेजा पैकेट, मैंने बस अभी प्राप्त किया ही है। मैं इस सामग्री को पढ़ने तथा सुनने का विलम्ब नहीं कर सकती। मैं अपने कई मित्रों के साथ इसकी सहभागिता की उम्मीद भी लगाए हूँ। हम संघर्षरत लेकिन बुद्ध धम्म सीखने और उसे दैनिक जीवन में उतारने के लिये सहर्ष तत्पर लोगों के लिए ऐसी प्रबुद्ध व ज्ञानवर्धक वेबसाईट प्रस्तुत करने के लिये भी आपको धन्यवाद।

शालीमार

मनीला, फिलीपींस

पिछले कुछ महीनों से पढ़ने में तथा अन्य सम्पर्कों के उपयोग में मैं आपकी वेबसाईट पर खूब रहा हूँ। मुझे आज आप का पैकेट भी प्राप्त हुआ तथा मैं आपको सहर्ष धन्यवाद करता हूँ। मैं सचमुच ऐसा अनुभव करता हूँ कि मुझे वह आध्यात्मिक स्रोत मिल गया है, जिसे मैं ढूँढ़ रहा था। मैं आपकी वेबसाईट तथा अन्य सामग्री के लिए आपको धन्यवाद करना चाहूँगा। आपके तथा आप की बातों के बिना मैं सही मार्ग चूक जाता। आपने जो कुछ मुझे भेजा मैं सब

कुछ पढ़ंगा और मुझे विश्वास हो गया है कि अब मैं गुरु की खोज के लिये तैयार हूँ। आपको पुनः तहेदिल से धन्यवाद।

जोसफ़

यू. एस. ए.

मैं इसाई पैदा हुआ तथा कई वर्षों तक इसाई ही रहा हूँ पर मैंने अपने को बुद्ध धम्म में परिवर्तित करना शुरू कर दिया। मैंने यह वेबसाईट खोज निकाली जो अत्यन्त रूचिकर है तथा पढ़ने के लिए बहुत कुछ और है। “स्वर्ग कोई भी जा सकता है, बस अच्छे बनो!”, मेरे लिए एक महान शिक्षा है। उस व्यक्ति या समूह को धन्यवाद जो यह वेबसाईट संचालित कर रहे हैं।

शिरोमा विजेसेकरा

श्रीलंका

मैंने इस विषय में अब तक कभी भी कुछ नहीं पढ़ा था तथा मैंने जो कुछ इस सामग्री से सीखा, इसने मुझे वस्तुओं को विशेषतया एक भिन्न दृष्टिकोण से देखने को बाध्य कर दिया। मुझे लगता है कि जो मैं स्थूल स्तर पर समझती थी, वह एक अत्यन्त प्रज्ञावान पुरुष द्वारा 2500 वर्षों पूर्व पहले ही उद्घाटित कर लिया गया था। मैं उनकी शिक्षाओं को अपने हृदय के निकट रखूँगी। आप सब को धन्यवाद।

ऐंजेला विल्किंस

लंकाशायर, इंग्लैण्ड

धन्यवाद! आपकी वेबसाईट विस्मयकारक है। जब मैं बैंकाक में विश्व बौद्ध धम्म बन्धुत्व पर एक बौद्ध संगोष्ठी में भाग ले रहा था, तब मुझे आपकी वेबसाईट का परिचय मिला। मेरी दादी जीवन पर्यन्त बौद्ध थीं। वह अत्यधिक

शांत तथा कृपालु व्यक्ति थीं, जहाँ तक मैं जानता हूँ। अब मुझे ज्ञात हुआ वह क्यों इतनी शान्त, कृपालु तथा बुद्धिमान थीं।

योंग पार्क

कैलिफोर्निया, यू. एस. ए.

आपको धन्यवाद, उस निःशुल्क सामग्री को भेजने के लिए। मैं अपने सब मित्रों को आपकी वेबसाईट के सम्बन्ध में बताऊँगी तथा मैं भी अपनी ओर से बुद्ध की शिक्षा को प्रसारित करने के लिए कुछ करूँगी, जितना मुझ से बन पड़ेगा। छः वर्ष पूर्व मैंने अपने पिता को खो दिया। मैं अपने आप को बुद्ध की शिक्षाओं के कारण संभाल सकी। क्या ही अच्छा होता यदि मैं आपकी वेबसाईट पहले ही जान जाती। परन्तु फिर भी आप को पुनः धन्यवाद। आप जैसे लोगों के बल पर ही यह संसार टिका हुआ है।

जशोदा छेत्री

गैंगटोक, सिक्किम, भारत

निःशुल्क सामग्री के लिए भरपूर धन्यवाद। ऐसा कोई जिसने बुद्ध की शिक्षाओं का अनुसरण करना आरम्भ किया हो, संक्षिप्त तथा सरल ज्ञान का मिलना चमत्कारिक है। कृपया अपना कार्य जारी रखें, इसकी इस अशान्त समय में बहुत आवश्यकता है।

क्रिस हेयनी

अलबामा, यू. एस. ए.

मैं आपका छोटा-सा पार्सल, पर महान विचारों वाला, पिछले शुक्रवार को प्राप्त कर कितनी अधिक खुश हुई, इसने मेरी निढाल आत्मा को या चित्त-सन्तति को स्फूर्तिमान कर दिया, जितना आप नहीं जानते। इस भेंट के

लिए बहुत धन्यवाद तथा आपकी वेबसाइट के लिए एवं बौद्ध धम्म से जुड़े दूसरे संपर्कों के लिए, जो कि एक अन्तः प्रज्ञा प्रणाली है, जिसमें इतनी सत्यनिष्ठा है, करुणा है तथा सहनशीलता है। जो कुछ भी शक्तिमान है वह 'जस्ट बी गुड.नेट' में संलग्न आप सब पर महान कृपा की दृष्टि रखे, आप काम ही ऐसा कर रहे हैं। आभार सहित।

शेरोन फुम्मेरटन

पेन्टिकटन, बी.सी., कनाडा

मुझे पुस्तकें भेजने के लिए धन्यवाद तथा खास तौर पर आपकी 'जस्ट बी गुड' पुस्तक के लिए। मैं आपके कार्य की पकड़ को सराहता हूँ, क्योंकि यह आसानी से ग्राह्य है न कि जैसे अन्य धर्म ग्रन्थ हो सकते हैं: अर्थहीन, विशाल पोथे। मुझे आशा है कि यह कृति आपकी अन्तिम नहीं होगी तथा भविष्य में मैं इस जैसी कई और कृतियों को देखने की आशा रखता हूँ। इस शुभकार्य को बनाए रखें तथा धन्यवाद उस सब कुछ के लिए जो आप कर रहे हैं।

ली स्मिथ

इंग्लैण्ड

मैं जीवन के अन्तिम वर्षों में बौद्ध हूँ तथा मेरी अपनी कोई यातायात सुविधा नहीं है; आपकी वेबसाइट की जानकारी अत्यन्त सुखद है, जब मेरा मित्र एक विहार में ले गया तथा जब मुझे आपकी 'जस्ट बी गुड' की नई प्रति मिली। यह जानना बहुत बड़ी बात है कि धम्म को फैलाने के लिए महाशय ली ने इतना कुछ किया है ताकि बौद्ध धम्म की जानकारी दुनिया भर के लोगों की आसान पहुँच में आ जाए। हर रात सोने के पहले मैं 'जस्ट बी गुड' नन्ही पुस्तिका को पढ़ूँगा जो शील पालन तथा स्वयं शान्त रहने के लिए

मुझे याद दिलाएगी। उन सबका साधुवाद, जिन्होंने यह वेबसाइट तैयार किया तथा कुशल कार्य चलाए रखें। साधु साधु साधु।

एस डब्ल्यू तन

मलेशिया

यह साईट आँख खोलने वाली तथा ज्ञानवर्धक है। आप सबको धन्यवाद। इस साईट पर आपके कुशल तथा कृपालु कार्य के रूप ने मुझे तथा कई अन्य को इस योग्य किया है कि बुद्धत्व प्राप्ति के मार्ग पर आरूढ़ हो जाएं। नमस्ते तथा हार्दिक कृतज्ञता।

रोज़री सेलेन्सकी

न्यूयार्क, यू. एस. ए.

मुझे पुस्तिकाएं तथा सीडी आदि शुक्रवार को मिलीं तथा मैं उनका अवलोकन कर रहा हूँ। वे अतिउत्तम हैं!!! मैं आपकी वेबसाइट को भी खूब टटोलता हूँ। लगभग प्रतिदिन तथा विस्मित हूँ इस ज्ञान की मात्रा देख कर। आपने हमारा काम कर दिया है, हम लोग जो अभी केवल बुद्ध धम्म की खोज में लगे हैं। पुनः आपको खूब धन्यवाद। सब मंगल हो।

डेविड हार्ट मैन

रीनो, यू. एस. ए.

सर्वप्रथम वांक्षित बौद्ध जानकारियाँ उपलब्ध कराने के लिये आपको धन्यवाद देना चाहती हूँ। क्या आप मुझे 'जस्ट बी गुड' पुस्तिका की कुछ और प्रतियाँ भेज सकते हैं, हालांकि मैंने पहले एक ही प्रति मंगवाई थी। मैंने इस लघु पुस्तिका का इस कद्र आनन्द लिया कि मैं इसे अकेले सम्भाल नहीं सकती बल्कि इस ज्ञान को अपने बच्चों और मित्रों के साथ भी साझा करूँगी। आपको अतिशय धन्यवाद।

डायना स्टैण्डफिल

वाशिंगटन, यू. एस. ए.

मैंने बुद्ध धम्म को लगभग सभी सम्भव पहलुओं से देखा है लेकिन जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि यहाँ इंग्लैण्ड में बुद्ध धम्म के सरल-से-सरल दिग्दर्शक लेखक भी 'क्या करना अनिवार्य है और क्या नहीं करना है' की सूचियों से चकरा देते हैं व भ्रमित करते दिखते हैं। तब मैंने आपकी महान वेबसाइट पायी और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। यह ठीक वैसी है जैसी होनी चाहिए, सरल और ईमानदार। मुझे उम्मीद है कि हम अटूट मैत्री विकसित कर सकते हैं, क्योंकि आपने हमें प्रोत्साहित करने में इतनी मदद की है। शत्-शत् आशीर्वाद और आपको सदैव शान्ति मिले।

कोलिन मिशेल

कैम्ब्रिजशायर, इंग्लैण्ड

आपकी अद्भुत पुस्तक "जस्ट बी गुड" मुझे अभी मिली है तथा मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ—वाह!! इतनी छोटी-सी गठरी में इतना ज्ञान। आपको खूब धन्यवाद कि आप हर किसी को सहयोग दे रहे हैं, जो कोई भी सीखना चाहता हो। बुद्धों की प्रज्ञा आप पर बरसती रहे। प्रचुर मेत्ता।

टामी

फ्लोरिडा, यू. एस. ए.

अद्भुत तथा सुन्दर साईट के लिए मैं आपको बधाई देना चाहूँगा। बौद्ध बनना मेरे लिए घर लौटने जैसा है, मुझे लगता है मैं जीवन भर बुद्ध धम्म को ही पालन करता रहा हूँ। मैंने 'जस्ट बी गुड' पुस्तक पढ़ कर समाप्त की है तथा यह बहुत ज्ञानवर्धक, उस पर भी समझने में आसान है। मैं कुछ और पुस्तिकाओं के लिए आग्रह करने वाला हूँ ताकि अपने मित्रों को बांट सकूँ।

मार्टिन

शैफ़ील्ड, युनाईटेड किंगडम

निःशुल्क ज्ञान के लिए धन्यवाद!!! आपकी सामग्री इस प्रकार लिखी गई है कोई भी इसका अर्थ ग्रहण कर सकता है। मैं अन्य बौद्ध साईटों को देखता रहा पर आधारभूत बातें भी न समझ पाया, क्योंकि मैं धीरे-धीरे सीखने वाला हूँ। अब मुझे जो समझ आपकी सीडी-यों तथा पुस्तिकाओं ने दी है, उसके साथ मैं गहरी शिक्षाओं को भी समझ पा रहा हूँ। कितना अच्छा होता यदि मैंने बहुत पहले ही आपको ढूँढ़ निकाला होता। अब मैं अपने आप में शान्त हूँ तथा जीवन का आनन्द ले रहा हूँ। अब मेरी यही इच्छा है कि अन्य लोग भी ऐसे ही सुखमय एवं शान्तिपूर्ण हों, अतः अब मैं इस दिशा में कार्य करूँगा, आपकी साईट को धन्यवाद...नमस्ते...

तन्जा एल जेम्ज़

इडाहो, यू. एस. ए.

'जस्ट बी गुड' पुस्तिकाओं के लिए धन्यवाद। अद्भुत! एवं 'नव-बौद्धों' के लिए यह बहुत बढ़िया रहेगी, कहीं भी स्मरणिका एवं ज्ञान स्रोत की तरह अपने साथ रखने योग्य।

हेलेना

फिनलैण्ड

अब तक सर्व प्रथम, आपको एक विशाल धन्यवाद। आप कितना अद्भुत कार्य कर रहे हैं, मैं व्यक्त नहीं कर सकता। आप अपनी निःशुल्क सामग्री से प्रसन्नता को हर किसी की पहुँच में ला रहे हैं। लोग जो ज्ञान प्राप्ति की कीमत वहन कर सकते हैं, तथा लोग जो नहीं कर सकते, उन सबके लिए। अधिकतर लोगों की तरह मैं भी कुछ कठिन समय से निकला हूँ, पर मैं बहुत प्रसन्न हूँ, बुद्ध धम्म का सहारा पा कर तथा बुद्ध धम्म सम्बन्धित ज्ञान सीखने से। पूर्वकाल में मैंने वेबसाईटों तथा पुस्तकों आदि में ढूँढ़ा, वे अक्सर बहुत समय

तथा समझ मांगती थीं। परन्तु, जैसे आपकी पुस्तकें लिखी गई हैं, वे बहुत सरल हैं। मैं दिनभर काम कर के भी उनको पढ़ सकता हूँ तथा ऐसा नहीं लगता कि मैं कोई कठिन काम कर रहा हूँ जो मुझे थकान देगा ! मैं उनको सब जगह पढ़ सकता हूँ, गाड़ी में, बस में, कहीं भी इस, कारण कि वे सरल पर ज्ञानवर्धक शैली में लिखी गई हैं। आपने सत्यमेव बड़ा कुशल कार्य किया है तथा आप लोगों का जीवन परिवर्तित कर रहे हैं ! आशा है आप यह जानते ही हैं।

पवन अमरा

लण्डन, इंग्लैण्ड

आपकी उदार भेंट आज मिली तथा मैं बहुत उत्साहित हूँ कि आपने अपनी पुस्तक 'जस्ट बी गुड' की अतिरिक्त प्रतियाँ भी जोड़ दीं। मैंने बुद्ध धम्म में कुछ रूचि उत्पन्न कर ली है तथा मैं इस सामग्री को बहुत जल्द बांट डालूंगा। मैं यह देख रहा हूँ कि कट्टर इसाई भी अपने विचारों को नियन्त्रित करने के विचार से उत्साहित हो उठते हैं। पहले यह एक अत्यन्त परदेसी बात लगती है कि ऐसा भी हो सकता है। उस सबको जिसे हमारा समाज मान्यता देता है तथा सिखाता है, अधिकतर लोग सोचते हैं कि अपने ही विचारों से ग्रस्त होना जीवन का दुर्भाग्यपूर्ण पहलू है। मैं सोचता हूँ कि आपकी justbegood.net की संकल्पना तथा उसको संवारना समाज की मानसिकता के विकास के लिए एक जोरदार शक्ति बन जाएगी। मेरी यह धारणा है कि मैं इस गतिविधि का एक सक्रिय अंग बन जाऊँ। पुनः धन्यवाद।

जार्ज लारसन

पेंसिलवानिया, यू. एस. ए.



धम्म दान महादान

धम्म का दान सब दानों से बढ़ कर है, धम्म रस सब रसों से बढ़ कर है, धम्मरति सब रतियों से बढ़ कर है, तृष्णा का क्षय सब दुःख क्षयों से बढ़ कर है। (धम्मपद, 354)

धम्म सहभागिता का महत्त्व

जब आप धम्म की सहभागिता करेंगे, अन्य भी आपके साथ आपके जीवनों में धम्म सहभागिता करेंगे, यह कर्म का सिद्धान्त है।

क्योंकि धम्म सहभागिता सिर्फ मनुष्य तथा देव लोक में ही संभव है, आप को इन दोनों लोकों में से एक ही में जन्म लेना पड़ेगा, ताकि अन्य आपके साथ धम्म सहभागिता कर सकें।

अतः धम्म उपहार से आप सर्वोत्तम उपहार ही नहीं देते, आप अपने लिए अनुकूल पुनर्भव भी सुनिश्चित करते हैं।

और अधिक विशेषतया, धम्म सहभागिता शान्ति, सुख तथा अन्ततः निब्बान की ओर ले जाती है, देने वाले को भी और लेने वाले को भी।

यह वे कारण हैं कि धम्म का उपहार सब उपहारों में सर्वोत्तम क्यों है।

एक दैनिक अभिलाषा

मैं सदैव, अपनी ओर से सर्वोत्तम सहायक बन सकूँ, बुद्ध शिक्षाओं के संरक्षण तथा प्रसार के लिए, जिससे सब प्राणियों का हित हो तथा मैं सदा सत्य धम्म सीखता रहूँ एवं पालन करता रहूँ, जब तक कि निब्बान का साक्षात्कार न कर लूँ।

टी वाई ली



समन्वय सेवा संस्थान

सत्य, समन्वय, सेवा के आदर्श को समर्पित समन्वय सेवा संस्थान एक अलाभकारी, गैरसरकारी, अराजनैतिक, समाजसेवी संस्था है, जो अपनी स्थापना के दो दशक पूर्ण करने की ओर अग्रसर है। संस्थान सामाजिक विकास की अवधारणा में आध्यात्मिक उन्नति के पथ पर जोर देता है। आध्यात्मिक उन्नति से तात्पर्य व्यक्तिगत जीवन में उच्च नैतिक मूल्यों की स्थापना से है, जो समता, स्वतंत्रता, बन्धुता व न्याय पर आधारित हों एवं व्यक्ति से व्यक्ति के सम्बन्ध तथा लोक-जीवन में उच्च मर्यादा को स्थापित करने के साथ-साथ मानसिक विकास की ओर अग्रसर करते हों।

भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक रूप से अति उन्नत संस्कृतियों में से एक रही है, लेकिन जातिगत विभाजन ने इसे सीमित और अवरूढ़ किया। जातिगत विभाजन इस संस्कृति के लिए एक दुःसाध्य रोग की तरह रहा है। दुःखद पहलू यह कि इस संस्कृति के सौन्दर्य का गुणगान तो सर्वत्र होता है, लेकिन इस रोग के उपचार के बारे में कभी संगठित रूप से सोचा नहीं गया, बल्कि बहुत बार तो उसका भी महिमामण्डन किया गया, न्यायोचित ठहराया गया। भारत के संविधान शिल्पी बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने इस कुरूपता को निदान दिया - बुद्ध धम्म - जो कि समता, स्वतंत्रता, बन्धुता व न्याय पर आधारित है, जिसे भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में भी समाहित किया गया है। परिणाम? भारत एक बार फिर सर्वतोमुखी विश्वगौरव बनने की ओर अग्रसर है।

डॉ. अम्बेडकर की पहल ने आशा की एक किरण जगायी। उनका मानना था कि बुद्ध धम्म आधुनिक विश्व की आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सर्वथा सक्षम है, क्योंकि यह विज्ञान से असंगत नहीं है। उनके लिये बुद्ध धम्म एक सकारात्मक सामाजिक क्रान्ति का माध्यम भी है, जो रक्तहीन अहिंसात्मक क्रान्ति होगी। धम्म व्यक्ति, समाज एवं संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अवयव है।

मानव जीवन में धम्म की नितान्त आवश्यकता है। रोटी, कपड़ा और मकान के आगे यदि कुछ आवश्यक है तो वह धम्म है। धम्म वह मार्ग है, जिस पर आरूढ़ हो कर स्वयं तथा दूसरों का विकास हो सकता है जो शील, समाधि, प्रज्ञा, मैत्री, करुणा के तत्वों से पूरित है।

सामाजिक जीवन में धम्म के इस महती मूल्य की स्थापना हेतु सामाजिक परिवर्तन के लिये प्रतिबद्ध समवैचारिक सुशिक्षित युवकों को साथ लेकर सन् 1991 में श्री राजेश चन्द्रा ने समन्वय संघ की स्थापना की, जिसका आदर्श है-उच्च आध्यात्मिक व सामाजिक मूल्यों को समर्पित बुद्ध का संघ।

अपनी स्थापना के प्रारम्भिक वर्षों में शैक्षिक उत्थान के अभियान को समन्वय संघ ने अपने हाथों में लिया तथा गरीब, मजदूर, किसान बहुल गांवों एवं मलिन बस्तियों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिये सामान्य ज्ञान, चित्र कला, निबन्ध व वाद-विवाद प्रतियोगिताओं के आयोजन कराये। प्रतिभागियों को पुरस्कृत एवं प्रोत्साहित किया। इस कारवा ने बढ़ते हुए एक अभियान का रूप ले लिया, जो आज तक जारी है।

अपने अभियान के दूसरे चरण में विचार किया जाने लगा कि सामाजिक उन्नति हेतु क्रियाशील समानधर्मा विभिन्न संगठनों को एक मंच पर लाया जाये, ताकि वे एक संघ के रूप में मैत्री के साथ कार्य कर सकें। इस विचारधारा के साथ समन्वय संघ को वर्ष 2005 में समन्वय सेवा संस्थान के नाम से पंजीकृत किया गया। आज यह संस्थान अपने नाम को सार्थक करता हुआ देश-विदेश के विभिन्न सामाजिक व आध्यात्मिक संगठनों के साथ समन्वय स्थापित करके धम्म के प्रचार-प्रसार एवं स्थापना हेतु सक्रिय है। संस्थान का कार्यक्षेत्र यद्यपि सम्पूर्ण भारत है तथा अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध संस्थाओं से भी इसका सघन सम्पर्क है, तथापि इसने अपनी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बुद्ध की कर्मभूमि उत्तर भारत को बनाया है, जहाँ बुद्ध ने स्वयं चारिकाएं कीं, देशनाएं दीं, वर्षापास किये - यथा श्रावस्ती, सारनाथ, संकिसा, कुशीनगर आदि जनपदों में। इस हेतु संस्थान की गतिविधियों के सक्रिय केन्द्र भी उत्तर

प्रदेश के जनपद लखनऊ, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, बस्ती, हरदोई, कानपुर, झाँसी, महोबा, इलाहाबाद, कुशीनगर, वाराणसी, गाजियाबाद, आगरा इत्यादि हैं। इन जनपदों में ध्यान-साधना शिविर, धम्म देशना एवं धम्म गोष्ठियों के कार्यक्रम नियमित आयोजित होते रहते हैं।

समाज को कुछ वापस भी करो

समन्वय सेवा संस्थान की मान्यता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अर्जित सम्पदा यथा धन, अन्न, वस्तु इत्यादि का कुछ अंश समाज को भी वापस अवश्य करना चाहिये अर्थात् दान पारमिता का अभ्यास करना चाहिये, ताकि समाज लगातार सुदृढ़ एवं सम्पन्न बनता रहे, धम्म प्रचारकों को आश्रय व संरक्षण मिले और वर्तमान व भावी पीढ़ी शीलवान, दानवान, संस्कारवान, प्रतिभावान, करुणावान बन सके।

अपनी विचारधारा को क्रियान्वित करते हुए समन्वय सेवा संस्थान अल्पसुविधासम्पन्न क्षेत्रों व स्कूलों में सामान्य ज्ञान-चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित करता है। नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों के विकास हेतु धम्म-देशनाओं, ध्यान-साधना शिविरों का आयोजन करता है। वंचित वर्गों के उत्थान की कार्ययोजना पर विचार-विमर्श एवं तदनुसार अनुपालन हेतु विचार गोष्ठियाँ, व्याख्यान आदि के आयोजन करता भी है और ऐसे आयोजनों में सहयोग भी करता है।

भावी योजनाएं

- ★ उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के एक बौद्ध प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना। लखनऊ चार प्रमुख बौद्ध स्थलियों सारनाथ, श्रावस्ती, संकिसा व कुशीनगर के लगभग मध्य में स्थित है।
- ★ लखनऊ में एक ध्यान-साधना शिविर केन्द्र की स्थापना जो आधुनिक सुविधाओं, यथा ध्यान प्रासाद, आवास कक्ष, स्नानघर इत्यादि, से सम्पन्न हो तथा नैसर्गिक भी हो।

- ★ निर्धन बच्चों हेतु आधुनिक सुविधाओं से युक्त एक स्कूल का निर्माण, जहाँ बौद्ध मूल्यों पर आधारित आधुनिक शिक्षा प्रदान की जायेगी।
- ★ एक बौद्ध टी.वी. चैनल शुरू करना।
- ★ हिन्दी-अंग्रेजी में एक द्विभाषी बौद्ध पत्रिका का प्रकाशन।
- ★ इक्कीसवीं सदी की बौद्ध संगीति भारत में आयोजित करना।
- ★ बुद्ध के जीवन पर एक धारावाहिक की परिकल्पना को साकार करना।

नियमित कार्यक्रम

मासिक धम्म समागम, ध्यान-साधना शिविर, धम्म गोष्ठियाँ, बौद्ध तिथियों पर बुद्ध स्थलियों पर दीपदान-बुद्ध पूजा, सामान्य ज्ञान-चित्रकला प्रतियोगिताएं इत्यादि वर्ष भर चलने वाले संस्थान के नियमित कार्यक्रम हैं। इसके अलावा संस्थान के प्रशिक्षित धम्म सेवक जन्मदिन, नामकरण, विवाह, पुण्यानुमोदन, परित्राण पाठ इत्यादि भी सम्पन्न कराते हैं।

धम्मदान महादान

तथागत बुद्ध ने पांच प्रकार के दान बताये हैं: वस्तु दान, समय दान, अभय दान, जीवन दान, धम्म दान।

आप भी संस्थान के धम्म रक्षा के अभियान में दान, योगदान दे कर पुण्यार्जन कर सकते हैं, क्योंकि बुद्ध ने कहा है—जो धम्म की रक्षा करता है, धम्म उसकी रक्षा करता है। जो धम्म देखता है, वह मुझे देखता है। जो धम्म की सेवा करता है, वह मेरी सेवा करता है।

सम्पर्क :

संस्थान के कार्यक्रमों व योजनाओं की विस्तृत जानकारी के लिये आप अंकित नाम, मोबाईल, ईमेल अथवा पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

आप अपना वस्तु दान संस्थान के कार्यालय में प्राप्त करा सकते हैं। अर्थात् दान डिमाण्ड ड्राफ्ट/मनीआर्डर/चेक द्वारा, जो कि “समन्वय सेवा संस्थान, लखनऊ” के नाम देय हों, भेज सकते हैं अथवा सीधे संस्थान के बैंक खाता सं. 850922000029198 (सिण्डीकेट बैंक, लखनऊ) में जमा कर रसीद भेज कर सूचना दे सकते हैं।

धम्म की अभिवृद्धि में आप संस्थान के साथ किस रूप में सहयोगी हो सकते हैं, कृपया लिख कर अथवा सम्पर्क कर सूचित करें।

:: सम्पर्क सूत्र ::

राजेश चन्द्रा

मोबाईल : +91-9415565633

ईमेल : chandrajesh2000@gmail.com

samanvayasangha@rediffmail.com



Samanvaya Seva Sansthan

समन्वय सेवा संस्थान

अवलोकितेश्वर चन्धन विला, 76-ए, मोनार्क सिटी फेज-1,
पारा रिंग रोड, पोस्ट राजाजीपुरम, लखनऊ-226017 (उ.प्र.), भारत
वेबसाईट : www.samanvayseva.org

सुरेन्द्र कुमार मेहता

बुद्ध, धम्म एवं संघ के प्रति गहन अनुराग रखने वाले श्री सुरेन्द्र कुमार मेहता ने अपने बुद्धानुराग के कारण तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग (ओ.एन.जी.सी.) से 1992 में चीफ इंजीनियर के महत पद से स्वैच्छिक अवकाश ले लिया था। अवकाश प्राप्ति के उपरान्त उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन त्रिरत्नों को समर्पित कर दिया था। उन्हें पूरी धम्मपद कंठस्थ थी। ध्यान-साधना शिविर, विपस्सना, धम्म ग्रंथों, विशेषतः धम्मपद, का नियमित अनुशीलन उनकी जीवनचर्या का अंग था।

वर्ष 1939 में मूलतः तलागंग (वर्तमान पाकिस्तान) में जन्में श्री मेहता वर्ष 1947 में भारत स्वतंत्रता के उपरान्त भारत में देहरादूनवासी हो गये। शैक्षिक पृष्ठभूमि से विज्ञान स्नातक (बी.एस.सी.) श्री मेहता ने कुछ वर्ष अध्यापन कार्य भी किया। उन्हें संगीत से विशेष लगाव था। हारमोनियम और गिटार वे स्वयं शौकिया बजाते भी थे। वर्ष 1961 में ओ.जी.सी. में कार्यरत होने के उपरान्त उन्होंने देश-विदेश के दौरे भी किये तथा लन्दन, ब्रिटेन से वर्ष 1985 में सेफ्टी डिप्लोमा भी अर्जित किया। उत्कृष्ट सेवाओं के लिये उन्हें कई विभागीय पुरस्कार भी मिले।

बुद्ध धम्म पर उन्होंने कई लघु पुस्तिकाएँ भी लिखीं जिन्हें वे अपने ही स्तर से छपवा कर निःशुल्क वितरण किया करते थे। उनके धम्म कार्य में उनकी जीवन संगीनी श्रीमती कंचन, दोनों पुत्रों श्री भरत, श्री विशाल एवं पुत्री सुश्री प्रीति का उन्हें अनवरत सहयोग मिलता रहा। जीवन के अंतिम दिनों तक वे विपस्सना साधना करते रहे। 25 जनवरी, 10 को वे अपने पीछे एक धम्मनुरागी परिवार एवं मित्रजन छोड़ कर 71 वर्ष की आयु में निर्वाण को उपलब्ध हुए।





राजेश चन्द्रा

शैक्षिक व व्यवसायिक पृष्ठभूमि से मूलतः कम्प्यूटर इंजीनियर (बी.ई., कम्प्यूटर इंजीनियरिंग), मास कम्युनिकेशन एण्ड जर्नलिज्म में डिप्लोमा धारक तथा उत्तर प्रदेश में प्रथम श्रेणी अधिकारी के सरकारी पद पर कार्यरत राजेश चन्द्रा हिन्दी साहित्य के युवा हस्ताक्षर हैं। उनकी अब तक प्रकाशित कृतियाँ हैं: 'पूजा का दीया', 'साक्षी चेतना: अमृता प्रीतम', 'कल्पवृक्ष की छांव में' तथा 'बुद्ध का चक्रवर्ती साम्राज्य'। ध्यान की अनुभूतियों पर आधारित उनका अंग्रेजी में प्रकाशन के लिये तैयार काव्यसंग्रह है - *Since the day...*। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद उनके लेखन का मुख्य विषय है। वह हिन्दी की प्रख्यात पत्र पत्रिकाओं यथा अमर उजाला, राष्ट्रीय सहारा, जनसत्ता एक्सप्रेस, हिन्दुस्तान (दैनिक), हंस, आजकल, विज्ञान प्रगति में नियमित स्थान पाते हैं तथा एक बौद्ध त्रैमासिक के सम्पादक मण्डल में हैं। 'फ्रेन्ड्स ऑफ वेस्टर्न बुद्धिस्ट आर्डर, इंग्लैण्ड' के इतिहास पर ब्रिटिश धम्मचारी सूर्यप्रभा द्वारा निर्मित व निर्देशित चार खण्डों की अंग्रेजी फिल्म तथा अमेरिका के अम्बेडकर अध्ययन के विशेषज्ञ मोनिका फूटे द्वारा निर्मित डॉक्यूमेंट्री 'एराईजिंग लाईट' का हिन्दी अनुवाद भी किया है, साथ ही ब्रिटिश धम्मचारी सुभूति के धम्मक्रान्ति शिविर, 2005, बोरधरन, वर्धा में दिये गये सात दिवसीय प्रवचनों का हिन्दी अनुवाद भी किया है, जो 'बौद्ध जीवन कैसे जियें' शीर्षक से प्रकाशित है तथा 'स्वर्ग कोई भी जा सकता है, बस अच्छे बनो!' हिन्दी में अनुवादित एक अन्य पुस्तिका है। राजेश चन्द्रा की हर पुस्तक आन्तरिक अन्वेषण व शोध पर आधारित होती है। इसी अन्वेषण पर आधारित जैन दर्शन एवं कहानियों पर उनकी एक और किताब शीघ्र प्रकाश्य है। वे एक सक्रिय समाज-सेवी, धम्म व ध्यान प्रशिक्षक हैं।



अभिव्यक्ति

यह पुस्तिका आपको कैसी लगी? आप अपनी अभिव्यक्ति तथा परामर्श नीचे दिये गये पते पर भेज सकते हैं। पुस्तिका के भावी संस्करणों में आपकी अभिव्यक्ति को सम्मिलित भी किया जा सकता है।

1. नाम : आयु : पुरुष/स्त्री
2. पता :
3. जनपद :
4. प्रान्त :
5. फोन :
6. मोबाईल :
7. ई-मेल :

आप इस पुस्तिका के निःशुल्क वितरण में सहायक हो सकते हैं। आप अपने प्रियजनों की स्मृति में अथवा अन्य अवसरों के लिये पुस्तिकाएं छपवा कर निःशुल्क वितरित करा कर पुण्य लाभ कर सकते हैं।

पुस्तिका एवं स्टिकर निःशुल्क प्राप्ति के लिये सम्पर्क करें:

समन्वय सेवा संस्थान (रजि.)

अवलोकितेश्वर चन्धन विला, 76-ए, मोनार्क सिटी फेज-1,
पारा रिंग रोड, पोस्ट राजाजीपुरम, लखनऊ-226017 (उ.प्र.)

सम्पर्क : 9415565633, 9415192861, 9415610836

ईमेल : chandrajesh2000@gmail.com

samanvayasangha@rediffmail.com

वेबसाईट : www.samanvayseva.org